मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू ('ठाणंग'सूत्र, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विघातक छे'

अनुसंधान

प्राकृत भाषा अने जैन साहित्य विषयक
संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

२

संकलनकार : मुनि शीलचन्द्रविजय
हरिवल्लभ भायाणी

श्री हेमचंद्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अमदावाद
१९९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मोहरिते सच्चवयणस्स पलिमंथू (ठाणंग–सूत्र, ५२९)
'मुखरता सत्यवचननी विधातक छे'

अनुसंधान

प्राकृत भाषा अने जैन साहित्य विषयक
संपादन, संशोधन, माहिती वगेरेनी पत्रिका

२

संपादक : **मुनि शीलचंद्रविजयजी**
हरिवल्लभ भायाणी

श्री हेमचंद्राचार्य

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य नवम जन्मशताब्दी
स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि
अमदावाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९९४

अनुसंधान : २

संपर्क : **हरिवल्लभ भायाणी**
२५/२, विमानगर, सेटेलाइट रोड
अमदावाद – ३८० ०१५

प्रकाशक : **कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति संस्कार शिक्षणनिधि, अमदावाद १९९४**

किंमत : रू. २०–००

प्राप्तिस्थान : **सरस्वती पुस्तक भंडार**
११२, हाथीखाना, रतनपोळ, अमदावाद–३८० ००१

मुद्रक : **कंचनबेन ह. पटेल**
तेजस प्रिन्टर्स
९६६, नारणपुरा जूना गाम, अमदावाद–१३
फोन : ४८४३९३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्राक्कथन

'अनुसंधान–१ 'मां आ प्रकाशननुं शुं प्रयोजन छे ते निवेदित कर्युं हतुं. जैन परंपरा अने प्राकृत भाषा–साहित्यना विषयमां चाली रहेला संशोधनकार्य विशे, ते पछीना टूंका गाळामां कशी वधु जाणकारी आपवानी न होईने, प्रस्तुत 'अनुसंधान–२ ' मां केटलाक संशोधन–लेखो अने संपादित करेल अप्रकाशित जूनी गुजराती कृतिओ आपी छे. आ रीते अढळक अप्रकाशित साहित्यमांथी थोडाकनो पण उद्धार थतो रहे अने प्रकाशितनां अनेक पासांनी तरतपास थती रहे तो ज टीपे टीपे सरोवर भरातुं जाय.

शीलचंद्रविजय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

वाचक यशोविजयरचित 'समुद्र-वहाण-संवाद'	मुनि शीलचंद्रविजय	१
श्रद्धा, प्रसाद अने अध्यात्मप्रसाद	नगीन जी. शाह	८
केटलाक मध्यकालीन गुजराती शब्दप्रयोगो	जयंत कोठारी	९
जैन प्राकृत-संस्कृत प्रयोगोनी पगदंडीए	हरिवल्लभ भायाणी	२५
'सिद्धहेम-शब्दानुशासन' प्राकृत अध्यायनां उदाहरणोना मूळ स्रोत	हरिवल्लभ भायाणी	२५
'व्द्याश्रय' काव्यना एक पद्यानी वृत्ति परत्वे	मुनि शीलचंद्रविजय	५०
'गांगेयभंग प्रकरण-सस्तबक'ना कर्ता विशे	मुनि शीलचंद्रविजय	५२
'यतिदिनचर्या' : वृत्तिनी गवेषणा	मुनि प्रद्युम्नविजय	५८
वर्धमान सूरि-रचित 'धर्मरत्नकरणडक' विशे	मुनि मुनिचंद्रविजय	६३
'धर्मसूरि-बारमासा'	संपा. रमणीक शाह	६९
'सुभद्रा-सती-चतुष्पदिका'	संपा. कनुभाई शेठ	७८
संशोधन-वर्तमान		८३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"वाचक यशोविजयरचित समुद्र-वहाण संवाद"
[कर्तानी स्वहस्तलिखित प्रति(खरडा)ना आधारे पाठ-संशोधन]

– मुनि शीलचन्द्रविजय

मध्यकालीन साहित्य, विशेषतः जैन साहित्य 'संवाद' प्रकारनी अनेक रचनाओथी समृद्ध छे. १७-१८ मा शतकना समर्थ जैन ग्रन्थकार उपाध्याय श्रीयशोविजयजीए पण, वि.सं. १७१७ मां, दरियाकिनारे आवेला घोघा बंदरे पोताना चातुर्मास दरमियान "समुद-वहाण संवाद" नामे एक स-रस कृति रची छे. आ कृति ई.स. १९३६मां प्रकाशित "गुर्जर साहित्य संग्रह -प्रथम विभाग "मां श्री मोहनलाल दलीचंद देसाईए संपादित करीने मुदित करावी छे. तेमां प्रान्ते जोवा मळती नोंध प्रमाणे ते संपादन 'खेडा भंडार' नी प्रतिना आधारे थयानुं जणाय छे.

ताजेतरमां ज आ कृतिनी कर्ताए स्वहस्ते आद्य खरडा (Draft) रूपे लखेली प्रति जोवामां आवतां तेना तथा मुदितना पाठो मेळववानुं मन थयुं. भाषानी रीते तो घणाबधा भेदो छे ज, जे माटे अवसरे आ कृतिने तेना कर्तानी ज भाषामां प्रकाशित करवा जोग गणाय; परंतु पाठोनी दृष्टिए पण केटलाक तफावतो नजरमां आवतां ते तफावतो अहीं रजू कर्या छे.

	पंक्ति	मुदित	प्रति
(१) दूहा :	४-१	एहने	एहोनइं
	४-२	मांहो मांहे	माहोमाहिं
	४-३	थइ	हुइ

ढाल १ नुं **मुखडुं – मु. फागनी; – थाहरां मोहलां उपर मेह झरोखें वीजळी रे के वीजळी** ए देशी. ।। **प्रतिमां-त्रिभुवन तारण तीरथ पास चिंतामणी रे** २ ए देशी

ढाल १ :	३-३	**तूरहि वाजे**	**तूर दिवाजइ**
	४-४	**सुर बहू रे**	**सुरवहू रे**
	५-२	**साह्य**	**साइं**
	६-२	**तिणें**	**तणइं**
	७-२	**गर्वे चढावे पर्वत**	**गर्व चडावइ पर्वति**
	७-३	**पर-कह्यो**	**पर-कहिया**
	७-४	**ग्रह्यो**	**ग्रह्या**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) दूहा :	३–४	जाणे	जाणो
ढाल २ :		देशीनुं सूचक पद प्रतिमां छे नहि.	
	१–३	मोटाई रे	मोटाई छइ रे
	१–४	समृद्धि	समृद्ध
	२–२	दीप जिहां	दीपइ जिहां
	३–२	जातिफल	जातीफल
	४–२	मचकुंद	मुचुकुंद
	४–४	कंद	कुंद
	५–२	साची	शुचि
	५–३	०कारणे	०कारण
	५–४	लाभंत	तेजंत
	६–१	बले	बलिइं
	९–१	मुजथी	तुझथी
	९–४	मति	मत
(३) ढाल ३ :	२–३	वाध्याजी	वाधीरे
	२–४	साध्याजी	साधीरे
	३–१	मोटाई	मोटाईइं
	१–४	लोग लोगाईजी	लोक नइं लोई रे =(मार्जिनमां स्वहस्ते 'लुगाईं' लख्युं छे.
	८–१	वहरोजी	चहरोजी
	९–२	गोख्युंजी	घोष्युंजी
	१०–३	बहियो०	वहयो०
(४) ढाल ४ :	७–१	कुल श्यो	कुलनो श्यो

(५) ढाल ६: आंकणी पछी "जे जाचिकने धन छेतरे लो" – ए पंक्ति प्रतिमां नथी.

२–१	छे नहि	छतइ
२–३	भारणी	भारिणी
४–१	मच्छादि	माछादिक

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	४–२	ज्युं	जिम
	५–३	कृषि	कूषि
	९–२	गोप्यो	गोख्यो
(६) दूहा :	१–३	मले	मलइं
ढाल ७ :	२–१	उत्पति तिम	ऊपति मनि
	२–५	सहुं हुं छुं	सहूं छुं हूं
	३–३	जलहरे	जल हरइं
	३–६	पुण्य भव०	पुण्य ए भव०
	४–२	देखता	देखतो
	४–५	वीचि खंपे	वीचि पंखइं
	५–३	ठामनो	ठामना
	६–४	दाधे	दाधी
	७–५	धननूं	घननुं
	८–१	वृष्टि रे	वृष्टिं रे
	८–२	दृष्टि रे	दृष्टिं रे
	८–३	दृष्टि	दृष्टिं
(७) दूहा :	५–४	माननी	मानिनि
	७–१	साथ तूं	साचलुं
	७–४	वृंद	बिंदु
ढाल ८ :	२–१	उव संगी रे	उचसंगी रे
	७–१	रहे	रहतइ
(८) दूहा :	२–१	सणाजा जातिनो	सणीजा नातिनो
	३–२	जे पणि	पणि जे
	५–४	दिवसे	दिवस
(९) दूहा :	४–२	निश्रूक	निशूक
ढाल १० :	२–३	सरमोहता	सरडोहता
	४–४	ऊधांण वलियां	ऊधाण बलियां
	६–३	मेळवी	भेळवी
	७–१	निशितशिर धार	निशितशर धुर

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	११–१	उसरी	ओसरी
	११–३	खालतो बाळतो	बालतो गालतो
	१३–१	फेरवे	फोरवइ
(१०) दूहा :	१–४	भोग	योग
	२–२	कृष	कूखि
	३–३	भचके	भकइ
ढाल ११ :	५–२	नीति ऋजुमार्ग तें	नीतिमार्ग ते तिं
	६–३	सबल	सयल
	७–१	झकोले	छकोलइ
	८–१	पाडीन	पाठीन
	९–३	बोले	बोली
(११) ढाल १२:	४–३	लइ	लहइ
	३–३	रूसो परि	रूसो पर
	५–१	शोकनी परि नीत	शाकिनि परि निति
	८–४	ऊगरस्यै तो पंक	ऊगरस्यइ पंक
	१०–१	वृथा	यथा
	१२–१	पिठि	पिट्ठि
(१२) दूहा :	२–२	विंध्य	वंध्य
	२–३	विंध्याचल	वंध्य चल
	३–३	वनने कुंज	वननिकुंज
ढाल १३ :		भोलिडा रे हंसा रे	भोलूडा रे हंसा
	४–३	देखो	देखो
	१०–१	ते उत्पत्ति रे	ते उत्पातिं रे
(१३) दूहा :	१–४	तालक्ख	नालक्ख
	२–४	मूकने	मुंझइ
	३–४	करे सागरस्युं	करि समुद्रस्युं
ढाल १४ :	९–३	फिरिअ पाओ	फिरि नींपाउं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(१४) दूहा :	४–३	सवलो	सघलो
ढाल १६ :	१–३	वाहणथी	वाहणनी
	३–३	फिरत अंबर	अंबर फिरत
	४–३	फिरती	कीरति
	११–१	पवनहींथे	पवनहीं थई
	१२–३	प्रतिमां – "मानुं व्यवहारीतणां हो" एवो पाठ लखेल छे, पछी पोते ज मार्जिनमां "मानुं जिहाजना लोकना हो" एम उमेर्युं छे.	
		चोपाइ	चोपइ
	२–१	तिहां सोहे	सोहइ तिहां
	३–२	मावुं	मानुं
	१०–१	केसर छवि अनिं	केसर छवि अगनिं
	१४–३	वसाणां	वसाणे
(१५) ढाल १७ :	४–४	केसर वचि	केसर छवि
	५–४	हरख न माइ	न हरख माइ
	९–२	कर्या	धरिया
	१०–२	मेहलि	मेल्ही
	११–१	वाज्यां वाजां	वाजां वागां
	१३–३	हुआं वधामणां	हुआं हो वधामणां
	१५–२	आंगी	अंगी
	१५–४	वळिक कलस	वली कनक कलस
	१९–१	विधु मुनि संवत	मुनि विधु संवत
	१९–३	पहेलां "कवि जसविजयइं ए रच्यो" एम लखेल छे, पछी स्वयं मार्जिनमां "घोघा बंदिरि ए रच्यो" उमेर्युं छे.	

नोंध :– मुदित प्रतिमां दरेक ढालना मथाले अलग अलग "देशी" नी पंक्ति छे. ज्यारे कर्तानी प्रतिमां ढाल १, ६ (मात्र "ढाल लो नी" एटलुं ज), ७, ९, १३, १४ (मात्र "**समरिओ साद दिइं ए देव ए देसी**" एटलुं ज), १५, १६, १७ (मात्र "**गछपति राजिओ हो लाल**" एटलुं ज), ए नव ढालोमां ज ते जोवा मळे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरवणीरूप नोंध

"समुद्र वहाण संवाद" नो रसास्वाद करावतां तथा तेनी विविध रचनाखूबीने चर्चतां लेखो पूर्वे लखाया ज छे. कर्तानी अनुवाद – कुशलता प्रत्ये पण अभ्यासीओनुं ध्यान गयेलुं छे, छतां प्रस्तुत नोंधमां उपाध्याय यशोविजयजीनी अनुवादनिपुणतानां केटलांक वधु उदाहरणो समुद्र वहाण संवादमां जडी आवे छे, तेने रजू करवानी लालच रोकी शकाती नथी. संस्कृत–प्राकृत सुभाषितो तथा लोकोक्तिओ – कहेवतोनो उचित रीते अने लाघवपूर्ण शैलीमां विनियोग करवानी उपाध्यायजीनी क्षमता साचे ज अनुपम छे.

विद्वानेव विजानाति विद्वज्जनपरिश्रमम् ।
नहि वन्ध्या विजानाति, गुर्वीं प्रसववेदनाम् ।।

आ सुभाषितनो विनियोग तेमणे आ रीते कर्यो छे :

"वांझि न जाणइ रे वेदना, जे हुइ प्रसवतां पुत्र;
मूढ न जाणइ परिश्रम, जे हुइ भणतां सूत्र (ढाल २/१०)

तो ९मी ढालना चोथा दूहाना उत्तरार्धमां – अने वस्तुतः ते दूहामां ज–

"जिम विद्या पुस्तक रही, जिम वलि धन पर–हत्थ"
– अहीं **"पुस्तकस्था तु या विद्या, परहस्तगतं धनम्"**
(कार्यकाले समुत्पन्ने, न सा विद्या न तद्धनम् ।।)

आ सुभाषितनो भाव तेमणे सरस रीते गूंथी दीधो छे.
जैन दार्शनिक ग्रंथोमां एक प्राकृत सूक्ति आवे छे :–

रूसऊ वा परो वा मा, विसं वा परियत्तऊ ।
भासियव्वा हिया भासा, सपक्खगुणकारिया ।।

आनो भाव उपाडीने उपाध्यायजी कहे छे :–

"निज हित जाणी बोलिइं नवि शास्त्रविरुध;
रूसो पर वलि विष भखो, पणि कहिइं शुद्ध ।। (ढाल १२/३)

"हरख नहीं वइभव लह्यइ, संकटि दुख न लगार;
रणसंग्रामिं धीर जे, ते विरला संसारि" (ढाल १६ ना दूहा–३)

आमां – **सम्पदि यस्य न हर्षो**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विपदि विषादो रणे च धीरत्वम् ।
तं भुवनत्रयतिलकं
जनयति जननी सुतं विरलम् ।।

आ सुभाषितना तात्पर्यने केटली खूबीथी वणी लेवामां आव्युं छे ! "आवश्यक – निर्युक्ति" मां एक गाथा आवे छे, तेमां "तीर्थ"नी व्याख्या बांधवामां आवी छे :–

"दाहोवसमं तण्हाइच्छेअणं मलपवाहणं चेव ।
तिहि अत्थेहि निउत्तं तम्हा तं दव्वओ तित्थं ।।

हवे आ ज वात जरा जुदी रीते, "महाभारत" मां पण करवामां आवी छे. –(दुर्भाग्ये, महाभारतना सन्दर्भस्थाननुं अत्यारे विस्मरण थयुं छे. पण ते पद्य आ प्रमाणे छे :) –

पङ्क–दाह–पिपासाना – मपहारं करोति यत् ।
तद्धर्मसाधनं तथ्यं तीर्थमित्युच्यते बुधैः ।।

अने आ वातने उपाध्यायजीए आ रीते ढाळी छे :

"टालइ दाह, तृषा हरइ, मल गालइ जे सोइ;
त्रिहुं अरथे तीरथ कहिउं, (ते तुझमां नहिं कोई). (ढाल ७ ना दूहा –६)

अने हवे थोडीक कहेवतो – लोकोक्तिओ पण जोईए :

"खंड भलो चंदन तणो रे लो, स्यो लाकडनो भार रे
सज्जन संग घडी भली रे लो, स्यो मूरख अवतार रे" (ढाल ६/८)

आ वांचता ज – "चंदन की चटकी भली, झाझां काष्ठनां भारा;
चतुरकी घडी भली, मूरखनां जन्मारा"–

ए लोकोक्ति सहेजे ज याद आवी जाय.
अने एमनी आ उक्तिओ –

" मा आगलि मूंसालनूं, ए सवि वर्णन साच" (ढाल ३, दूहो १),
"गरजे कहिइं खर पिता" (ढाल ७, दूहो ८)
"छोरू कुछोरू होइ तो पणि, तात अवगुण नवि गणइ (ढाल ७/२)
"इम चित्त म धरे शकट हेठिं, श्वान जिम मनमां धरइ" (७/९)

वांचतां ते ते लोकभाषा–प्रसिद्ध रूढ प्रयोगो अनायासे ध्यानमां आवे छे.
यशोविजयजीनी विलक्षणता ए छे के ज्यां अन्य कविओने पोतानी वात, विधान के

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रसंगने दृढ/पुष्ट बनाववा माटे "उक्तं च" के "यदुक्तं" – कहीने नीतिशास्त्रादिना साक्षात् श्लोको टांकवा – उध्दरवा पडे छे, त्यां यशोविजयजी, तेवुं न करतां, उपर जोयुं तेम, जे ते नीतिवचन वगेरेने पोतानी शैलीथी भाषामां ज ढाळी दई पोताना प्रवाहने अस्खलित चालु राखे छे.

श्रद्धा, प्रसाद अने अध्यात्मप्रसाद

नगीन जी. शाह

बौद्ध धर्मदर्शन अने योगदर्शन बंने चित्तशास्त्र छे. तेमनी महत्त्वनी विभावनाओ अने पारिभाषिक शब्दोनुं साम्य नोंधपात्र छे. अभिधर्मकोशभाष्यमां श्रद्धानी व्याख्या आ प्रमाणे छे – **श्रद्धा चेतसः प्रसादः** / (२.२५). पांतजल सूत्र (१.२०) उपरना पोताना भाष्यमां व्यास श्रद्धानुं लक्षण नीचे मुजब आपे छे – **श्रद्धा चेतस : संप्रसादः** । आ बंने व्याख्याओ शब्दशः एक ज छे. 'प्रसाद' शब्दनो अर्थ अनास्रवत्व छे, निर्मलता छे, शुद्धि छे. **प्रसादोऽनास्रवत्वम्।** स्फुटार्था टीका ८.७५. **यद्धि निर्मलं तत् प्रसन्नमित्युच्यते** । अभिधर्मदीपवृत्ति, पृ. ३६७. तत्त्वपक्षपात चित्तनो स्वभाव छे. **तत्त्वपक्षपातो हि धियां (चित्तस्य) स्वभावः** । योगवार्तिक १.८. राग–द्वेष–मोह ए चित्तनी अशुद्धिओ छे. ते चित्तना आ स्वभावने आवरे छे. ए अशुद्धिओनुं दूरीकरण चित्तने शुद्ध करे छे. चित्तनी आवी शुद्धि चित्तनो संप्रसाद छे, ते ज श्रद्धा छे.

बौद्ध धर्मदर्शन अने योगदर्शन बंने ए निर्वितर्क – निर्विचार ध्यान या समापत्तिनी भूमिकाए चित्तमां जे वैशारद्या या शुद्धि प्रगट थाय छे तेने माटे 'अध्यात्मप्रसाद' पदनो प्रयोग कर्यो छे. बंने स्वीकारे छे के आ ध्यानमां वितर्क अने विचाररूप क्षोभ चित्तमांथी दूर थतां चित्तमां विशेष शुद्धि, वैशद्या, वैशारद्या प्रगटे छे. ते ज अध्यात्मप्रसाद छे. **वितर्कविचारक्षोभविरहात् प्रशान्तवाहिता सन्ततेरध्यात्मप्रसादः** । अभिधर्मकोशभाष्य ८.७. **'निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः** । योगसूत्र १.४७ प्रशान्तवाहिता पद पण बंने चित्तशास्त्रमां पारिभाषिक अर्थमां प्रयुक्त छे अने बंने स्थाने अेक ज अर्थ छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केटलाक मध्यकालीन गुजराती शब्दप्रयोगो

जयंत कोठारी

१. अउले खाले वहै

जिनराजसूरिकृत 'शालिभद धन्ना चोपाई' (र.इ. १६२२)मां शालिभदनी रिद्धिना वर्णनमां नीचेनी पंक्ति आवे छे :

जीहो अउले खाले वहै, जीहो कस्तूरी घनसार. (४,११)

संपादक अगरचंद नाहटा ('जिनराजसूरिकृतिकुसुमांजलि,' सं. २०१७) 'अउले'ना 'तरल, अवलेह' एवा अर्थो आपे छे, जे अहीं कोई रीते बेसता नथी. 'अउले खाले वहै' ए रूढिप्रयोग होवानुं समजाय छे. अवळी खाळे वहेवुं एटले ऊभरावुं, छलकावुं. शालिभदने घरे कस्तूरी अने कपूर अंगलेपमां एटलां वपराय छे ने धोवाईने खाळमां एटलां वहे छे के खाळ एनाथी ऊभराय छे. ए नोंधपात्र छे के आवो रूढिप्रयोग राजस्थानी शब्दकोश के रूढिप्रयोगकोशमां नोंधायेलो नथी.

२. अउल्हाइ

जिनराजसूरिना 'गोडी पार्श्वनाथ स्तवन'मां नीचेनी पंक्तिओ आवे छे :

देव घणाइ देवले, गउडेचा राय,
दीठा ते न सुहाइ रे, गउडेचा राय,
इक दीठा मन हुलसइ, गउडेचा राय,
इक दीठा अउल्हाइ, रे गउडेचा राय,

'ओलावुं' शब्द 'बुझावुं, ठरवुं' एवा अर्थमां जाणीतो छे. पण ए अर्थ अहीं नथी ए स्पष्ट छे. 'हुलसइ' (उल्लास पामे) ना विरोधी अर्थनो ज ए शब्द होई शके. नाहटा 'संकुचित थवुं' एवो अर्थ ले छे. पण 'उल्लास पामे'ना बराबर विरोधी अर्थमां आ शब्द नोंधायेलो मळे छे. 'देशीशब्दसंग्रह' 'ओहुल्ल' एटले 'खिन्न' अने 'ओहुल्लिय' एटले 'म्लान' अर्थ आपे छे. तो अहीं पण "एक देवने जोतां मन उल्लास पामे, एक देवने जोतां मन खिन्न थाय" एम अर्थ बराबर बेसे'.

३. अउगनाइ

साधुसुन्दरगणि (ई. १७ मी सदी पूर्वार्ध) कृत 'उक्तिरत्नाकर' (संपा. मुनि जिन विजय)मां 'अउगनाइ' शब्द नोंधायेलो छे ते ध्यान खेंचे छे. एनो संस्कृत पर्याय एमां 'अपकर्णयति' अपायेलो छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ **अउगनाइ** ते 'अवगणे' ? 'उक्तिरत्नाकर' मां संस्कृत पर्यायो घडी काढेला मळे छे अने संस्कृत कोशो 'अपकर्णयति' शब्द नोंधता नथी. पण 'उक्तिरत्नाकर' ने 'अवगणे' ज अभिप्रेत होय तो संस्कृत '**अवगणयति**' ए न आपी शकं एम मानवुं मुश्केल छे. बीजी बाजुथी, '**अवगणे**' नुं जूनुं रूप '**अउगणइ**' होय अने ए ज '**अवगणयति**' परथी आवे, '**अउगनाइ**' नहीं. एटले '**अउगनाइ**' ए '**अउगणइ**' थी जुदो शब्द होवानो संभव रहे छे. एनो '**अपकर्णयति**' ए पर्याय आपवामां आव्यो छे तो तेनो अर्थ 'सांभळे नहीं, ध्यानमां न ले' एवो अभिप्रेत होवानुं संभवित छे.[२]

४. अउगउ, उगउ

'उक्तिरत्नाकर' मां 'अउगउ-मुगउ' अने 'उगउमुगउ' ए शब्दो नोंधायेला छे अने एनो पर्याय 'अवाङ्मूकः' आपवामां आव्यो छे. देखीती रीते ज 'ऊगोमूगो' ए द्विरुक्त शब्द छे. एनो अर्थ तो 'मूगो' ज. 'ऊगो' ने 'अवाङ्' परथी व्युत्पन्न करी शकाय ?

अउगउ के **उगउ** शब्द एकलो पण 'मूगो' ना अर्थमां वपरायो छे. जेमके,

अउगी अच्छि, सखि झखि म-न आल, (विनयचंदसूरिकृत 'नेमिनाथ -चतुष्पदिका', ई. १३ मी सदी उत्तरार्ध

गुरे भणिउं - 'म वच्छ ! उगउ रहि को कांइ नहीं कहइ' (तरुणप्रभसूरिकृत 'षडावश्यक-बालावबोध', र. ई. १३५५)

बीजा उदाहरण परत्वे संपादक प्रबोध पंडिते 'Agitated, alarmed' एवो अर्थ आप्यो छे. पण त्यां बीजा साधुए दडवडावतां चेलो लागणीना आवेशमां आवी धुसकां भरे छे त्यारे गुरु एने 'वत्स, रड नहीं. मूगो रहे' एम कहे छे तेवो अर्थ लेवानो छे.[३]

५. अखाडो

'**अखाडो**' शब्द कुस्ती, व्यायाम के स्पर्धा माटेनी जग्याना अर्थमां जाणीतो छे. सं. '**अक्षपाटक**' परथी ए ऊतरी आव्यो छे. 'उक्तिरत्नाकर', '**अक्षपाटक**' एवो पर्याय आपी '**अखाडउ**' शब्द नोंधे छे. मध्यकालीन गुजरातीना बेत्रण प्रयोगो आ संदर्भमां नोंधपात्र छे.

पार्थु एकु दल कोडि विहाडइ,
इणि स्यउं कोइ मिलइ न अखाडइ २.५३
(शालिसूरिकृत विराटपर्व, ई. १४२२ पहेलां)

संपादको चिमनलाल त्रिवेदी अने कुंभाई शेठ '**अखाडइ**' नो अर्थ 'मल्लयुद्धमां' अने 'गुर्जर रासावली' ना संपादको (ठाकोर, देसाई, मोदी) 'a wrestling ground' अेम अर्थ आपे छे. आमां कुस्ती के कुस्तीनुं मेदान एवो अर्थ अभिप्रेत होय तो ते योग्य नथी. सर्व प्रकारनी शौर्यस्पर्धामां पार्थनी तोले कोई न आवे एम ज अर्थ होई शके. पार्थ कुस्तीबाज नथी, बाणावळी छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'गुर्जर-रासावली' मां अन्य त्रणेक स्थाने आ शब्द वपरायेलो छे :

तुम्हि मंडावउ नवउ अखाडउ, नवनव भंगि पुत्र रमाडउ. ४.१
राधावेधु करीउ दिखाडइ, तिसउ न कोई तीण अखाडइ. ४. ८
इम परीक्षा हुई अखाडइ, तींछे अरजुनु चडीउ पवाउइ ४.२०
(शालिभदसूरिकृत पंचपांडवचरित्ररास, र. ई. १३५४)

अहीं प्रसंग कौरव-पांडवोनी शस्त्रविद्यानी परीक्षानो छे. तेथी 'अखाडउ' एटले 'शौर्यस्पर्धा' एवो अर्थ बधे स्पष्ट छे. 'शौर्यस्पर्धानुं स्थान' एवो अर्थ पण लई शकाय.

वधारे रसप्रद छे ते तो 'अखाडउ' ना बीजा बे प्रयोगो. 'षडावश्यक -बालावबोध' मां चैत्यवर्णनना प्रसंगे द्वारे द्वारे अखाडामंडप साथे प्रेक्षामंडप होवानो उल्लेख आवे छे. संपादक प्रबोध पंडिते 'अखाडामंडप' नो अर्थ 'pavilion' आप्यो छे ते तो देखीती रीते ज भूलभरेलो छे. पण अहीं 'अखाडामंडप' एटले 'शौर्यस्पर्धानुं स्थान' एवो अर्थ होवा करतां 'रमतनुं स्थान, क्रीडाभूमि' एवो होवा वधारे संभव छे. चैत्यमां शौर्यस्पर्धा होई शके ? नरसिंह महेताना एक पदमांनो 'अखाडो, शब्दनो प्रयोग आ संदर्भमां उपयोगी नीवडे तेवो छे :

वृंदावनमां रच्यो अखाडो, नाचे गोपी गोवाल. ५४.१
(नरसैं महेतानां पद, के. का. शास्त्री)

'अखाडो' शब्द अहीं 'शौर्यस्पर्धा' ना अर्थमां नथी ते स्पष्ट छे.गोपी-गोपाल नृत्य करे छे, एटले 'क्रीडाभूमि' एवो अर्थ ज लेवानो रहे.'षडावश्यक - बालावबोध' मां पण 'नृत्यादि क्रीडाओनुं स्थान' एवो अर्थ बंध बेसे. आ 'अखाडो' शब्दनो जरा जुदो पडतो प्रयोग गणाय.[४]

६. अछिवउं, अछीउं

'अछइ', 'छइ' मध्यकालीन साहित्यमां व्यापकपणे मळतां क्रियारूपो छे, पण 'उक्तिरत्नाकर', 'अछिवउं' एवुं विध्यर्थकृदंतनुं अने 'अछीउं' ए कर्मणिनुं रूप नोंधे छे ए विरलपणे प्राप्त रूपो छे. 'अछिवउं' नो पर्याय **स्थातव्यम्** 'होवुं, रहेवुं' अपायो छे अने 'अछीउं' नो पर्याय **स्थीयमानम्** ('थवुं, रहेवावुं, रखावुं)' आपवामां आव्यो छे.

७. अछूतउ

'अछूत' शब्द 'अस्पृश्य, हलकी जातिनो माणस' ए अर्थमां खूब जाणीतो छे.'उक्तिरत्नाकर' मां 'अछूतउ' शब्द जुदा अर्थमां होय एम समजाय छे.एमां पर्याय 'अच्छुप्त' अपायेलो छे, जेनो अर्थ 'अस्पृष्ट' थाय. पण 'मइलउ', 'छोति', 'अछूतउ' एम शब्दक्रम छे ने 'उक्तिरत्नाकर' मां शब्द कया जूथमां मुकायो छे तेमांथी केटलीक वार एना अर्थनी चावी मळे छे. अहीं 'मइलउ' नो विरुद्धार्थी शब्द 'अछूतउ' समजीए एनो अर्थ 'स्पर्शदोषना अभाववाळो, निर्मल' एम करवो जोईए. 'छोति' नो अर्थ 'स्पर्शदोष' थाय ज छे.[५]

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. कटरि

'अनुसंधान' : १ मां हरिवल्लभ भायाणीए नोंधेला प्राकृतना आश्चर्यवाचक 'कटरि'नो जूनी गुजरातीमां पण एक प्रयोग सांपडे छे :

कटरि गंभीरिमा, कटरि वय – धीरिमा,
कटरि लावन्न – सोहग्ग जायं,
कटरि गुण–संचियं, कटरि इंदिय जयं,
कटरि संवेग – निव्वेय–रंगं. ३७–३८.
(मेरुनन्दनगणिकृत 'जिनोदयसूरि विवाहलउ, र. ई. १३७६ पछी)

'ऐतिहासिक जैन काव्य संग्रह' ना संपादक अगरचंद नाहटाए 'कटरि'नो अर्थ 'आश्चर्य और प्रशंसावोधक अव्यय' एम आपेलो ज छे. 'अहो गांभीर्यं' । ए प्रकारना आ उद्‌गारो होवानुं देखाय छे.[५]

पूरक नोंध

१. 'मों करमायुं' जेवामां 'करमावुं' जेम, 'ओलावुं' नो लाक्षणिक अर्थ 'निस्तेज' थवुं लईए तो अर्थ कदाच बेसे. ओहुल्ल – ने मूळ तरीके लेतां पण अर्थ घटे छे. ओहुल्ल– ना मूळमां अव+फुल्ल–'करमावुं' छे. अपभ्रंशसाहित्यमां ते वपरायो छे. जेम के स्वयंभूकृत 'पउमचरिउ'मां, पुष्पदंतकृत 'महापुराण'मां. त्यां 'मुख'नुं ते विशेषण छे. टीकाकारे 'म्लान', 'सुकायेलुं' अर्थ करेल छे. ओहल्ल् – एवो पाठ लिपिदोष जणाय छे. ओहुर– पण मळे छे. विशेष माटे जुओ रत्ना श्रीयन् 'Des'ya and Rare Words, पृ. ६१, ६२.

२. नामधातु अवकर्णय – 'ध्यानमां न लेवुं' बाणनी 'कादंबरी'मां वपरायानुं मोनिअर विलिअम्झे नोंध्युं छे.

३. में 'अनुशीलनो' (१९६५, पृ. ९३–९५)मां अउगउ, उगा विशे नोंध आपेली छे. तेमां प्राकृत, जूनी तथा मध्यकालीन गुजरातीना ११मीथी १७मी शताब्दीमां मळता प्रयोगो, तथा मराठी प्रयोगनी नोंध लीधी छे. 'अनुसंधान'ना प्रस्तुत अंकमां ज कनुभाइ शेठ संपादित 'सुभद्रासति– चतुष्पदिका' (१३मी सदी)मां पण आ शब्दनो प्रयोग मळे छे :

'अउगी आछु न बोलिसि माए' (कडी ३४).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. पुष्टिमार्गीय वैष्णव कवि हरिदासना मुख-परंपरामां पण मळता एक थोळमां 'क्रीडाभूमि' (रासक्रीडा माटेनी रंगभूमि) एवा अर्थमां 'अखाडो'नो प्रयोग मळे छे :

'एक रच्यो अखाडो रे, सज्ज थया पोते '

(संदर्भ कृष्ण-गोपीओनी रासलीलानो : जुओ 'हरि वेण वाय छे रे हो वंनमां', पृ. ७४, कडी २).

५. सं. 'छुप्त-', प्रा. छुत्त- = 'स्पृष्ट', पछीथी, 'दूषित स्पर्शवाळुं'. प्राकृतमां पण छुत्ति 'अशौच' एवा अर्थमां वपरायेलो छे, जेना परथी जू. गुज. 'छोति', हिं. 'छूत' थया छे. 'अछूत' शब्द 'अस्पृष्ट' (हिं. 'अछूता'), तेम ज 'अस्पृश्य' (हिं. अछूत) बंने अर्थमां रूढ छे. 'छूताछूत' मां धात्वर्थ जळवायो छे. प्रस्तुत नोंध क्रमांक ७मां पण 'अछूतउ' 'अस्पृश्य' ए अर्थमां होवानी शक्यता छे.

६. ए ज प्रमाणे 'वपुरि'नो प्रयोग पण प्राचीन गुजरातीमांथी टांकी शकाय. 'अनुसंधान'ना प्रस्तुत अंकमां रमणीक शाह संपादित 'धमसूरि-बारहनामउं'मां ३५मी कडीनुं पहेलुं चरण आ प्रमाणे छे. 'बापुरि सहइ कुसुंभडीय.' आथी में सूचवेली व्युत्पत्ति पण समर्थित थाय छे.

– ह. भायाणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन प्राकृत-संस्कृत प्रयोगोनी पगदंडीए

– हरिवल्लभ भायाणी

१. शब्दप्रयोगो

(१) सं. **चेलक्नोपम्**, (२) प्रा. **पाणद्धि**, (३) दे. **मोरउल्ला**, (४) प्रा. **उट्ठब्भ्** के **उटठुब्भ्** ? (५) दे. **साइतंकार**, (६) गुज. **चणवुं**, हिं. **चुगना**.

१

(१) सं. चेलक्नोपम् 'कपडां तरबोळ बनी जाय तेटलुं (वरसवुं)'

हेमचंद्राचार्यना 'योगशास्त्र' मां योग द्वारा केवलज्ञाननी प्राप्ति थती होवाना संदर्भे वृत्तिमां आपेली भरत चक्रवर्तीनी दृष्टांतकथामां ऋषभदेवना विवाहवर्णनमां, देवगण सहित इंद्र विवाह माटेनी जे विविध तैयारी करे छे तेमां विवाहमंडपना द्वारे वादळांए जळ वरसाव्यानो निर्देश नीचे प्रमाणे छे :

ववृषुर्मण्डप-द्वारे चेलक्नोपं पयोमुचः । ('योगशास्त्र', १-१०; वृत्ति-श्लोक १,७६.)

'मंडपना द्वार पासे वादळो कपडां तरबोळ बनी जाय तेटलुं वरस्यां.'[१]

सं. **क्नूय्** धातु 'भीनुं थवुं' **(उन्दन)** अर्थमां नोंधायो छे. (पाणिनीय धातुपाठ, १४, १४; हैम धातुपाठ, (०२). तेना प्रेरक अंग **क्नोपय्** (अष्टाध्यायी – ७-३-३६, ८६) परथी **अम्** – प्रत्ययवाळुं संबंधक भूतकृदंतनुं रूप **क्नोपम्**, ज्यारे वस्त्रवाचक पद साथे समस्त थईने वपराय छे, त्यारे ते केटला मोटा प्रमाणमां वरसाद पड्यो ते सूचवे छे. जेम के **चेलक्नोपं / वस्त्रक्नोपं** । **वसनक्नोपं वृष्टो देवः / मेघः** ('अष्टाध्यायी' – ३-४-३३ उपरनी वृत्तिमां; 'सिद्धहेम' परनी लघुवृत्तिमां).

'शिशुपालवध' मां **वस्त्रक्नोपम्** नो प्रयोग थयो छे. पण संस्कृतसाहित्यमांथी **चेलक्नोपम्**-नो कोई प्रयोग नोंधायो नथी. वैयाकरण हेमचंद्राचार्ये करेला तेना प्रयोगने बीजा कोई प्रयोग ध्यानमां न आवे त्यां सुधी अनन्य गणवानो रहेशे.[२]

---

१. चेलार्थेषु कर्मसूपपदेषु क्नोपेर्णमुल् स्याद् वर्षप्रमाणे । यथा वर्षणेन चेलानि क्नोप्यन्ते तथा वृष्ट इति चेलक्नोपं वृष्टः ॥ तथा चेलार्थाद् व्याप्यात् परात् क्नोपयतेस्तुभ्यकर्तृकार्थाद् वृष्टिमाने गम्ये धातोः सम्बन्धे णम् वा स्यात् ॥

२. उपयुक्त संदर्भ :- संस्कृत अंग्रेजी कोश. मोनिअर विलिअम्झ.
'धातुरूपकोश.' धर्मराज नारायण गांधी. 'योगशास्त्र'. संपादक, मुनि जंबूविजयजी.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(२) प्रा. पाणद्धि 'शेरी', 'गली'.

हेमचन्दाचार्यकृत 'देशीनाममाला' मां (६–३९) **पाणद्धि** शब्द 'रथ्या'ना अर्थमां आपेलो छे. प्राकृतकोशमां तेनो साहित्यमां थयेलो कोई प्रयोग नोंधायो नथी. पण भोजकृत 'सरस्वती–कंठाभरण' (पृ. ६३५) अने 'शृंगारप्रकाश' (पृ. ७९०, ११९७) मां टांकेली नीचेनी उदाहरण–गाथामां तेनो प्रयोग मळे छे. (जुओ, वी. एम. कुलकर्णी, ग्रंथ – १, पृ. १६० (क्रमांक ५९२), ग्रंथ – २, पृ. ६५, ८०५.).

हंहो कण्णुलीणा भणामि रे किंपि सुहअ मा तूर ।
णिज्जण – पाणद्धी – संकडम्मि पुण्णेहिं लद्धो सि ।।

'अरे सुभग, जवानी उतावळ न कर. मारे तने कांईक कानमां कहेवुं छे.आगला भवनां पुण्ये तुं सांकडी निर्जन गलीमां भेगो थयो छे'. *

(३) दे. मोरउल्ला 'व्यर्थ'

सिहे. ८–२–२१४ मां **मोरउल्ला** क्रियाविशेषण **मुधा** 'निरर्थक, नकामुं' एवा अर्थमां आप्यो छे. पासम. मां **मोरकुल्ला** एवुं रूप पण नोंध्युं छे, अने तेनो प्रयोग 'चउपन्न–महापुरिसचरिय', 'कुमारपालचरित' (**मा तम्म मोरउल्ला** 'तुं निरर्थक दुःखी न था', ४, २०) अने 'सुमतिजिन–चरित्र' मां थयो होवानुं जणाव्युं छे. रत्नप्रभसूरिकृत 'उपदेशमाला – दोघट्टी–वृत्ति' (ई.स. ११८२)मां पण एनो प्रयोग मळे छे : **मरेसु मा मोरउल्लाए** 'निरर्थक न मर' (पृ. ८, पद्य ८७).

---

* कंठपरंपराना एक वैष्णव धोळनी पंक्तिओ सरखावो :

सांकडी शेरीमां श्री वल्लभ मळ्या, बोल्या कांई वेण–कवेण,
श्री वल्लभ विना घडी नहीं चाले.

(४) उट्ठब्भ्– के उट्टुब्भ्– ?

'सिद्धहेम' ८, ४, ३६५ नीचे (अपभ्रंश – विभागमां), सं. **इदम्** नुं स्थान अपभ्रंशमां **आय** ले छे ते दर्शाववा आपेलां त्रण उदाहरणोमां त्रीजुं नीचे प्रमाणे छे :

आयहो दड्ढ–कलेवरहो, जं वाहिउ तं सारु ।
जइ उट्ठब्भइ तो कुहइ, अह डज्झइ तो छारु ।।

शरीरनुं असारपणुं दर्शाववा आ दोहामां कह्युं छे के मृत्यु थतां शरीर कां तो सडी जाय छे, नहीं तो (जो तेने बाळी मूकवामां आवे तो) राख थई जाय छे. आमां **उट्ठब्भइ**नो (१)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'दोधकवृत्ति' मां **आच्छाद्यते** (= ढांकी रखाय) = **स्थाप्यते** (= राखी मुकाय) एवो अर्थ कर्यो छे. वैद्ये अने में पण तेनुं अनुसरण कर्युं छे. पिशेले 'दाटी देवाय' एवो जे अर्थ कर्यो छे, तेनी टीका करतां आल्स्डोर्फे सूचव्युं छे के 'राखी मूकवामां आवे' (एटले के 'दाटी देवामां न आवे') तो शरीर सडी जाय –एवो अर्थ ज बंध बेसे. व्यासे आनी नोंध लीधी छे.

योगीन्दुदेवना 'परमप्पपयास' मां आ दोहानुं रूपांतर नीचे प्रमाणे मळे छे :

बलि किउ माणुस–जम्मडा , देक्खंतहं पर सारु ।
जइ उट्ठब्भइ तो कुहइ, अह डज्झइ तो छारु ।।

उत्तरार्ध उपरना दोहा साथे समान छे. पूर्वार्ध थोडोक जुदो छे, पण सडवानी के राख थवानी वात मनुष्यशरीरने लागु पडे तेम मनुष्य जन्मने सीधी लागु न पडी शके – एटले उपरना सुसंगत अर्थ वाळा दोहानुं आ कांईक नवळुं रूपांतर जणाय छे. अहीं ब्रह्मदेवनी संस्कृत वृत्तिमां **उट्ठब्भइनी अवष्टभ्यते** एवी छाया आपीने **भूमौ निक्षिप्यते** एवो अर्थ कर्यो छे. परंतु **उट्ठब्भ** – नो 'राखी मुकवुं, पडयुं रहेवा देवुं' के 'दाटी देवुं' एवा अर्थनो कोई अन्य प्रयोग नोंधायो नथी.

हकीकते **उट्ठब्भइ** पाठ भ्रष्ट छे. तेने बदले **उट्ठुब्भइ** जोईए. सं., स्तुभ् उपरथी थयेला **छुभ्** नो अर्थ 'बहार फगावी देवुं' एवो थाय छे. पालि **निछुभति, निट्ठहइ** नो अर्थ 'गळुं खंखारीने थूंकी काढवुं' एवो छे. धातुपाठमां **स्तुभ्य्** धातु 'निष्कासन'ना अर्थमां आप्यो छे. प्राकृत **उट्ठुभ्** नो पण एवो अर्थ छे. पण प्रा. उच्छूढ (उट्ठुभ् नुं भूतकृदंत)नो 'त्यक्त, निष्कासित, उज्झित' एवो अर्थ पासम. मां आप्यो छे अने प्रयोगनां उदाहरण तरीके **उच्छूढ–सरीर–धरा** आपेल छे. आ संदर्भमां शरीरने संस्कारथी–परिकर्मथी वंचित राखवुं, साफसूफी अने सजावट प्रत्ये उपेक्षा सेववी एवो अर्थ छे. पण उपर्युक्त बधा संदर्भो जोतां 'नाखी देवुं, 'उपेक्षाभावे एमने एम पडयुं रहेवा देवुं' एवो अर्थ सहेजे लई शकाशे, अने ते हेमचंद्राचार्ये उद्धृत करेल दोहा माटे बंधबेसतो थाय छे, एटले पाठ **उट्ठब्भइ** नहीं, पण **उट्ठुब्भइ** होवो जोईए.

(पू) दे. साइतंकार 'विश्वस्त, सप्रत्यय'

हरिभद्रसूरिनी 'आवश्यक–वृत्ति' मां **साइतंकार** (२, पृ. १४२) अने 'पिंडनिर्युक्ति–भाष्य'मां **साइयंकार** (३३मां) 'विश्वस्त', 'सप्रत्यय' एवा अर्थमां वपरायो होवानुं 'देशी शब्दकोश' मां नोंध्युं छे अने ते माटे नीचे प्रमाणे उद्धरणो आपेल छे :

(१) जं च राएण उल्लवियं साइतंकारो तेण तं पत्तए लिहियं ।
(२) पुच्छा समणे कहणं साइयंकार – सुमिणाई ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आवृ. मां जे शब्दरूप मळे छे ते त्श्रुति वाळुं छे. एटले मूळ **साइयंकार** ज छे. पासम. मां **साइयंकार** माटे पिंभा. ४२ नो निर्देश छे. अपभ्रंशमां **साइउ** शब्द 'आलिंगन' ना अर्थमां वपरायो छे. **साइउ देइ** एटले 'स्नेहीजनने मळतां तेने 'भेटे छे'. गुजरातीमां 'सांई' आ ज अर्थमां प्रचलित छे. परगाम रहेता स्वजनने माटे ते गाम जनारने 'एमने मारा वती सांई देजो' कहेवानो रिवाज छे. कहेवत छे के 'नहीं संदेशो के नहीं सांई, तमे त्यां ने अमे आंही'. एटले 'कुशळप्रश्न', 'कुशळवार्ता' एवो अर्थ विचारणीय छे.

(विगत माटे जुओ रत्ना श्रीयान, Des'ya and Rare Words from Puspadanta's Mahapurana १९६९)'.

(६) गुज. चणवुं, हिं चुगना

गु. **चणवुं** नो एक अर्थ छे 'चांचथी एक एक दाणो पकडी गळी जवानी पक्षीनी क्रिया.' **चण** (स्त्री.) एटले 'पक्षीओने माटे आ सारु नखाता अनाजना दाणा.'

वृ.गु.को. मां एना मूळ तरीके सं. **चिनोति** 'एकठुं करवुं, ढगलो करवो', आप्यो छे. प्रा. **चिणइ**नो पण 'फूल वगेरे चूंटीने एकठां करवां' एवो अर्थ छे.

प्राकृतमां **चिणइ** उपरांत **चुणइ** पण मळे छे. हेमचंदे अनियमित रीते एक स्वरनुं स्थान बीजो स्वर लेतो होवानुं गणीने **चुणइ**ने **चिणइ** उपरथी थयेलो मान्यो छे (सिहे. ४.२२८). टनरे **तुन्न** जेवाना प्रभावे **इ** नो **उ** थयानुं सूचव्युं छे (**इ लें.** '४८१४)'. अर्थ थोडोक बदलायो छे. **काओ लिंबोहलिं चुणइ** (पासम.) एवा प्रयोगमां 'चांचथी ठोलीने खावुं' एवो अर्थ छे, जे 'चणवा'ना अर्थनी निकट छे. एथी **चणवुं** ना मूळ तरीके प्रा. **चिणइ** नहीं पण **चुणइ** ज स्वीकारवानो रहे.

आनुं समर्थन चौदमी शताब्दी लगभगना एक जैन पुरातन प्रबंधथी मळे छे. (मुनि जिनविजय संपादित 'पुरातन प्रबंध संग्रह' मां G संज्ञक हस्तप्रतमांथी आपेल भोजराजाना वृत्तान्तमां, पृ. २२ उपरनो, परिच्छेद ४१ नीचे आपेलो प्रसंग). भोजराजानी सवारी नीकळी त्यारे सौ तेने नमस्कार करता हता, पण एक हाटमां उभेला एक माणसे नमस्कार न कर्या. राजाए तेनी सामे जोयुं एटले तेणे त्रण आंगळी ऊंची करीने बतावी. राजाने ए संकेत समजायो नहीं. बीजे दिवसे त्यांथी राजानी सवारी नीकळी त्यारे पेलाए बे आंगळी अने त्रीजे दिवसे एक आंगळी ऊंची करीने राजाने बतावी. पछी भोजे तेने बोलावीने संकेतोनो खुलासो पूछयो. एटले ते माणसे कहयुं 'पहेली वार आपनां दर्शन कर्यां त्यारे मारे घरे त्रण दिवसनी **चूणि** हती, पछी बे दिवसनी, पछी एक दिवसनी. राजाने नमस्कार करीने पण शुं ?' अहीं **चूणि** एटले **'चण'** – एटले के 'पेट पूरतुं अनाज.' एटले भोजे तेने वर्षासन बांधी आप्युं.

अहीं **चूणि** रोज खावाना अनाज माटे लाक्षणिक अर्थमां वपरायो छे. **चुणइ** उपरथी मध्यकालीन गुजरातीमां थयेला उ > अ एवा परिवर्तनने परिणामे **चणवुं** थयो. पण अहीं तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दीर्घ ऊ वाळो **चूणि** छे, अने गुजराती कोशोमां पण **चूणवुं, चूण** एम दीर्घ स्वरवाळां रूप नोंधायां छे. आनो खुलासो मेळववानो रहे छे. **चुणि** उपरथी **चण** थाय, **चूणि** उपरथी **चूण**.

हिंदी वगेरेमां चणवाना अर्थमां **चुगना** के चूंगना छे. पंजाबीमां **चोग्गा** एटले 'चण'. टर्नर ए धातुओ अने तेमांथी साधित शब्दो माटे मूळ तरीके **चुग्यति** के **चुंगति** होवानुं मान्युं छे. ('इलें ४८५२, ४८५३, ४९१९, ४९२०). पण सादृश्यनो आधार लईने ए धातुने अने साधित शब्दोने **चुणइ** साथे जोडी शकाय तेम छे. **चिणइ** उपरथी कर्मणि **चिव्वइ, चिम्मइ** अने **चिज्जइ** थाय छे. ते अनुसार **चुणइ** उपरथी कर्मणि **चुज्जइ.** अने पछी जेम प्राकृत **भज्जइ,** भू. कृ. **भग्ग, रज्जइ – रग्ग, वज्जइ – वग्ग** वगेरे तेम **चुज्जइ – चुग्ग.** अने ए भूतकृदंत परथी धातु **चुगना** अने नाम **चोग्गा** वगेरे सधाया.

२. छंदचर्चा, पाठचर्चा वगेरे

(१). सिहे. ८–४–३३० ना उदाहरणनो पाठ अने छंद

'सिद्धहेम' ना अपभ्रंश विभागना ३३० मा सूत्र प्रमाणे नामिक विभक्तिना प्रत्यय पूर्वे नामना अंगनो अंत्य स्वर ह्रस्व होय तो दीर्घ थाय छे, अने दीर्घ होय तो ह्रस्व थाय छे. तेनुं उदाहरणपद्य नीचे प्रमाणे छे :

ढोल्ला सामला धण चंपावण्णी ।
णाइं सुवण्ण–रेह कसवट्टइ दिण्णी ।

'नायक शामळो छे, नायिका चंपावणी छे. जाणे के कसोटीना पथ्थर पर सोनानी रेखा पडी होय (तेवां ते शोभे छे.)'. दोग्धकवृत्ति अनुसार अहीं नायक – नायिकाना विपरीत रतनी परिस्थितिनुं वर्णन छे.

अहीं समस्या ए छे के उदाहरणपद्यनो छंद जे रूपे पाठ सचवायो छे ते रूपमां अनियमित छे. एकी चरणोमां कां नव मात्रा जोईए, कां तो दस. पण उपर आपेला पाठमां पहेला चरणमां नव मात्रा छे, पण त्रीजा चरणमां दस. आ बाबत तरफ अपभ्रंश व्याकरणना संपादको – संशोधकोनुं ध्यान नथी गयुं.

'पुरातन प्रबंध संग्रह' (संपा. जिनविजय मुनि, सिंजैग्र., २, १९३६)नी ई. स. १४ मी शताब्दीनी G हस्तप्रतमां आपेल भोजचरित्रमां एवो प्रसंग छे (पृ. २०–२१ परिच्छेद ३६) के मालवपति मुंजे ज्योतिषीने पूछतां तेणे जणाव्युं के तमने पुत्र थशे नहीं, पण श्रावण सुद पांचमना पहेला प्रहरे जे तमारी समस्या पूरशे ते तमारा पछी राजा थशे. ते दिवसे मुंजे कोईक प्रासादमां रहेला श्याम पति अने गोरी पत्नीने जोयां अने तेने पद्यार्ध स्फुर्युं : **ढुल्लउ सामलउ धण चंपावन्नी ।** एनी समस्यापूर्ति बीजा कोईथी न थई शकी, पण भोजे ते करी : **छज्जइ**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कणयारह कसवट्टइ दिन्नी. आमां बे–त्रण बाबत ध्यानपात्र छे. पहेलुं तो ए के हेमचंदना उदाहरणमां **ढोल्ला सामला** छे त्यारे अहीं छे **ढुल्लउ** (के **ढोल्लउ**) **साामलउ**. अंत्य अ नो **आ** थयानुं उदाहरण आपवानुं होवाथी हेमचंद्राचार्य समक्ष **ढोल्ला सामला** एवो पाठ ज होई शके. पण आ प्रकारनां कंठपरंपरामां प्रचलित रहेलां पद्योनो पाठ केटलेक अंशे प्रवाही रहेतो. तेमां शब्दस्वरूपनी पण एकवाक्यता घणी वार नथी जोवा मळती. प्रथमा एकवचन जे बोली–प्रदेशमां **अउ** प्रत्ययवाळुं हतुं ते प्रदेशनो आ पाठ छे.

बीजुं **कणयारह** पाठ भ्रष्ट छे. तेने स्थाने **कणय**–रेह जोईए. र्‍नी पडिमात्रा **य** नो कानो बनी गई छे.

त्रीजुं, हेमचंदीय उदाहरणना उत्प्रेक्षावाचक **णाइं** ने स्थाने अहीं **छज्जइ** छे. ए पाठमां, संदर्भथी समजाइ जतुं जे अनुक्त राख्युं छे ते खुल्लुं व्यक्त थयुं छे. एटले एने पाछळनो पाठ गणी शकीए. आम

ढोल्ला सामला (के **ढोल्लउ सामलउ**), **धण चंपावन्नी** ।
नाइं कणय–रेह, **कसवट्टइ दिन्नी** ।।

एवा पाठमां छंदनी अशुद्धि रहेती नथी. ९+ १०, ९ + १० मात्राना मापवाळी आ मलयमारुत नामना छंदनी आंतरसमा चतुष्पदी छे.

'स्वयंभूछंद' नुं मलयमारुतनुं उदाहरण :

गोरी अंगणे, सुप्पंती दिट्ठा ।
चंदहो अप्पणी, जोण्ह वि उव्विट्ठा ।। (**स्वछं० ६ – ४२, ९१**)
('स्वयंभूछंद' मां **विउव्विट्ठा** पाठ भ्रष्ट छे.)

'आंगणामां सूतेली गोरीने जोई एटले पछी चंदने पोतानी ज्योत्स्ना पण अबखे पडी.'

'छंदोनुशासन'नुं उदाहरण :

देक्खिवि वेल्लडी, मलय–मारुअ–धुआ ।
सुमरिवि गोरडी, पंथिअ–सत्थ मुआ ।। (**छंदो० ६–१९, २०**)

'मलयपवने कंपती वेलडीने' जोईने पोतानी गोरी सांभरी आवतां पथिको मरणशरण थया.'

'कविदर्पण' (१३मी शताब्दी लगभग)मां आपेलुं मलयमारुतनुं उदाहरण ('कोईकनुं छे' एवा उल्लेख साथे) पण जोईए :

तत्ती सीयली, मेलावा केहा ।
धण उत्तावली, प्रिय –**मंद**–**सिणेहा** ।। (वेलणकर–संपादित पृ. २३, १४–२).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'तप्त अने शीतल वस्तु वच्चे मेळाप क्यांथी होय ?
नायिका उतावळी, पण नायकनो स्नेह मंद.'

(२). सिहे. ८-४-३९५(१)नो पाठ, अर्थ

सिहे. ८-४-३९५(१)मां, सं. **तक्ष्** ना **छोल्ल** एवा आदेश माटे नीचेनुं उदाहरण आपेलुं छे (बीजी आवृत्तिमां आपेल पाठ अने अनुवाद सुधारवानो छे) :

जिवँ जिवँ तिक्खालेवि किर, जइ ससि छोल्लिज्जंतु ।
तो जइ गोरिहे मुह-कमलि, सरिसिम का-वि लहंतु ।।

'गमे तेम करीने, मानो के, चंद्रने वधु चकचकतो करवामां आवत तो ते कदाच आ गोरीना मुखकमळ साथे किंचित् समानता प्राप्त करत.'

रत्नप्रभसूरिकृत 'उपदेशमाला-दोघट्टी-वृत्ति' (ई.स. ११८२)मां जिनशासननी उज्ज्वळता दर्शावतुं विशेषण **छोल्लिय-छण-मय-लंछण-च्छाय** 'चकचकित करेला (कलंक घसी काढेला) पूनमना चंद्रनी कान्तिवाळुं' वपरायुं छे (पृ. १११, पद्य ४१).

(३). सिहे. ८-४-४२२ (२)नो पाठ, अर्थ

सिहे. ८-४-४२२(२) मां, **झकट** (खरेखर तो **संकट**)ना **घंघल** एवा आदेश माटे नीचेनुं उदाहरण आपेलुं छे :

जिवँ सु-पुरिस तिवँ घंघलइँ, जिवँ नइ तिवँ वलणइँ ।
जिवँ डुंगर तिवँ कोट्टरइँ, हिआ विसूरइ काइँ ।।

रत्नप्रभसूरिकृत 'उपदेशमाला-दोघट्टी-वृत्ति' **(इ.स. ११८२)मां ते ज (थोडा पाठांतरथी)** आपेलुं छे (पृ. ९८, पद्य ५१) :
जहिं सु-पुरिस तहिं घंघलइं, जहिं नइ तहिं वलणाइं ।
जहिं डुंगर तहिं खोहरइं, सुयण विसूरहि काइं ।।

अहीं **खोहरइं** पाठ (**कोट्टरइं** ने बदले) शंकास्पद लागे छे. प्राकृतमां **खोहर** शब्द मळतो नथी. हिंदीमां **खोह** (गुज. **खो**) छे खरो, ज्यारे गुज. मां **कोतर** (तकार साथे) तो मळे ज छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(४). 'छंदोनुशासन' गत प्राकृत छंदप्रकार द्विभंगीनां उदाहरणोनी पाठचर्चा

१. 'छंदोनुशासन' मां हेमचंद्राचार्ये सामान्य रीते स्वरचित उदाहरणो आप्यां छे. ज्यां कोई पूर्ववर्ती ग्रंथना उदाहरणनो उपयोग कर्यो छे, त्यां पण उदाहरणमां छंदनुं नाम गूंथवानुं होवाथी तेमणे जरूरी फेरफार कर्या छे. पण केटलीक वार कोई पूर्ववर्ती स्रोतमांथी उदाहरण उद्धृत करेल छे. जेम के चोथा अध्यायना ८७मा सूत्र नीचे विविध छंदोना संयोजनथी थती द्विभंगीओ तरीके (१) गाथा + भद्रिका, (२) वस्तुवदनक + कर्पूर, (३) वस्तुवदनक + कुंकुम, (४) रासावलय + कर्पूर, (५) रासावलयक + कुंकुम, (६) वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण + कर्पूर, (७) वस्तुवदनक अने रासावलयनुं मिश्रण + कुंकुम, (८) रासावलय अने वस्तुवदनकनुं मिश्रण + कर्पूर, (९) रासावलय अने वस्तुवदनकनुं मिश्रण + कुंकुम, (१०) वदनक + कर्पूर, (११) वदनक + कुंकुम – एटला छंदप्रकारोनां उदाहरण संभवतः कोई पूर्ववर्ती छंदोग्रंथमांथी लीधेलां छे. आमांनां आठ उदाहरण 'कविदर्पण' मां पण मळे छे. 'कविदर्पण'कारे 'छंदोनुशासन'मांथी ते लीधां होय एवो प्रबळ संभव छे, केम के केटलेक स्थळे तेणे 'सिद्धहेम' ना प्राकृत विभागमांथी प्रयोगना समर्थन माटे उद्धरण आप्यां छे. जो के थोडाक पाठ भिन्न छे. आमांथी रासावलय अने कर्पूरनी द्विभंगीनुं उदाहरण नीचे प्रमाणे छे.

परहुअ–पंचम–सवण–रभय मन्नउं स किर
तिंभणि भणइ न किं पि मुद्ध कलहंस–गिर ।

चंदु न दिक्खण सक्कइ जं सा ससि–वयणि
दप्पणि मुहु न पलोअइ तिंभणि मय–नयणि ॥

वइरिउ मणि मन्नवि कुसुम–सरु, खणि खणि सा बहु उत्तसइ ।
अच्छरिउ रूव–निहि कुसुम–सरु, तुह दंसणु जं अहिलसइ ॥

('कविदर्पण' मां 'कलयंठि–गिर' अने 'मन्निवि' पाठ छे ते वधु सारा छे. छेल्ली पंक्तिमां 'कुसुम–सर' एवो पाठ जोईए, ते संबोधन होवाथी).

'हुं मानुं छुं के ते मुग्धा कोकिलनो पंचम सूर सांभळवाथी डरे छे, अने ते कारणे ज ते कोकिलकंठी पोते कशुं ज बोलती नथी. ए चंदवदना चंद्र जोई शकती नथी, ते कारणे ए दर्पणमां पोतानुं मुख जोती नथी. मनमां रहेला कंदर्पने शत्रु मानीने ते क्षणे क्षणे घणो त्रास पामी रही छे, ने तेम छतां ए एक अचरज छे के हे रूपनिधि कंदर्प, ए तारुं दर्शन करवानी अबळखा सेवे छे.'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हवे दसमी शताब्दीमां रचायेली धनंजयना 'दशरूपक' उपरनी धनिकनी 'अवलोक' टीकानी एक हस्तप्रतमां चोथा प्रकाशनी ६६मी कारिका उपरनो जे पाठ मळे छे तेमां प्रवास-विप्रयोगमां प्रवासचर्चानुं नीचेनुं एक उदाहरण मळे छे. (ए ज पद्य ई.स. १२५८ मां रचायेल जल्हणकृत 'सूक्तिमुक्तावलि' मां पण मळे छे) :

नीरागा शशलांछने मुखमपि स्वे नेक्षते दर्पणे
त्रस्ता कोकिलकूजितादपि गिरं नोन्मुद्रयत्यात्मनः ।
चित्रं दुःसह-दुःख-दायिनि कृत-द्वेषाऽपि पुष्पायुधे
मुग्धा सा सुभग ! त्वयि प्रतिकलं प्रेमाणमापुष्यति ॥

स्पष्टपणे आ बे अपभ्रंश अने संस्कृत पद्योमांनुं कोई एक बीजानो चोख्खो अनुवाद ज छे. कयुं पूर्ववर्ती अने कयुं पश्चाद्‌वर्ती एनो निर्णय दुष्कर छे.

आनुषंगिक नोंध : उपर 'छंदोनुशासन'मां आपेलां जे द्विभंगीप्रकारोनां उदाहरणोनो निर्देश कर्यो छे तेना प्रा. वेलणकरना संपादनमां आपेला पाठमां केटलाक सुधारा करवा इष्ट छे. ते नीचे प्रमाणे छे :

१. त्रीजा प्रकारनुं उदाहरण : पहेली पंक्तिमां **किनरि विक्खरहि** ने बदले **कि न रि विक्खिरहि** (पाठांतर) जोईए.

२. चोथा प्रकारनुं उदाहरण : उपर सूचव्युं छे तेम बीजी पंक्तिमां **कलयंठि-गिर** ('कविदर्पण' नो पाठ) अने **मन्निवि** (पाठांतर) जोईए, अने अर्थने अनुसरीने **कुसुमसर** जोईए.

३. पांचमुं उदाहरण : पहेली, त्रीजी अने पांचमी पंक्तिने आरंभे **जइ अ** के **जइ** छे त्यां **जइअ (= यदा)** जोईए. आने एक पाठांतरनुं पण समर्थन छे. टीकाकारे पण संपादकनी जेम **यदि** अर्थ कर्यो छे ते बराबर नथी. 'सिद्धहेम' ८-४-३६५ नीचे **यदा**ना अर्थमां प्राकृतमां **जाहे, जाला, जइआ**नो प्रयोग थतो होवानुं नोंध्युं छे.

बीजी पंक्तिमां **कुसुमदलम्मि** पाठ करतां °**दलग्गि** पाठ वधु सारो छे. पांचमी पंक्तिमां **वयणगुंफ**ने बदले उकार जाळवतो **वयणगुंफु** पाठ वधु सारो छे.

४. छट्ठुं उदाहरण : **करिहि** ने बदले **करहि, इच्छि** मय इच्छि **इ पणयमुहुं** ने बदले **इच्छि म इच्छि पणयउ**-**सुहु** ('कविदर्पण'नो पाठ), अने अंतिम पंक्ति **माणिक्किमणंसिणि करिव वलु, हेल्लि खेल्लि ता जूउ तुहुं** ने बदले **माणिक्कि मणंसिणि करि ठवलु, हेल्लि खेल्लि ता जूउ तुहुं** जोईए. आ छेल्ली पंक्तिनो अर्थ टीकाकार पण खोटा पाठने कारणे समज्यो नथी. तेणे तदा हे **हस्तिगमने प्रणतमुखं भर्तृमुखं 'इच्छि' दृट्वा हे मानैक-मनस्विनी हे सखि बलं अपि कृत्वा क्रीडितुं युक्तं तव** । एवो अर्थ कर्यो छे, जे तद्दन भ्रान्त छे. **मानम् एकं** (श्लेषथी **माणिक्यम्**) **हे मनस्विनि कृत्वा दायम्, हे सखि रमस्व तावत् द्यूतं त्वम्** । अहीं **ठवलु** एटले 'जुगारनी बाजीमां जे होडमां मुकाय ते, दाव.' ए अर्थमां **ठउलु**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शब्दनो प्रयोग स्वयंभूकृत 'उमचरिउ' मां पण मळे छे. त्यां पण रणभूमिने शारिपट्टनुं उपमान आपीने तेमां जीवनने होडमां मूकवानुं रूपक छे.

५. सातमुं उदाहरण : त्रीजा पंक्तिमां **ल्हसडउ** ने बदले **ल्हुसडउ** (= **लुण्टाकः**) जोईए. छेल्ली **झुलक्कइ** ने बदले **झुलुक्कउ** जोईए. (आठमा उदाहरणनी बीजी पंक्तिमां ए ज पाठ छे.)

६. आठमुं उदाहरण : **सहि इ** ने बदले **सहिइ** जोईए. छेल्ली बे पंक्तिनो अर्थ टीकाकार समज्यो नथी. **तुहने** बदले तुहुं, **मयणबाणवेयण कलह** ने बदले **मयणबाण – वेयण-कलहि** अने तुलहने बदले तुलहि पाठ जोईए. 'हे तन्वंगी, तुं जेमां मदनबाणनी वेदना छे तेवा प्रेमकलहमां लथडती पड नहीं. हे मानिनी, वल्लभ साथेनुं मान तजी दे, तारा प्राणनी संशयतुला उपर चड नहीं.'

७. नवमुं उदाहरण. पांचमी पंक्ति. **पयड धाइने** बदले **पयडत्थय** ('कविदर्पण'नो पाठ) जोईए.

८. दसमुं उदाहरण बीजी पंक्तिमां **पहिल्लय** ने बदले **पहल्लिय** (पाठांतर)अने छेल्ली पक्तिमां **जाइ° जाय°** ने बदले **जाइजाय°** जोईए ।

(५). काव्य–गुंफ

काव्य रचवानी क्रिया–प्रक्रिया माटे संस्कृत काव्य अने काव्यशास्त्रनी परंपरामां वस्त्र गूंथवा के वणवानुं उपमान घणुं जाणीतुं छे. संस्कृत काव्यशास्त्रमां काव्यनी रचना अने बंध विशेनी चर्चामां 'गुंफ' संज्ञा वपराई छे. गुंफ नामना अलंकारमां वर्ण, अर्थ, पद, वाक्य वगेरेनी विशिष्ट पसंदगी अने क्रममां गोठवणी करवानो ख्याल समाविष्ट थयो छे. राघवने 'शृंगार–प्रकाश'ना पोताना अध्ययनमां आ विषय विगते चर्च्यो छे.

ग्रथ्नामि काव्य–शशिनं विततार्थ–रश्मिम् ।

('अर्थरूपी किरणोना विस्तारवाळो काव्यरूपी चंद हुं गूंथी रह्यो छुं')ए चरण जो के वामने (अने तेने अनुसरीने मम्मटे), उपमादोषो गणावतां, सादृश्य निराधार होवाथी उत्पन्न थता अनौचित्य–दोषना उदाहरण तरीके आप्युं छे, तो पण तेमां काव्य 'गूंथवानी' वातनो उल्लेख छे ए नोंधवुं घटे.

आ संदर्भमां प्रभाचंदकृत 'प्रभावकचरित'मां आपेल हेमचंदसूरिचरितमां मळतुं (पृ. १९०) तत्कालीन देववोध कविनुं नीचेनुं पद्य पण नोंधपात्र छे. ए एक अन्योक्ति छे. वाच्यार्थ छे –गामठी वणकर, तेनाथी वणातां वस्त्र, अने वस्त्र पहेरनारी सुंदरी. गम्यार्थ छे – कवि, रचातां काव्यो अने सहृदय भावको.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भ्रातर् ग्राम-कुविन्द कन्दलयता वस्त्राण्यमूनि त्वया
गोणी-विभ्रम-भाजनानि बहुशोऽप्यात्मा किमायास्यते ;
अप्येकं रुचिरं चिरादभिनवं वासस् तदासूत्र्यते
यन् नोज्झन्ति कुच-स्थलात् क्षणमपि क्षोणीभृतां वल्लभाः ॥

'हे भाई ! गामठी वणकर, आवां गुणपाट समां ढगलाबंध वस्त्रो वणीने तुं शा माटे नकामुं कष्ट वेठी रह्यो छे ? तुं जोईए तेटलो समय लईने पण मात्र एक ज एवुं सुंदर अवनवुं वस्त्र वण ने, जे मानीती राजराणीओ पोताना कुचप्रदेश परथी क्षणमात्र पण अळगुं न करे !

भोजचरित्रमां आपेला एक प्रसंगमां कांईक एवा ज तात्पर्यवाळा अने रचनाचातुरीवाळा नीचेना पद्य प्रत्ये शीलचंदविजयजीए मारुं ध्यान दोर्युं :

काव्यं करोमि न च चारुतरं करोमि
यत्नात् करोमि यदि चारुतरं करोमि ।
भूपालमौलिमणिलुण्ठितपादपीठ !
हे साहसाङ्क ! कवयामि वयामि यामि ॥

'हुं काव्य करुं छुं, पण ते सुंदर बनतुं नथी. प्रयास करुं छुं तो (कदीक) सुंदर बनी आवे छे. जेना पादपीठ पासे (नमता सामन्त राजवीओना) मुकुटमणि आळोटे छे (आमथी तेम गति करे छे) एवा हे साहसांक, हुं काव्यरचना करुं छुं, वस्त्र वणुं छुं, जउं छुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'सिद्धहेम शब्दानुशासन' प्राकृत अध्यायनां उदाहरणोना मूळ स्रोत

– हरिवल्लभ भायाणी

प्राकृत अध्यायमां निरूपित प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, पैशाची, चूलिकापैशाची अने अपभ्रंश भाषाना व्याकरणना नियमोने उदाहृत करवा हेमचंद्राचार्ये प्रचलित साहित्यमांथी उदाहरणो प्रस्तुत करेलां छे.

ए स्वयं पसंद करेलां होय, अथवा तो पूर्ववर्ती प्राकृत व्याकरणोमांथी अपनावेलां होय (वररुचि, चंड, नमिसाधुनुं अने कदाच लुप्त थयेल स्वयंभूव्याकरण एटलां तो आपणे आधारभूत होवानो संभव चींधी शकीए) । एमां आपणने हाल मळतां प्राकृत–अपभ्रंश साहित्यमांथी ए उदाहरणोनां यथाशक्य मूळ शोधवानो प्रयास अनेक कारणे मुश्केल बने छे. एक तो केटलीक मूळ कृतिओ लुप्त थई गई होय; बीजुं, प्राकृत साहित्य अतिशय विशाळ होवाथी पण ए काम विकट बने; त्रीजुं, ज्यां उदाहरण मात्र एक–बे शब्दनुं होय त्यां तेने बीजेथी ओळखवानुं असंभवप्राय गणाय. तेम छतां एवो प्रयास घणो मूल्यवान ए रीते गणाय के ते द्वारा हेमचंद्राचार्यना समय सुधीमां जे प्राकृत–अपभ्रंश साहित्य शिष्टमान्य लेखातुं हतुं तेनुं चित्र आपणने प्राप्त थाय.

आ दिशामां आ पहेलां थयेला केटलाक प्रयासोनी ऊडती नोंध लईए तो वेबरे १८८१ मां पोतानी हालना 'सप्तशतक' (= गाथा–सप्तशती)नी आवृत्ति उपरनी नोंधोमां 'सिद्धहेम'मां उदधृत थयेल केटलाक शब्दो – खंडो ओळखाव्या छे. पिशेले पोताना प्राकृत व्याकरणमां सि. हे. ना घणाखरा शब्दो नोंध्या छे, अने केटलेक स्थळे मूळ स्रोत दर्शाव्या छे. नीती दोल्चीए तेमना फ्रेन्च भाषामां लखेला The Prakrita Grammarians, १९३८ (प्रभाकर झा कृत अंग्रेजी अनुवाद, १९७२)मां वररुचिथी लईने पौर्वात्य संप्रदायना प्राकृत व्याकरणकारोनी साथे 'सिद्धहेम' ना प्राकृत विभागनी तुलना करीने समान सूत्रो अने उदाहरणो विगते दर्शाव्यां छे. (आमांथी रुद्रटकृत "काव्यालंकार" उपरना नमिसाधुना टिप्पणमां आपेल प्राकृत व्याकरणनी रूपरेखा अने सि. हे. ना प्राकृत विभाग वच्चेनी समानता दर्शावतो अंश, आपेल परिशिष्टमां उद्धृत कर्यो छे.)

ए पछी सि. हे. ना अपभ्रंश विभागना अनुवादमां में केटलांक अपभ्रंश उदाहरणोना मूळ स्रोत, के समान्तर भावार्थवाळां उद्धरणो संस्कृत–प्राकृत–अपभ्रंश

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहित्यमांथी तथा उत्तरकालीन जूनी गुजराती, हिंदी, वगेरेमांथी आपेलां. ते पछी मुनि वज्रसेनविजये प्राकृतअध्यायनी तेमनी आवृत्तिमां एक परिशिष्टमां, प्रत्येक पादनां सूत्रवार जे उदाहरणो आपेलां छे, तेमांथी घणांनी सूचि आपी छे, अने तेमांथी जेटलांनां मूळ स्थान तेमने मळ्यां, तेटलां दर्शाव्यां छे. में आपेली अपभ्रंश उदाहरणोने लगती माहितीनो पण तेमणे समावेश कर्यो छे. परंतु तेमनी अधूरी उदाहरण–सूचि पूरी करीने बने तेटलां वधु मूळ स्थानो शोधवा माटे घणो अवकाश छे. शौरसेनी अने मागधी उदाहरणो घणां ओछां होवाथी तेमना पूरतुं आवुं काम प्रमाणमां ओछो श्रम मागी ले तेम छे. पैशाची अने चूलिकापैशाचीनां कोई मूळ स्रोत बच्या न होवाथी तेमने माटे कशो श्रम लेवानो अवकाश नथी. बाकी रहेलां सामान्य प्राकृतनां उदाहरणोनां मूळ शोधवा सारी एवी महेनत करवानी रहे छे. 'गाथासप्तशती', 'हरिविजय', 'वज्जालग्ग', 'सेतुबंध', 'गउडवहो', 'लीलावईकहा', 'तारागण' वगेरे प्राकृत कृतिओ उपरांत अलंकार–ग्रंथोमां उद्धृत प्राकृत उदाहरणो (त्रणेक हजार जेटलां शुद्ध करीने, डॉ. कुलकर्णीए **The Prakrit Verses in Works on Sanskrit Poetics** मां आपेल छे.) पण जोवां जोईए. प्रस्तुत प्रयासने आगला प्रयासोनी एक पूर्ति तरीके गणवानो छे.

नीचे मुख्य प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, अने पैशाची(चूलिका पैशाची)नां सि. हे. मां आपेलां उदाहरणोनी सूची भाषाभेद अनुसार वर्णानुक्रमे आपी छे. तेमांथी जेनो मूळ स्रोत ओळखी शकायो छे ते त्यां दर्शाव्यो छे. अपभ्रंश उदाहरणोना मूळ स्त्रोत विशे मारा अपभ्रंश व्याकरणमां विवरण आप्युं छे.

नीचेनी सूचीमांथी क्रमांक २, ८, १८, २२, ३४, ३४ क, ३५, ३६, ४५, ५०, ५१, ७०, ७४, ७५, ९५, १०१, १०२, १०६, १११, १२०, १२१, १२२, १३०, १४१, १४२, १५६, १६७, १७०, १७५, १७६, २०६, २१५, २२०, २२१, २२६, २३१, २३२, २४०, २४३, २४७, २५९, २६८, २७१, अने २९७ नां मूळ वज्रसेन विजयजीना 'प्राकृत व्याकरण'मां दर्शावेलां छे. क्रमांक २२२, २३९, २५५, २५८, २५९, २६०, २६५, २७२, २७७, २७८, २७९, २८८, २९२, २९५ एटलांना मूळ स्रोत प्रा. विजय पंडयाए खोळी काढ्या छे. बाकीना में ओळखाव्या छे. (गा. = वेबर संपादित 'सप्तशतक' = 'गाथासप्तशती'.)

---

१. अपभ्रंश व्याकरणनी नवी आवृत्तिमां पचासेक आवां उद्धरणो उमेर्यां छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुख्य प्राकृत (८-१-१ थी ८-४-२५९)

१. अइ उम्मत्तिए १-१६९

२. अइ दिअर किं न पेच्छसि २-२०५

गा. ५७१ (प्रथम दल, आरंभनी १२ मात्रा)

२क. अइ सुप्पइ पंसुलि णीसहेहिं अंगेहिं पुनरुत्तं २-१७९

३. अज्ज म्मि हासिआ मामि तेण ३-१०५

गा. २६४ (प्रथम दल, आरंभनी १६ मात्रा)

४. अज्ज वि सो सवइ ते अच्छी १-३३

५. अणचिंतिअममुणंती २-१९०

'तारागण', ७१ (प्रथम दल, आरंभनी १२ मात्रा)

६. अट्ठारसण्हं समण-साहस्सीणं ३-१२३

७. अणुबद्धं तं चिअ कामिणीणं २-१८४

८. अत्थालोअण-तरला वगेरे १-७

'गरुडवहो' ८६.

९. अप्पणिआ पाउसे उवगयम्मि ३-५७

१०. अप्पणिआ य विअड्डि खाणिआ ३-५७ (वैतालीयनुं सम चरण)

११. अम्मो कह पारिज्जइ २-२०८

१२. अम्मो भणामि भणिए ३-४१

सरखावो : अत्ता भणामि भणिए : गा० ६७६मां 'भणिए भणामि अत्ता' (बीजा दलनी आरंभनी १२ मात्रा)नुं पाठांतर.

१३. अरे मए समं मा करेसु उवहासं २-२०१

१४. अलाहि किं वाइएण लेहेण २-१८९

१५. अव्वो किमिणं किमिणं २-२०४

१६. अव्वो तह तेण कया वगेरे २-२०४

१७. अव्वो दलंति हिअयं २-२०४

१८. अव्वो दुक्कर-कारय २.२०४ गा० २७३

१९. अव्वो न जामि छेत्तं २.२०४ गा. ८२१

(पहेला दलनी आरंभनी १२ मात्रा)

२०. अव्वो नासेंति दिहिं वगेरे २-२०४

२१. अव्वो सुपहायमिणं वगेरे २-२०४

२२. अव्वो हरंति हिअयं वगेरे २-२०४ गा. ५४१.

२३. असाहेज्ज देवासुरा १-७९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. अह कमलमुही ३–८७

२५. अह णे हिअएण हसइ मारुय–तणओ ३–८७

२५क. अह पेच्छइ रहुतणओ ४–४४७

'सेतुबन्धं २–१ (पूर्वार्धनी आरंभनी १२ मात्रा)

२६. अह मोहो पर–गुण–लहुअयाइ ३–८७

२७. अहयं कय–प्पणामो ३–१०५

२८. अहवायं कय–कज्जो ३–७३

२८क. अहो अच्छरिअं १–७

¶'रत्नावली', त्रीजा अंकमां ११मा पद्य पछी वासवदत्तानी उक्तिमां)

२९. अंकोल्ल–तेल्ल–तुप्पं १–२००

३०. अंगे चिअ न पहुप्पइ ४–६३

३१. अंतावेई १–४

३२. अंतेउरे रमिउमागओ राया ३.१३६

३३. अंतो वीसंभ–निवेसिआणं १–६०

३४. आउंटणं १–१७७

आउंटणाए (आवश्यक सूत्र, प्रतिक्रमणाध्ययन २–२०)

३४क. आभासइ रयणीअरे ४–४४७

'सेतुबन्धं ११–३४

(पाठ. 'आहासइ अ णिसिअरें : पूर्वार्धनी आरंभनी १२ मात्रां)

३५. आम बहला वणोली २–१७७.

गा० ५७८ (प्रथम दल, आरंभनी १२ मात्रा)

३६. आरण्ण कुंजरोव्व वेल्लंतो १–६६

'सेतुबन्धं ८.५९

३७. आलेट्ठुअं १–२४

३८. आहिआई १–४४

गा. २४ (अंतिम ७ मात्रा. पाठांतरो–आहिजाईए, आहियाइए, अहिजाइए)

३९. इअ जंपिआवसाणे १–९१

४०. इअराइं जाण लहुअक्खराइं पाअंतिमिल्ल सहिआण ३–१३४

'वृत्तजातिसमुच्चयं १–१३ (गाथानुं पूर्व दल)

४१. इअ विअसिअ–कुसुमसरो १–९१

४२. इअ विंझ–गुहा–निलयाए १–४२

'गरुडवहो'–३३८ (पूर्व दलनी आरंभनी १३ मात्रा)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. इमिआ वाणिअ–धूआ ३–७३

४४. इहरा निसामन्नेहि २–२१२

४५. उअ निच्चल–निप्फंदा २–२११

गा०–४ (पूर्व दलनी आरंभनी १२ मात्रा)

४६. उन्नम न अम्मि कुविआ ३–१०५

४७. उप्पज्जंते कइ–हिअअ–सायरे कव्व–रयणाइं ३–१४२.

'वज्जालग्ग', १९ (उत्तर दल)

४८. उम्मीलंति पंकयाइं ३–२७

४९. उवकुंभस्स सीअलत्तणं ३–१०

५०. उवमासु अपज्जतेम वगेरे. १–७

'गरुडवहो'–१८८

५१. उसभमजिअं च वंदे १–२४

'आवश्यक–सूत्र', चतुर्विंशतिस्तव–२

५२. ऊ कह मुणिया अहयं २–१९९

५३. ऊ किं मए भणिअं २–१९९

५४. ऊ केण न विण्णायं २–१९९

५५. ऊ निलज्ज २–१९९

५६. एअं खु हसइ २–१९८

गा० ६ (पाठांतर–उत्तर दलनी आरंभनी ६ मात्रा)

५७. एवं किल तेण सिविणए भणिआ २–१८६

५८. एवं दोण्णि पहू जिअ–लोए ३–३८

५९. एस सहाओ च्चिअ ससहरस्स ३–८५

५९क. ऐ बीहेमि १–१६९

६०. ओ अविणय–तत्तिल्ले २–२०३

६१. ओ न मए छाया इत्तिआए २–२०३

६२. ओमालयं वहइ १–३८.

गा० २–९८ (उत्तर दलनी अंतिम १० मात्रा : पाठ० ओमालियं)

६३. ओ विरएमि णहयले २–२०३

६४. कल्लं किर खर–हिअओ २–१८६

गा० ८६. (पूर्व दलनी आरंभनी १२ मात्रा)

६५. किणो धुवसि २–११६.

गा० ३६९; 'प्राकृतप्रकाश', ९–९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६६. किलित्त–कुसुमोवयारेसु १–१४५

६६क. किं उल्लावेंतीए वगेरे २–१९३

६७. किं पम्हुट्ठम्हि अहं ३–१०५

६८. कुंकुम–पिंजरयं २–१६८

६८क. केलि–पसरो विअंभइ ४–१५७

६९. को खु एसो सहस्स–सिरो २–१९८

७०. खासियं १–१८१

'आवश्यक–सूत्रं कायोत्सर्गाध्ययन

७१. खीरोओ सेसस्स व निम्मोओ २–१८२

७१क. खेडुयं कयं वगेरे ४–४२२

७२. गईए णइ २–१८४

७३. गज्जंते खे मेहा १–१८७; ३–१४२

('कविदर्पण–वृत्तिं, पृ. १६, २–१६ पूर्व दलना आरंभनी १२ मात्रा; पादलिप्तसूरिकृत गाथा.)

७३क. गामे वसामि नयरे न यामि ३–१३५

'सरस्वतीकंठाभरणं, ३–१५३

७४. गूढोअर–तामरसाणुसारिणी भमर–पंति–व्व १–६

'गउडवहो', १८८ उत्तर दल; 'गाहारयण–कोस'–९

७४क. गेण्हइ र कलम–गोवी २–२१७

७५. चउवीसं पि जिणवरा ३–१३७

पिशेल–पेरे० ३४, पृ. ३९

७६. चिरस्स मुक्का ३–१३८

७७. चिंचव्व कूर–पिक्का २–१२९

७८. ची–वंदणं १–१५१

७९. छिंछई २–१७४

गा० ३०१ : आअओ अज्ज कुलहराओ त्ति छेंछई जारं । (पाठां. छिंछई)

८०. जउँणयडं, जउँणायडं १–४

८१. जलहरो खु धूमपडलो खु २–१९८

८१क. जहिं मरगय–कंतिए संवलियं ४–३४९

८२. जं चेअ मउलणं लोअणाण २–१९४

८३. जं जं ते रोइत्था ३–१४३

८४. जाइ विसुद्धेण पहु ३–३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८५. जाइं वयणाइं अम्हे ३–२६

गा० ६५१ (पूर्व दलना आरंभनी १२ मात्रा)

८६. जाला ते वगेरे १–२६९ (जुओ क्रमांक–९८)

८७. जिण्णे भोअणमत्तेओ १–१०२

'आवश्यकसूत्रं–चूर्णि (अनुष्टुभनुं प्रथम चरण)

८८. जुम्हदम्ह–पयरणं १–२४६

८९. जेण हं विद्धा ३–१०५

९०. तद्दिअस निहट्ठाणंग २–१७४

९१. तरिउं ण हु णवर इमं २–१९८

९२. तस्स इर २–१८६

९३. तह मन्ने कोहलिए १–१७१

गा० ७६८ (उत्तर दलना आरंभनी १२ मात्रा)

९४. तं खु सिरीए रहस्सं २–१९८

९५. तं तिअस–बंदि–मोक्खं २–१७६

'सेतुबन्धं–१–१२ (आरंभनी १२ मात्रा)

९६. तं पि हु अच्छिन्न–सिरी २–१९८

९७. ताओ एआओ महिलाओ ३–८६

९८. ताला जाअंति गुणा वगेरे ३–६५

('ध्वन्यालोक' बीजो उद्योत, बीजुं उदाहरण; आनंदवर्धनकृत 'विषम बाणलीला'मांथी; 'काव्यप्रकाश'मां पण उद्धृत; गा. ९८९)

९८क. तिरिच्छि पेच्छइ २–१४३

९९. तिसु तेसु अलंकिया पुहवी ३–१३५

१००. तिस्सा मुहस्स भरिमो ३–१३८

१०१ ते च्चिअ धन्ना वगेरे २–१८४

'स्वयम्भूच्छन्दस' १–१–५; 'परमप्पपयासु' २–११७ मां उद्धृत

१०२. तेसिमेअमणाइण्णं ३–१३४

'दसवेयालिय–सुत्तं ३–१

१०३. तो णेण करयल–ट्ठिआ ३–७०

१०४. थाणुणो रेहा २–७

१०५. थू निलज्जो लोओ २–२००

१०६. दणुइंद–रुहिर–लित्तो वगेरे. १–६

(सरखावो 'सेतुबन्धं–१०२)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०७. दर विअसिअं २–२१५

१०८. दरिअ–सीहेण १–१४४

गा० १७५ ('ध्वन्यालोक' मां उद्धृत)

१०९. दासो वणे न मुच्चइ २–२०६

११०. दिअ–भूमिसु दाण–जलोल्लिआइं ३–१६

१११क. दिट्ठिक्क–थणवट्ठं १–८४

१११. दुवालसंगो १–२४४

'नंदिसुत्तं'–११५

११२क. दुस्सहो विरहो १–११५

११२. दुहावि सो सुर–वहू–सत्थो १–९७

११३. दुहिअए राम–हिअए २–१६४

११४. दे आ पसिअ निअत्तसु २–१९६

११५. दे पसिअ ताव सुंदरि २–१९६

११६. देवं–नाग–सुवण्ण १–२६

'आवश्यक–सूत्रं', श्रुतस्तव

११७. देविंदो इदमब्बवी ३–१६२

'उत्तरज्झायां', नमिपवज्जा

११८. दोण्णि वि न पहुप्पिरे बाहू ३–१४२

११९. धणस्स लद्धो ३–१३४

१२० धरणीहर पक्खुब्भंतयं २–१६४

'सेतुबन्धं' २–२४ (गलितकना बीजा चरणनी पाछळनी १५ मात्रा)

०१२१. धारा–किलिन्न–वत्तं १–१४५

'गरुडवहो', ४१० (प्रथम दलनी आरंभनी १२ मात्रा)

१२२. धीरं हरइ विसाओ १–१५५

'सेतुबन्धं' ४–२३ (पूर्वार्धनी आरंभनी १२ मात्रा)

१२२क. न उणाइ अच्छीइं २–२१७

१२३. नच्चावियाइं तेणम्ह अच्छीइं १–३३

१२४. नत्थि वणे जं न देइ विहि–परिणामो २–२०६

१२५. न मरं ३–१३४

१२६. नमिमो हर–किरायं १.१८३

'गरुडवहो', ३५ (उत्तर दलनी अंतिम ११ मात्रा)

१२६क. नयरे न जामि ३–१३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२७. नवर पिआइं चिअ निव्वडंति २–१८७

१२८. णवरि अ से रुहवइणा २–१८८

'सेतुबन्धं', १५–७९ (पाठ० : सो. पूर्वार्धनी आरंभनी १२ मात्रा)

१२९. णवि हा वणे २–१७८

१३०. न वेरि–वग्गे वि अवयासो १–६

'गरुडवहो'– २२० (उत्तरदलनी अंतिम १५ मात्रा)

१३१. न हु णवरं संगहिआ २–१९८

१३२. निअंब–सिल–खलिअ–वीइ–मालस्स १–४

१३३. निएइ कह सो सुकम्माणे ३–५६

१३४. निज्जिआसोअ–पल्लविल्लेण २–१६४

१३५. निट्ठुरो जं सि ३–१४६

१३६. निसमणुप्पिअ–हिअस्स हिअयं १–२६९

१३६क. निस्सहाइं अंगाइं १–९३

१३७. नीलुप्पल–माला इव २–१८२

१३७क. नीसासूसासा १–९

१३८. पणवह माणस्स हला २–१९५

गा० ८९३ (पूर्वदलनी आरंभनी १२ मात्रा)

१३९. परदुक्खे दुक्खिआ विरला २–७२

(उत्तर दलनी अंतिम १५ मात्रा)

१४०. परिअड्ढइ लायण्णं ४–२२०

१४१. पहीण जरमरणा १–१०३.

'आवश्यक सूत्र,' चतुर्विंशतिस्तव ५ (पूर्व दलनी अंतिम १० मात्रा)

१४२. पंथं किर देसित्ता १–८८

'आवश्यक–निर्युक्ति' १४६

१४३. पिअ–वयंसो हिर २–१८६

१४४. पिट्ठि–परिट्ठविअं १–१२९

१४५. पिट्ठिए केस–भारो ३–१३४

१४६. पुन्नामाइं वसंते १–१९०

१४७. बले पुरिसो धणंजओ खत्तिआणं २–१८५

१४८. बले सीहो २–१८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४९. बहु–जाणय रुसिउं सक्कं ३–१४१

१५०. बंधेउं कुज्जय–पसूणं १–१८१

१५१. बाह–सलिल–पवहेण उल्लेइ १–८२

गा० ५४१ (पाठा० णिवहेण ओल्लेइ : उत्तरदलनी अंतिम १७ मात्रा)

१५१क. बिसतंतु–पेलवाणं १–२३८

१५२. बीहंते रक्खसाणं च ३–१४२

१५२क. भणिअं च णाए ३–७०

१५३. भमर–रुअं जेण कमल–वणं २–१८३

१५४. भमररुअं तेण कमल–वणं २–१८३.

१५५. भुआ–यंतं, भुअ–यंतं १–४

१५६. भोच्चा सयलं पिच्छिं वगेरे

'शान्तिनाथचरित्र'मांथी

१५७. मइ वेविरीए मलियाइं ३–१३५

१५८. मउअत्तयाइ २–१७२

१५९. मलय–सिहर–खंडं २–९७

१६०. महण्णव–समा सहिआ १–२६९

१६१. मह पिउल्ला ओ २–१६४

१६२. महमहइ मालई ४–७८

१६३. महमहिअ–दसण–किसरं १–१४६

१६३क. महुरे–व्व पाडलिउत्ते पासाया २–१५०

१६४. मंदरयड–परिघट्ठं २–१७४

१६५. माइं काहीअ रोसं २–१९१

१६६. मामि सरिसक्खराण–वि २–१९५

गा० ८५० (प्रथम दलनी आरंभनी १२ मात्रा)

१६७. मुद्ध–विअइल्ल–पसूण–पुंजा १–१६६

'कर्पूरमंजरी', १–१९ : वसंततिलकाना छेल्ला चरणना अंतिम ११ अक्षर

१६८. रे हिअय मडह–सरिआ २–२०१

गा० १०५ (प्रथम दलनी आरंभनी १२ मात्रा)

१६९. लज्जालुइणी २–१७४

गा. १२७ (प्रथम दलनी आरंभनी १२ मात्रा : अहअं लज्जालुइणी)

१७०. लोगस्सुज्जोअगरा १–१७७

'आवश्यक सूत्र', चतुर्विंशति–स्तव १

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१७१. वक्कंतरेसु अ पुणो २–१७४

१७२. वच्छेहिं कया छाही ३–७.

१७३. वड्ढइ पवय–कलयलो ४–२२०

१७४. वणे देमि २–२०६

१७५. वहुआइ नहुल्लिहणे वगेरे.

वहुआइ नहुल्लिहणे आबंधंतीए कंचुअं अंगे ।
मयरध्दय–सर–धोरणि–धारा–छेअ–व्व दीसंति ॥

१७६. वंदामि अज्ज–वइरं १–६

'नंदिसूत्रं

१७७. वंदे उसभं अजिअं १–२४

१७८. वामेअरो बाहू १–३६

१७९. वारीमई, वारिमई १–४

'लीलावई–कहा'–४२३ (उत्तरदल) : ससिमणि–घडिया वाउल्लिय–व्व वारीमई जाया; 'गाहारयणकोस'–३२९: पाठा० सा तस्स)

२।२० दिट्ठीए तस्स ससहर –कर–सलिल झलझला सलोणाए
बाला ससिमणि–धीउल्लिय–व्व सेउल्लिया जाया ॥
(सुभासिय–पज्जसंगहो, ३)

१८०. वासेसी १–५

१८१. विअड–चवेडा–विणोआ १–१४६

१८२. विद्ध–कइ–निरूविअं २–४०

सरखावो 'वृत्तजातिसमुच्चय', २, ८ : वुड्ढ–कइ–निरूवियं

१८३. विसयं विअसंति अप्पणो कमल–सरा २–२०९

१८४. विससिज्जंत महा–पसु वगेरे १–८

'गरुडवहो' ३१९

१८५. विहवेहिं गुणाइं मग्गंति १–३४

'गरुडवहो', ८६६ (पाठ० : विहवाहि गुणे विमग्गंति : उत्तरदलनी अंतिम १५ मात्रा)

१८६. वेलूवणं, वेलुवणं १–४

१८७. वेव्व गोले २–१९४

१८८. वेव्वे त्ति भए वगेरे २–१९३

१८९. वेव्वे मुरंदले वहसि पाणिअं २–१९४.

१९०. वोदह–दहम्मि पडिआ २–८०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते च्चिअ सुहआ ते च्चिअ, सप्पुरिसा ते जिअंत जिअलोए ।
वोदहि–दहम्मि पडिआ, तरंति जे श्चेअ हेलाए ॥
('स्वयम्भूच्छन्दस्', पूर्वभाग १–१–५; विदग्ध–कवि–कृत)

आ गाथा 'परमप्पपयासु' मां उद्धृत करेल छे (२–१२७). त्यांना पाठांतर : ते च्चिय धन्ना; ते जियंतु, वोद्दह–दहम्मि; लीलाए.

'छन्दोनुशासन'मां पण (१–७–६)मां, लघु अक्षर पछी 'ह्' आवे त्यारे प्राकृत छन्दमां ते गुरु नथी थतो तेनां बे उदाहरण आपेलां छे. 'वोदह–दहम्मि पडिआ', अने 'कुवलय खित्त दहिं'. आमांथी पहेला उदाहरण उपरना 'पर्याय–टिप्पण'मां पूरां पद्यो आपेलां छे. तेमांथी उपर्युक्त गाथानां पाठांतर : ते च्चिअ पंडिआ ते जयंति; 'लीलाए'. वळी 'वोदहदहम्मि'नो अर्थ 'ग्रामीण–तरुण–समूह–ह्रदे' ए प्रमाणे आप्यो छे. परंतु 'वोदहि' पाठ वधु सारो छे. बीजा पद्यनो 'पर्याय–टिप्पण' मां आपेलो पाठ घणे स्थाने भ्रष्ट छे. तेना शुद्ध पाठ माटे जुओ वा. म. कुलकर्णी PRAKRIT VERSES IN SANSKRIT WORKS ON POETICS भाग–१, मां शुद्ध करेल अपभ्रंश उदाहरणोनी सूचि, परिशिष्ट–१, क्रमांक–४१. ए पद्य भोजकृत 'सरस्वतीकंठाभरण' तथा 'शृंगारप्रकाश'मां उदधृत थयेल छे. पण बंने स्थळे 'दहिं' ने बदले हस्तप्रतोमां 'दहिं' –एम र–कार वगरनो पाठ मळे छे. मूळ पाठ 'छन्दोनुशासन'मां सचवायो छे.

'शृंगारप्रकाश' पृ. ८९३ उपर उद्धृत एक गाथामां पण 'वोदह' शब्द मळे छे.
गामे वोदह–पउरम्मि (कुलकर्णीनुं उपर्युक्त पुस्तक, २, पृ. ४३७, क्रमांक, ३०)

१९१. सच्च य रूवेण सच्च य सीलेण २–१८४
१९१क. सणियमवगूढो २–१६८
१९२. सत्तावीसा १–४
१९२क. सद्दहमाणो जीवो ४–९
१९३. सभिक्खु १–११
'उत्तरज्झाया–सुत्तं', अध्ययन १५
१९४. सयं चेअ गुणसि करणिज्जं २–२०९
गा० ८५१ (उत्तरदल अंतिम १५ मात्रा)
१९४क. सव्वस्स वि एस गइ ३–८५
१९५. सव्वंग–सिज्जिरीए ४–२२४
१९५क. सहि एरिसि च्चिअ गई २–१९५.
गा० १० (प्रथम दल, आरंभनी १२ मात्रा)
१९६. साऊअयं १–५
१९७. सालाहणी भासा १–२११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९८. सिक्खंतु वोदहीओ २–८०

गा० ३९२ (उत्तरदल, आरंभनी १२ मात्रा)

१९९. सीमाधरस्स वंदे ३–१७४

'आवश्यक-सूत्रं, श्रुतस्तव–२

२००. सुअ–लक्खणाणुसारेण २–१७४

२०१. सुरहि–जलेण कडुएल्लं २–१५५

२०१क. सुंदर–सव्वंगाउ विलासिणीओ पेच्छंताण ४–१३८

२०२. सूरिसो १०८

२०३. सूसइरे गाम–चिक्खल्लो ३–१४२

२०४. सोअइ अ णं रहुवई ३–७०

'सेतुबन्ध', १–४१ (पूर्वार्धना आरंभनी १२ मात्रा)

२०४क. सोसउ म सोसउ वगेरे ४–३६५

२०५. हत्थुन्नामिअ – मुही णं (भणइ) तिअडा ३–७०

'सेतुबन्ध'–११–८७ (उत्तरार्धनी अंतिम २० मात्रा)

०२०६. हयं नाणं किया–हीणं २–१०४

'आवश्यक–निर्युक्ति', १०१ (अनुष्टुभ्नुं प्रथम चरण)

२०७. हरए मह–पुंडरिए २–१२०

२०८. हरस्स एगा गाई १–१५८

२०९. हरिण–ट्ठाणे हरिणंक वगेरे ३– १८०

'गाहारयणकोस', ५५२:

२।२० ससहर हंरिण–ट्ठाणि जइ, सीह–सिलिंबु धरंतु । ता दुक्करु तुह राहु जइ, माणुम्मलणु करंतु ।; 'सुभासियगाहा–संगहो', ८८

२१०. हरे निल्लज्ज २–२०२

२११. हरे बहु–वल्लह २–२०२

२१२. हले हयासस्स २–१९५

गा० ४३० : हला हयासस्स : पूर्वदलनी अंतिम ९ मात्रा)

२१३. हंद पलोएसु इमं २–१८१

गा० २०० (पाठा० गेण्हह/गिण्हइ/गेण्ह; हंद, हंदि, पलोअह)

२१४. हंदि चलणे णओ वगेरे. २–१८०

हंदि चलणे णओ सो ण माणिओ हंदि [illegible] एत्ताहे ।
हंदि न होही भणिरी सा सिज्जइ हंदि तुह कज्जे ॥

२१५. हासाविओ जणो सामलीए ३–१५३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गा० १२३ (पूर्वदलनी आरंभनी १६ मात्रा)

२१६. हिअए ठाइ १–१९९

२१७. हुं गेण्ह अप्पणो च्चिअ २–१९७.
('प्राकृतप्रकाशं ९–२)

२१८. हुं निलज्ज समोसर २–१९७
गा० ९४६ (पूर्वदलनी आरंभनी १२ मात्रा)

२१९. हुं साहसु सब्भावं २–१९७
गा० ४५३ पाठ० : सहि साहसु सब्भावेण / सब्भावं)
('प्राकृतप्रकाशं, ९–२)

२२०. हेट्ठ–ट्ठिअ–सूर–निवारणाय वगेरे. ४–४४८
'गउउवहों, १५.

२२१. होइ वणे न होइ २–२०६

शौरसेनी (८–४–२६०थी २८६)

०२११. अनंत–करणीयं दाणिं आणवेदु अय्यो २७७
('अभिज्ञान–शाकुन्तलं, पहेलो अंक)

२२२. अपुरवं नाडयं २७०
'अभिज्ञान–शाकुन्तलं, पहेलो अंक, प्रस्तावनामां पद्य चोथो
पछीना नटीना संवादमां)

२२३. अम्महे एआए सुम्मिलाए सुपलिगढिदो भवं २८४

२२४. अय्यउत्त पय्याकुलीकदम्हि २६६

२२५. असंभाविद–सक्कारं २६०
'अभिज्ञान–शाकुन्तलं, पहेलो अंक, ३०मा पद्य पछी चोथो संवाद;
पाठभेद : अदिहि–सक्कारं ।)

२२६. एदु भवं २६५

२२७. कयवं करेमि काहं च २६५

२२८. किं एत्थभवं हिदएण चिंतेदि २६५

२२९. जुत्तं णिमं २७९

२३०. णं अफलोदया २८३

२३१. णं अय्यमिस्सेहिं पुढमं य्येव आणत्तं २८३
'अभिज्ञान–शाकुन्तलं, पहेला अंकमा

२३२. णं भवं मे अग्गदो चलदि २८३
'अभिज्ञान–शाकुन्तलं, बीजा अंकमां

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२३३. तदो पूं द–पदिज्जेण मारुदिणा मंतिदो २६०
२३४. तधा करेध जधा तस्स राइणो अणुकंपणिआ भोमि २६०
२३५. ता अलं एदिणा माणेण २७८
२३६. ता जाव पविसामि २७८
२३७. नमोत्थुणं २८३ (आर्षे)
२३८. पंजलिदो भयवं हुदासणो २६५
२३९. भयवं कुसुमाउह २६४
('रत्नावली', बीजो अंक, सातमो सागरिकानो संवाद)
२४०. भयवं तित्थं पवत्तेह २६४
२४१. मघवं पागसासणे २६५
२४२. मम य्येव वंभणस्स २८०
२४३. समणे भयवं महावीरे २६५
'कल्पसूत्र' १
२४४. सयल–लोअ–अंतेआरि भयवं हुदवह २६४
२४५. संपाइअवं सीसो २६५
२४६. सो य्येव एसो २८०
२४७. हला सउंतले २६०
'अभिज्ञान–शाकुन्तल', पहेला अंकमांथी.
२४८. हंजे चदुरिके २८१
२४९. हीमाणहे जीवंत–वच्छा मे जणणी २८२
'उदात्तराघव'मांथी
२५०. हीमाणहे पलिस्संता हगे एदेण निय–विधिणो २८२
२५१. दुव्वसिदेण २८२
'विक्रान्तभीम'मांथी
२५२. हीही भो संपन्ना मनोरथा पिय–वयस्सस्स २८५

मागधी (८–४–२८७ थी ३०२)

२५३. अमच्च–ल=कशं पिक्खिदुं इदो य्येव आगश्चदि ।
'मुद्राराक्षस', चोथो अंक, चोथा पद्य पछीना बीजा संवादमां
२५४. अम्महे एआए शुम्मिलाए शुपलिगढिदे भवं ३०२ (= २८४)
२५५. अय्य एशे खु कुमाले मलयकेदू ३०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५६. अय्य किल विय्याहलं आगदे २९२
'मुद्राराक्षस', चोथो अंक, चोथा पद्य पछी बीजो संवाद
२५७. अले किं एशे महंदे कलयले ३०२
'वेणीसंहार' त्रीजो अंक, त्रीजा पद्य पछी सोळमो संवाद)
२५८. अले किं एशे महंदे कलयले शुणीअदे ३०२
'वेणीसंहार' त्रीजा अंकना प्रवेशकमां.
२५९. अले कुंभिला कधेहि ३०२
'अभिज्ञान शाकुन्तल'मांथी
२६०. अहंपि भागुलायणादो मुद्दं पावेमि ३०२
'मुद्राराक्षस' पांचमो अंक, प्रवेशकनी अंतिम पंक्ति
२६१. अहिमञ्जु-कुमाले ३०२
२६२. आपन्न-वश्चले २९५
२६३. एशे पुलिशे २८७
२६४. एशे मेशे (२८७)
२६५. ओशलध अय्या ओशलध ३०२
'मुद्राराक्षस', चोथो अंक, चोथा पद्यनी पहेलां
२६६. कयरे आगच्छइ २८७
२६७. करेमि भंते २८७
२६८. कं खु शोभणे बम्हणे शि त्ति कलिय लज्जा पलिग्गहे दिण्णे ३०२
'अभिज्ञान-शाकुन्तल', छट्ठो अंक, पृ. १८२
२६९. खय-यलहला २९६
२७०. गिम्ह-वाशले २८९
२७१. णं अवशलोपशप्पणीया लायाणो ३०२
'अभिज्ञान-शाकुन्तल', छट्ठो अंक, पृ. १८५
२७२. ता कहिं नु गदं लुहिलप्पिए भविस्सदि ३०२
'वेणीसंहार', पहेलो अंक, पहेला पद्य पछी त्रीजो संवाद.
२७२क. ता याव पविशामि ३०२
२७३. पज्जा-विशालं २९३
२७४. पविशदु आवुत्ते शामि-पशादाय ३०२
'अभिज्ञान-शाकुन्तल'मांथी
२७५. पोराणमद्ध-मागह-भासा-नियय हवइ सुत्तं २८७
२७६. प्रक्खलदि हस्ती २८९
२७७. भगदत्त-शोणिदाह कुंभे २९९
'वेणीसंहार', त्रीजो अंक, त्रीजा पद्य पछी ९मो संवाद

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७८. भयवं कदंते ये अप्पणो प=कं उज्झिय पलस्स प=कं पमाणीकलेशी ३०२
'मुद्राराक्षस' चोथो अंक, २१मा पद्य पछीनो छट्ठो संवाद

२७९. भीमशेणस्स पश्चादो हिंडोयदि २९९
'वेणीसंहार', त्रीजो अंक, त्रीजा पद्य पछीनो १३मो संवाद

२८०. भो कंचुइआ ३०२

२८१. मालेध वा धलेध वा अयं दाव शे आगमे ३०२

२८२. युत्तं णिमं ३०२

२८३. लहश–वश–नमिल–शुल–शिल–विअलिद–मंदाल–लायिदंहि–युगे ।
वील–यिणे पक्खालदु मम शयलमवय्य–यंबालं ॥ २८८

२८४. शमणे भयवं महावीले ३०२

२८५. शयणाहँ सुहं ३००

२८६. शलिशं णिदं ३०२

२८७. शस्प–कवले २८९

२८८. शुणध दाणिं हगे शक्कावयाल–तिस्त–णिवाशी–धीवले ३०२, ३०१
'अभिज्ञान–शाकुन्तल', छट्ठो अंक, प्रवेशक, बीजो संवाद, चोथो संवाद

२८९. शुस्क–दालुं २८९

२९०. शुस्टु कदं २९०

२९१. से तारिसे दुक्खसहे जिइंदिए २८७
'दशवैकालिक सूत्र, अध्ययन ८, गा० ६३, प्रथम चरण

२९२. हगे न एलिशाह कम्माह काली २९९

२९३. 'हगे शक्कावयाल' वगेरे (= ३०२)

२९४. हगे चदुलिके ३०२

२९५. हिडिंबाए धडुक्कय–शोके ण उवशमदि । २९९
'वेणीसंहार', त्रीजो अंक, त्रीजा पद्य पछीनो पांचमो संवाद

२९६. हीमाणहे जीवंत/वश्चा मे जणणी ३०२
'उदात्तराघव' : राक्षसनी उक्ति

२९७. हीमाणहे पलिस्संता हगे एदेण–णिय–विधिणो दुव्ववशिदेण ३०२
'विक्रान्तभीम' : राक्षसनी उक्ति

२९८. हीही संपन्ना मे मणोलधा पिय–वयस्सस्स ३०२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९९. अध स-सरीरो भगवं मकरधजो एत्थ परिब्भमंतो हुवेय्य ३२३
आ पैशाची 'वृहत्कथा'मांथी होवानी अटकळ करी शकाय.
सरखावो : तौ च दृष्ट्वा तमुत्थाय, प्रह्वौ मदन-शङ्कया ।
अवोचतां नमस्तुभ्यं, भगवन् कुसुमायुध ॥
('कथासरित्सागर', १३, १०४, १२)

३००. एवं चिंतयमानो गतो सो ताए समीपं ३२२

३०१. एवंविधाए भगवतीए कधं तापस-वेस-गहनं-कतं ३२३

३०२. एतिसं अतिट्ठ-पुरवं महाधनं तद्धून ३२३

३०३. किंपि किंपि हितपके अत्थं चिंतयमानी ३१०

३०४. तत्थ च नेन कत-सिनानेन ३२२

३०५. तं तद्धून चिंतितं रञ्ञा का एसा हुवेय्य ३२०

३०६. ताव च तीए तूरातो य्येव तिड्ठो सो आगच्छमानो राजा ३२३

३०७. पुधुमतंसने सव्वस्स य्येव संमानं कीरते ३१६

३०८. पूजितो च नाए पातग्ग-कुसुम-प्पतानेन ३२२

३०९. भगवं यति मं वरं यच्छसि राजं च दाव लोके ३२३

३१०. मकरकेतू ३२४

३११. मतन-परवसो ३०७

३१२. राचिञ्ञा लपितं ३०८

३१३. सगर-पुत्त-वचनं ३२४

३१४. वतनके वतनक समप्पेतून २.२६४

३१५. विजयसेनेन लपितं ३२४
सरखावो : सुहृद् विजयसेनो मां सप्रहर्षोऽब्रवीदिदम् ।
('कथासरित्सागरं', १३, १०४, ३६)

चूलिका-पैशाचिक (८-४-३२५ थी ३२८)

३१६. पनमथ पनय-पकुप्पित-गोली-चलनग्ग-लग्ग-पतिबिंब ।
तससु नख-तप्पनेसुं एकातस-तनु-थलं लुद्दं ।।
नच्चंतस्स य लीला-पातुक्खेवेन कंपिता वसुधा ।
उच्छल्लंति समद्द सइला निपतंति तं हलं नमथ ।। ३२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आ बंने गाथाओ 'गाथामुक्तावली' मां उद्धृत; भोजकृत 'सरस्वती कंठाभरण' मां पहेली उद्धृत (२-४). गाथा मु०मां पाठांतर : 'पनअ-प्पकुपित'; 'कोली'; 'पटिबिंबं'. 'सरस्वतीकंठाभरण' उपरनी आजडनी टीकामां पहेली गाथा गुणाढ्यनी 'बृहत्कथा' (= 'वड्डकहा')ना मंगळाचरणनी गाथा होवानुं जणाव्युं छे. बीजी गाथा पण ते ज संदर्भनी होवाथी तेमांथी होवानो घणो संभव छे. 'बृहत्कथा'नी भाषा पैशाची होवानुं जाणीतुं छे. परंतु हेमचंद्राचार्य पासे जे परंपरा हती ते अनुसार ते पैशाचीनो एक प्रकार-'चूलिकापैशाचिक' के चूलिकापैशाची छे.

परिशिष्ट

नित्ती-दोल्चीए पोताना प्राकृत व्याकरणकारो विषेना पुस्तकमां नमिसाधुना टिप्पणमां आपेल प्राकृत व्याकरणनो सार अने सिद्धहेमनो प्राकृत विभाग - ए बेमां जे समान सूत्रो अने उदाहरणो मळे छे तेनी जे सूची आपी छे, ते अहीं नीचे रजू करी छे.

मागधी

नमिसाधु	हेमचंद्र
१. रसयोर् ल-शो मागधिकायाम् । (रेफस्य लकारो दन्त्य-सकारस्य तालव्य-शकारः)	रसोर् ल-शौ (२८८) (मागध्यां रेफस्य दन्त्य-सकारस्य च स्थाने तालव्य-शकारः । यथासंख्यं लकारस्तालव्य-शकारश्च भवति ।)
२. एत्वमकारस्य सौ पुंसि । (एसो पुरिसो : एशे पुलिशे । पुंस्येवैत्वम् : तं शलिलं)	अत एत्सौ पुंसि मागध्याम् (२८७) (एशे पुलिशे । पुंसीति किम् : जलं ।)
३. अहं वयमोर् हगे आदेशः । (हगे शंपत्ते । हगे शंपत्ता ।)	अहं वयमोर् हगे । (३०१) (हगे शंपत्ता)
४. जद्ययोर् यकारो भवति । यस्य च । (याणदि । याणावदि । मय्यं । विय्याहले ।)	ज-द्य-यां यः (२९२) (याणदि । यणवदे । मय्यं । अय्य किल विय्याहले आगदे)
५. क्षस्य स्कोऽनादौ । (यश्के । लश्क-शे ।	क्षस्य=कः । (२९६) (मागध्यामनादौ वर्तमानस्य क्षस्य=को

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनादावित्येव । क्षय–जलधर :
खय–यलहले इति न स्यात् ।)

जिह्वामूलीयो भवति ।
य=के । ल=कशे । अनादावित्येव ।
खय–यलहला । क्षयजलधरा इत्यर्थः।)

६. स्कः प्रेक्षाचक्ष्योः ।
(प्रेक्षाचक्ष्योर् धात्वोः क्षस्य स्कादेशः।
पेस्कदि । आचस्कदि ।)

स्कः प्रेक्षाचक्षोः । (२९७)
(मागध्यां प्रेक्षेराचक्षेश्च क्षस्य सकाराक्रान्तः
को भवति । जिह्वामूलीयापवादः ।
पेस्कदि । आचस्कदि ।)

७. छस्य श्चो भवति ।
(पिश्चिले । आवण्णवश्चले ।)

छस्य श्चोऽनादौ (२९५)
(पिश्चिले । लाक्षणिकस्यापि ।
आपन्नवत्सलः– आवन्नवश्चले)

८. सषो : संयोगस्थयोस्तालव्य–शकारः ।
(विश्नू । विहश्पदि । काश्यगालं ।)

सषोः संयोगे सोऽग्रीष्मे ।(२८९)
(मागध्यां सकार–षकारयोः संयोगे वर्तमानयोः
सो भवति । ग्रीष्मशब्दे तु न भवति ।
ऊर्ध्वलोपाद्यपवादः॥ बुहस्पदी । विस्नु ।)

९. अर्थस्थयोः स्थस्य स्तादेशः ।
(एशे अस्ते । एषोऽर्थ ।)

स्थ–र्थयोस्तः । (२९१)
(उवस्तिदे । अस्तवदी । शस्तवाहे)

१०. ञ्ञ–ण्य–न्य–व्रजिनां ञो भवति ।
अञ्जलि। अञ्जलिः। पुञ्ञकम्मे ।
पुण्यकर्मा । पुञ्ञाहं । पुण्याहम् ।
अहिमञ्ञु । अभिमन्युः। कञ्ञका ।
कन्यका । व्रजेः कृतादेशस्य । वच्चइ
(? वच्चदि) ॥ वञ्ञइ –

न्य–ण्य–ज्ञ–ञ्जां ञ्ञः । (२९३)
व्रजोः जः । (२९४)
मागध्यां न्य–ण्य–ज्ञ–ञ्ञ
इत्येतेषां द्विरुक्तो ञो भवति ॥
अहिममञ्ञु–कुमाले । कञ्ञका वलणं
। पुञ्ञवंते । पुञ्ञाहं । शव्वञ्ञे ।
अञ्जली । वञ्ञदि ।)

११. तस्य दकारोऽन्ते ।

तो दोऽनादौ शौरसेन्यामयुक्तस्य ।
(२६०)
('शेषं शौरसेनीवत् । ३०२नी नीचे)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नमिसाधु	हेमचंद्र
अस्व-संयोगस्थानादौ तस्य दो भवति। (तदो । दीसदि । होदि । अंतरिदं । अस्व संयोगस्येति किम् ? मत्तो पसुत्तो । स्व-ग्रहणात् – निच्चिंदो । अंदेउरं इति स्यादेव । अनादावित्येव । तेन तदेत्यादौ न भवति ।)	तो दोऽनादौ शौरसेन्यामयुक्तस्य । (२६०) अधः क्वचित् । (२६१) (अनादौ वर्तमानस्य तकारस्य दकारो भवति न चेदसौ वर्णान्तरेण संयुक्तो भवति । एदाहि । एदाओ । अनादाविति किम् । अयुक्तस्येति किम् । मत्तो । अय्यउत्तो। हला सउंतले ॥ महंदो । निश्चिंदो । अंदेउरं ।)
र्यस्य य्यो भवति । यथालक्ष्यम् । (अय्यउत्त पय्याकुलीकदम्हि । यथालक्ष्यमित्येव । तेन कय्य-परवसो वज्ज-कज्ज-इत्यादौ न भवति ।)	न वा र्यो य्य : । (२६६) (शौरसेन्यां र्यस्य स्थाने य्यो वा भवति । अय्यउत्त पय्याकुली कदम्हि । पक्षे । अज्जो । पज्जाउलो । कज्ज-परवसो ।)
इह-थ-धानां धो वा भवति । (इध । होध । परित्तायध । पक्षे । इह । होह । परित्तायह ।)	थो धः । (२६७) । इह-हचोर् हस्य । (२६८) इध । होध । परित्तायध । पक्षे-इह । होह । परित्तायह ।)
४. पूर्वस्य पुरवो वा । (न कोवि अपुरवो । पक्षे अपुव्वं पदं।)	पूर्वस्य पुरवः । (२७०) (अपुरवं नाडयं । अपुरवागदं । पक्षे-अपुव्वं पदं । अपुव्वागदं ।)
५. कदुय करिय । गदुय गच्छिय । इति क्त्वान्तस्यादेशः ।	क्त्व इय-दूणौ । (२७१) (भविय । भोदूण । हविय । होदूण । पढिय । पढिदूण । रमिय । रंदूण ।)
६. एदु भयवं । जयदु भवं । तथा आमन्त्रणे भयवं	मो वा । (२६८) (शौरसेन्यामामन्त्र्ये सौ परे नकारस्य मो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुसुमाउह इत्यादि ।	वा भवति । भो रायं । भयवं कुसुमाउह भयवं तित्थं पवत्तेह ।)
७. इनः आ वा । भो कंचुइया । अतश्च भो वयस्सा । भो वयस्स ।)	आ आमन्त्र्ये वेनो नः । (२६३) (भो कंचुइआ । भो सुहिआ । पक्षे भो तवस्सि । भो मणस्सि ।)
८. इ–लोप इदानीमि । किं दाणिं करिस्सं । निलज्जो दाणिं सो जणो ।	इदानीमो दाणिं । (२७७) अनंतर–करणीयं दाणिं आणवेदु अय्यो
९. अन्त्यनियमादि–(?अन्त्यादमादि–) देतोर् णो भवति । (जुत्तं णिमं । किं णिमं । एवं णेदं ।)	मोऽन्त्याण्णो वेदेतोः । (२७९) (जुत्तं णिमं । सरिसं णिमं । किं णेदं एवं णेदं ।)
१०. तदस् ता भवति । (ता जाव पविसामि)	तस्मात् ताः । (२७८) (ता जाव पविसामि । ता अलं एदिणा माणेण ।)
११. एवार्थे य्येव । (मम य्येव एकस्स ।)	एवार्थे य्येव । (२८०) मम य्येव बंभणस्स । सो य्येव एसो ।)
१२. हंजे चेटयाह्वाने । (हंजे चतुरिए।)	हंजे चेटयाह्वाने । (२८१) (हंजे चदुरिके ।)
१३. हीमाणहे निर्वेद–विस्मययोर् निपातः । (हीमाणहे पलिस्संता हगे एदिणा नियविहिणो दुव्विलसिदेण । हीमाणहे जीवंत–वच्छा मे जणणी ।)	हीमाणहे विस्मय–निर्वेदे। (२८२) (हीमाणहे जीवंत–वच्छा मे जणणी हीमाणहे पलिस्संता हगे एदेण निय–विधिणो दुव्ववसिदेण ।)
१४. णं निपातो नन्वर्थे । (णं भणामि ।)	णं नन्वर्थे । (२८३)
१५. अम्महे हर्षे निपातः ।	अम्महे हर्षे । (२८४)
१६. हीही भो विदूषकाणां हर्षे ।	हीही विदूषकस्य । (२८५)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(हीही इति निपातो विदूषकाणां हर्षे द्योत्ये प्रयोक्तव्यः । हीही भो संपन्ना मणोरधा पिय–वयस्सस्स ।)

१७. शेषं प्राकृतसमं दृष्टव्यम् । शेषं प्राकृतवत् । (२८६)

पैशाची

नमिसाधु	हेमचंद्र
१. णनोर् नकारः पैशाचिक्याम् । (आगंनू । नय । नमति ।)	णो नः । (३०६) (गुन–गन–युतो । गुनेन)
२. दस्य वा तकारः । (वतनं : वदनम् ।)	तदोस्तः (३०७) (भगवती : फक्कवती । पव्वती । सतं । मतन–परवसो । तामोतरो । वतनकं ।
३. टस्य न डकारः । (पाटलिपुत्रं ।)	न क–ग–च–जादि–षट्शम्यन्त –सूत्रोक्तम् । (३०९)
४. पस्य न वकारः । (पदीपो । अनेकपो ।)	
५. क–ग–च–ज–द–प–य–वानां अनादौ यथाप्रयोगं लोपः स्वर–शेषता च न कर्तव्या । (आकासं । मिगंको । वचनं । रजतं । वितानं । मदनो । सुपुरिसो । दयालू । लावण्णं । सुको । सुभगो । सूची । गजो । नदी ।)	
६. ख–ध–थ–ध–फ–भानां हो न भवति । (मुखं । मेघो । रथो । विद्याधरो । विफलं । सभा ।)	
७. थ–ठयोर् ढोऽपि न भवति । (पथमं । पुथुवि । मठो । कमठो ।	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. ज्ञस्य ञो भवति ।	ज्ञो ञ्ञः पैशाच्याम् । (३०३)
(यञकोसलं राजा लपितं)	(पञ्ञा । सञ्ञा । सव्वञ्ञो । ञानं । विञ्ञानं ।) राज्ञो वा चिञ् । (३०८) राचिञा लपितं । रञ्ञा लपितं । राचिञो धनं । रञ्ञो धनं ।)
९. हृदये यस्य पः ।	हृदये यस्य पः । (३१०)
(हितपकं ।)	(हितपकं । किंपि किंपि हितपके अत्थं चिंतयमानी ।)

१०. सर्वत्र तकारो न विक्रियते ।
(एति बिंबं (?) ।)

निष्कर्ष

'सिद्धहेम'ना आठमा अध्याय गत सामान्य प्राकृत, शौरसेनी अने मागधीने लगतां उदाहरणोमांथी जे ओळखी बताव्यां छे तने आधारे केटलांक तारणो काढी शकाय छे.

सामान्य प्राकृत माटेनां उदाहरणो मुख्यत्वे 'गाथासप्तशती', 'सेतुबन्ध' अने 'गउडवहो'मांथी, 'वज्जलग्ग', 'वृत्तजातिसमुच्चय', 'लीलावईकहा', 'विषमबाणलीला', 'शान्तिनाथचरित्र' जेवा ग्रंथोमांथी के 'स्वयंभूछंद' अने 'प्राकृतप्रकाश'मां टांकेलां उदाहरणो परथी लेवायां छे.

शौरसेनीनां उदाहरणो 'शाकुन्तल', 'रत्नावली', 'कर्पूरमंजरी', 'विक्रान्तभीम' जेवां नाटकोमांथी, तो मागधीना 'शाकुन्तल', 'मुदाराक्षस', 'वेणीसंहार', 'विक्रान्तभीम', 'उदात्तराघव' जेवां नाटकोमांथी लेवायां छे.

मुख्य प्राकृत विभागमां आर्षप्रयोग तरीके नोंधेलां उदाहरणो 'दशवैकालिक', 'उत्तराध्ययन', 'नंदिसूत्र', 'आवश्यकसूत्र'नां विविध अध्ययनो के विभागो, 'आवश्यक-निर्युक्ति' अने 'आवश्य-चूर्णि'मांथी लेवायां छे.

शौरसेनी विभागमां 'कल्पसूत्र'मांथी अने मागधी विभागमां 'दशवैकालिक'मांथी आर्ष उदाहरण आपेल छे. प्राकृत विभागमां आपेल आर्ष उदाहरणो सामान्य प्राकृतनां शब्दो अने रूपो उपरांत वपरायेला होवानुं 'अपि' द्वारा दर्शाव्युं छे.

मागधीना निरूपणना आरंभे ज हेमचंद्राचार्ये स्पष्ट कर्युं छे के आगमसूत्रोनी भाषा अर्धमागधी होवानुं वृध्धो ए जे कह्युं छे ते मुख्यत्वे तो अकारान्त-नामोनी प्रथमा विभक्तिना एकवचनमां रूप एकारान्त होय छे ए लक्षण पूरतुं ज समजवुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बळी सामान्य प्राकृतना निरूपणमां आरंभे ज हेमचंद्राचार्ये स्पष्ट कह्युं छे के आर्ष प्राकृतमां आगळ उपर जे नियम अपाशे ते बधा विकल्पे प्रवर्तता होवानुं समजवुं.

आनुं तात्पर्य एवुं समजी शकाय छे के हेमचंद्राचार्यनी पासे जे आगमग्रंथोनी हस्तप्रतो हती तेनी भाषामां सामान्य प्राकृतनां, शौरसेनीनां अने मागधीनां जे विशिष्ट लक्षणो व्याकरणकारोए मान्यां हतां, ते बधां लक्षणो वधतेओछे अंशे धरावता प्रयोगो हता. एटले आर्ष प्राकृत के अर्धमागधीनुं आगवुं, स्वतंत्र लक्षण बांधी शकाय तेवुं भाषास्वरूप हेमचंद्राचार्यने जैन आगमसाहित्यमां जोवा मळतुं न हतुं.*

---

*कया हेतुथी प्राकृत भाषाओनां व्याकरण रचातां हतां, अने ते अनुसार हेमचंद्राचार्यनुं लक्ष्य शुं हतुं ते समज्या विना नित्ती दोल्चीए पोताना पुस्तक **The Prakrit Grammarians** (अंग्रेजी अनुवाद)मां हेमचंद्राचार्यना प्राकृत व्याकरणनी जे टीका करी छे, ते अज्ञानमूलक अने अन्यायी ज कही शकाय. पण तेनी विगते विचारणा करवानुं अहीं अप्रस्तुत छे. पिशेले पण हेमचंद्राचार्ये देशीनाममाला'मां जे उदाहरणपद्यो आपेलां छे तेनी वगर समज्ये टीका करी हती. ए विद्वानोए प्राकृत भाषाना अध्ययनक्षेत्रे जे महत्त्वनुं योगदान करेलुं छे ते आदरणीय छे, परंतु आ बाबतने लगतां तेमना विचारो अने मंतव्य भूल भरेलां छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'द्व्याश्रय' काव्यना एक पद्यनी शंकास्पद वृत्ति परत्वे विचारणा

– शीलचन्द्रविजय गणि

१. श्री हेमचंद्राचार्ये गूजरातना चावडा – सोलंकी – राजाओना चारित्रवर्णन सार्थ स्वरचित 'सिद्धहेमचन्दशब्दानुसासनं द्वारा सिद्ध थता शब्दप्रयोगोने गूंथी लेता 'द्व्याश्रयं महाकाव्य उपर श्रीअभयतिलकगणिए वृत्ति रचेली छे । आ वृत्ति काव्यना अर्थोने तेम ज व्याकरणना प्रयोगोने पण खोली आपे तेवी सुगम छे । जो के आ वृत्तिने सर्वग्राही वृत्ति कहेवानुं साहस न करी शकाय । केम के हजी काव्यतत्त्व तथा अलंकार–वर्गोनी दृष्टिए 'द्व्याश्रयं उपर विवेचन थवानुं बाकी ज रहे छे । आम छतां, आजे तो 'द्व्याश्रयं'ना अर्थोद्घाटन माटेनुं एकमात्र सरस साधन आ वृत्ति ज छे ।

'द्व्याश्रयं'ना प्रथम सर्गमां अणहिल्लपुरपत्तननुं नगरवर्णन थयुं छे. चोथा पद्यथी आरंभीने कुल १३० पद्योमां पथरायेलुं ए नगरवर्णन अत्यन्त रोचक अने कल्पनोत्तेजक छे । वृत्तिकारे ए रोचकताने झीलवानो पोतानी क्षमता अनुसारे सारो प्रयत्न कर्यो छे । परंतु आ वर्णनमां ५८ मा पद्यनी वृत्ति, मूल पद्यना रहस्यथी विपरीत जती होय तेवुं जणाय छे । ए पद्य तथा तेनी वृत्ति आ प्रमाणे छे :

न यथा कोऽपि संस्कर्ता संचस्कार यथा न च ।
अरोचकी गुणेष्वत्र संस्कर्तुं यतते तथा ।। ५८ ।।

वृत्ति : – अत्र पुरे न रोचते धान्यं क्षुधोऽभावादस्मिन् "नाम्नि पुंसि च" (पू. ३.१२२) इति णके अरोचको बुभुक्षाया अभावः सोऽस्त्यस्य" प्राणीस्थाद०" (७.२.६०) इत्यादिना रुग्वाचित्वादिनि अरोचकी नरो गुणेषु व्यञ्जनेषु विषये संस्कर्तुं हिङ्गुकर्पूरादिक्षेपेण तथा तेन प्रकारेण यतते प्रवर्तते यथा कोऽपि पुमान् न संस्कर्ता न संस्करिष्यति यथा कोऽपि न च संचस्कार संस्कृतवान् ।

वृत्तिनो सार ए समजाय छे के "आ नगरना लोकोने 'अरोचकं नामनो रोग होवाथी, अथवा अहींना लोकोने बहु भूख न लागती होवाथी, भूख लागे ते खातर, तेओ गुणो एटले शाक–दाळ प्रकारनां व्यंजनोमां हिंग अने कपूर आदि संस्कार (वघार व.) करता हता, के जेवो कोईए क्यारेय कर्यो न होय के करशे पण नहि ।"

अत्यंत ग्राम्य, बेहूदो अने नगरनी प्रशस्तिने बदले अपकीर्ति गणाय तेवो – आवो अर्थ वृत्तिकारे आ पद्यनो केवी रीते अने केम तारव्यो हशे ? ते समजमां आवे तेम नथी ।

वास्तवमां आ पद्य एक उच्च कक्षानुं ध्वनिकाव्य गणी शकाय तेवुं पद्य छे । आ पद्यमां आवेला 'गुणं शब्दनो 'गुणं अर्थ ज करवाथी, अने 'अरोचकी नो अर्थ आयुर्वेदमां वर्णवेल 'अरोचक नामना रोगथी पीडातो 'एवो न करतां गुणो प्रत्ये ज जेने अरुचि छे ते गुणोनो अरोचकी" एवो करीए तो आ पद्यमांथी एवो ध्वनि नीकळे छे के :

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"आ नगरना लोको एवा तो गुणवंत हता, के जेमने देखीने गुणोनो अरोचकी– अवगुणी दुर्जन जण पण, पोतानामां आवा गुणो प्रगटाववा माटे एवो प्रचंड उद्यम करतो के जेवो आ पूर्वे कोईए कर्यो न होय तेम भविष्यमां कोई करशे पण नहि "।

आ अर्थने जो यथार्थ स्वीकारीए तो आ पद्यनी व्याख्या आ प्रमाणे करवी घटे :

वृत्ति :

अत्र – पुरे, गुणेषु – गुणानां – सद्गुणानां प्राप्तिविषये, अरोचकी– सद्गुणान् प्रति रुचिमान् – दुर्जनो निर्गुणो वा जन इत्यर्थ, 'अपिः' अध्याहार्य : अतो निर्गुणोऽपि जनः; स्कर्तुं 'निजं' इति शेषः, निजात्मनि गुणानां संस्कारमाधातुमित्यर्थ; तथा – तेन प्रकारेण त्वरया तत्येन तीव्रभावादिना वा – यतते – यत्नं कुरुते, यथा – येन प्रकारेण कोऽपि – कश्चिदपि न्यो जनः न संचस्कार– निजात्मानं न संस्कृतवान् 'पूर्वं 'गुणैरिति च शेषः । न च – ना 'कोऽपि' इति अत्राप्युपादेयं; अतो न कश्चिदपि जनः संस्कर्ता च –भविष्यकाले निजात्मानं स्करिष्यत्यपि । अयं भावः –एतादृशोऽत्रत्यो जनो गुणवान्, यं दृष्ट्वा अन्यो निर्गुणो जनो निर्गुणत्वेन लज्जित्वा निजात्मानं गुणसंस्कृतं निर्मातुं तथा सयत्नो भवत्यत्र, यथा भूतकाले नापि जनेन नोद्यतं, न वा भविष्यत्कालेऽपि कोऽपि तादृक् प्रयत्नशीलो भावी ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

"गांगेयभंग प्रकरण–सस्तबक" नामे कृतिना कर्ता विषे ऊहापोह

– शीलचन्द्रविजय गणि

जैन आमगमग्रंथ श्री विवाहप्रज्ञप्ति(भगवती) सूत्रना नवमा शतकना ३२मा उद्देशमां श्री पार्श्वनाथ–परम्पराना गांगेय ऋषिए भगवान महावीरने पूछेला भङ्गप्रश्नो तथा तेना उत्तरोनुं विराद स्वरूप वर्णवेलुं छे. आ विषय भशगजालमय होवाथी अभ्यासीओने तेनो बोध सुलभ बने ते हेतुथी विविध नानां प्रकरणो रचायां छे, जेमांनुं एक श्री विजयगणिए रचेलुं "अवचूरियुक्त गाङ्गेय भङ्ग प्रकरण" ई.स.१९१६ मां भावनगरथी प्रकाशित छे. ताजेतरमां विख्यात जैन मनीषी उपाध्याय श्रीयशोविजयजीए रचेलुं "गांगेयभंग प्रकरण" मळयुं छे. आ प्रकरणमां ३५ गाथा छे. आ प्रकरणनी प्रथम गाथामां 'पुव्वप्पगरणसेसं' –पदथी समजाय छे के पूर्वे पण कर्ताए आ विषयनुं कोई प्रकरण रच्युं हशे, जेमां नहि कहेलो शेष विचार प्रस्तुत प्रकरणमां गूंथ्यो छे. ३५मी – अन्तिम गाथा जोतां "श्रीनयविजयगुरुना शिष्य सुयश(यशो)–विजये" आ प्रकरण रच्युं छे ते स्पष्ट छे.

आ प्रकरणनो 'टबो' पण मळेल छे. टबानी विविध प्रतिओ, जे लगभग १९/२०मा शतकमां ज लखाई होवानुं तेनी लखावट उपरथी कल्पी शकाय तेम छे, तेमां टबाना रचनार के लखनार विशे कोई निर्देश प्राप्त थतो नथी. टबानो प्रारंभ आम थाय छे :–

श्रीमत् शान्तिजिनाधीशं नत्वा वीरस्य वार्तिकम् ।
पृष्टं बालोपकाराय गंगेयाख्येन बुद्धि ना॥ १ ॥
किञ्चिन्मद्धी प्रमाणेन श्रुतधर्मानुसारतः ।
कुर्वे **स्वोपज्ञगाथाया** यन्त्रयुक्तं पुनस्तथा ॥ २ ॥

आ उपरथी मूल गाथाकार पोते ज टबाकार होय तेवुं मानवानुं उचित लागे छे. टबा-सहित आ प्रकरणनी मारी समक्ष पडेली ५ प्रतिओमा जूनामां जूनी प्रति संवत १८५०नी छे. तेमां ३५मी गाथानो टबार्थ आ प्रमाणे छे : "शोभावंत महत् बुद्धि॥नधांन पं. श्री नयविजयगुरुना शिष्य महोपाध्याय श्री श्री जसविजयजी नैयायिकशिरोमणीइं तेणे आ प्रकरण शास्त्रप्रमाणे रच्युं तीक्ष्ण मतिवंत प्रांणीनें मन रूप मर्कट चपल छें ते वश्य आणवानें माटें ३५ इति गंगेयकृतपृच्छाप्रकरणार्थ : ॥ सं. १८५० । पं. श्री १०८ पं. गुरुजी साहबजी पं. शुभ विजयजी शिष्य मुं. वीरविजयेन लि. मागशिर सुदी १० दीने निर्जार्थे खंभातबिंदरे॥"

आ विवरण टबाना प्रणेता कोण छे ते नक्की करवामां कोई रीते पण स्पष्ट मार्गदर्शन करतुं नथी. मात्र "पं. वीरविजयजी ('शुभवीर' तरीके जाणीता कवि–साधु)ए आ टबार्थ–युक्त प्रकरण लख्युं छे " एटलुं ज आथी समजी शकाय छे. अने अन्य ४ प्रतिओ पैकी ३ पण

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रतिओ मळी छे तेमां लेखक तथा संवतने बाद करतां उपर प्रमाणे ज अन्तिम लखाण जोवा मळे छे.

हवे महत्त्वनी पण विचित्र लागे तेवी वात ए छे के आज प्रकरणनी टबारहित मूलगाथा – मात्रनी प्रतिओ पण पांचेक मळी आवी छे. ए तमाम प्रतिओमां ४१ गाथाओ छे, ए तो ठीक, परंतु तेनी छेल्ली – ४१ मी गाथामां आ प्रकरणना प्रणेता श्रीउत्तमविजयना शिष्य श्रीपद्मविजयजी छे तेवो स्पष्ट उल्लेख छे. ते गाथा आ प्रमाणे छे :–

सिरिउत्तमविजयाणं सीसो नामेण पउमविजओ त्ति ।
तेण पगरण रइयं मणमक्कड वस्समाणेउं ।। ४१ ।।

मूलमात्र पाठनी प्रतिओमां, टबावाळी प्रतिओ करतां जे ६ गाथा अधिक छे, ते आ प्रमाणे छे :– ३५ गाथावाळी वाचनागत – गाथा २७ पछी –

जइसंखा जीवाणं भंगा काउं मणंमि इच्छिज्जा ।
तत्तो इक्केक्कहिया–रासीछक्कं ठवेयव्वं ।। २८
तस्साहो दुगमाई छगपज्जंता धुवा य पण अंका ।
उवरिअहोसमअंका फुसियव्वा नियमओ ते उ ।। २९
पच्छा धुवअंकेहिं दिज्जइ भागो य जस्स अंकस्स ।
तट्ठाणे जं लद्धं तं अंकं ठवसु नियमेणं ।। ३०
पच्छा गुणसु परुप्पर–सेस धुवंकेण भाइयं संतं ।
जं लब्भइ तस्संखा भंगपमाणं मुणेयव्वं ।। ३१
अह जइ सेसधुवंको नत्थि तओ जं परुप्परं गुणणे ।
लद्धं तं चिय माणं इच्छियजीवाण विन्नेयं ।। ३२

आटली (५) गाथा अधिक छे; तथा ३५ मांनी ३८मी गाथा पछी –

सिरिपुज्जोदयसायरसूरिणा गुणवया य बुद्धिमया ।
काऊण सुहियं तेण विसोहियं गणियनाणेण ।।४०

आम समग्र रीते जोतां आ कृतिना कर्ता कोण ? ते प्रश्न आपणी सामे उपस्थित थाय छे. मजानी वात ए छे के जुदा जुदा भंडारोनी ५ मूळ पाठ धरावती अने ५ टबायुक्त पाठ धरावती कुल १० प्रतिओ भेगी करी छे; तेमां मूळ पाठवाळी बधी प्रतिओ ४१ गाथानो पाठ आपे छे, जे पद्मविजयजी–रचित छे. ज्यारे टबावाळी बधी प्रतिओ ३५ गाथानो पाठ आपे छे, जे यशोविजयजी–कृत छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीजी वात, उपर जणावेली, ४१ गाथावाळी प्रतिओमांनी ५ + १ = ६ गाथाओने बाद करतां शेष ३५ गाथाओनो पाठ तथा क्रम टबावाळी अने टबा विनानी – एम दसे प्रतिओमां समान छे. आथी सहज ज प्रश्न थाय के आ प्रकरणनो खरो कर्ता कोण ?

आ विषे ऊहापोह करतां केटलाक विचारणीय मुद्दा उद्‌भवे छे :

१. यशोविजयजीनी रचना होय, ने बीजा कर्ताए ते पोताना नामे चडावी होय.

२. अथवा एवुं य वने के पद्मविजयजीनी रचना होय अने तेने तेमना प्रत्ये अरुचि धरावता कोईए यशोविजयजीना नामे चडावी दीधी होय.

३. अथवा तो खुद पद्मविजयजीए ज कोई कारणसर पोतानी रचनाने यशोविजयजीनुं नाम आपी दीधुं होय.

आ त्रणमां बीजी अटकळ तथ्यथी वधु नजीक होय तेवुं अनुमान आ संपादकना मनमां छे. जो के वीरविजयजीनो टबो छे, अने तेओ पण आ कृति यशोविजयजीनी होवानुं जणावे छे; तो पण, संवत १८५० मां तो वीरविजयजीनो दीक्षाकाल हजी मांड बे वर्षनो ज होवानुं (दीक्षा सं. १८४८ मां थई)अर्थात् ते समये तेमनो अध्ययनकाल के आरंभकाल होवानुं तेमना विशे प्राप्त ऐतिहासिक साधनोथी ज्ञात छे, एटले तेमणे पोते पोतानी सामेनी पूर्व–प्रतिनुं ज मात्र अनुसरण कर्युं होय तेम विचारवुं वधु योग्य जणाय छे.

पू. यशोविजयजीनी प्राप्त अने ज्ञात ग्रन्थ रचनाओनी अद्यतन सूचिओमां आ प्रकरणनो क्यांय निर्देश नथी. आ प्रकरणनी प्रथम गाथामां निर्देश्या प्रमाणेनी आज विषयनी पूर्वरचना पण मळी – मलती नथी. वळी, आजे जे प्रतिओ आ प्रकरणनी मळी छे ते तमाम १९–२०मा शतकनी ज छे; अने १७–१८मानी एक पण प्रति हजी प्राप्त थई नथी.

वळी, आ रचनामां उपाध्याय यशोविजयजीनी उद्‌भर विद्वत्तानो एकाद पण उन्मेष जोवा नथी मळतो. 'एमनी आ आरंभिक रचना होई शकें – एवुं मनना संतोष खातर विचारीए, तो पण, तेमां बहु वजूद नहि आवे. केम के प्रकरणना टबाना मंगलाचरण परथी मूळकार अने टबाकार एक ज होवानुं सिद्ध थाय छे, अने ए मंगलाचरणना बे श्लोकोनुं संविधान अने शब्दो जोतां ज 'आ यशोविजयजीनुं न ज होयं एम कोई पण अभ्यासी तत्क्षण कह्या विना नहि ज रहे.

बधी वातोनो सार एटलो ज के यशोविजयजीना नामे मळी आवती प्रस्तुत कृति,वस्तुतः पद्मविजयजीकृत होवी जोईए, के जे पोतानी कृति पद्मविजयजीए श्रीपूज्य उदयसागरसूरि पासे संशोधित पण करावी छे. आम छतां आ कृतिनी प्रतिओ 'यशोविजयजीनी रचना' तरीके मळे छे, ते पद्मविजयजी प्रत्ये कोईनी अभक्ति के पछी यशोविजयजी प्रत्येनी कोईनी अतिभक्तिनुं ज परिणाम जणाय छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपाध्याय श्रीयशोविजय कृत (?)
गांगेय-भङ्ग-प्रकरणम् ॥

नमिऊण महावीरं गंगेयसुपुट्ठभंगपरिमाणं ।
पुव्वप्पगरणसेसं वुच्छं सुगुरूवएसेणं ॥१

वाणियगामे नयरे भयवं वीरो समोसढो नाणी ।
पासावच्चिज्जो अह गंगेओ आगओ तत्थ ॥२

तस्सासंका जाया एसो किमु अत्थि इंदजालुत्ति ।
पसिणाइं महत्थाइं पडिपुच्छइ हेउणा तेण ॥ ३

पुच्छा-उत्तर सयलं नायव्वं पंचमंग-नवमसया ।
इह उण संखेवत्थो भणामि निच्चं ससरणट्ठा ॥४

एगम्मि उ नरगम्मि भंगा सग हुंति जइ असंखेज्जो ।
इगवीसा दुग निरए पणतीसा तिन्नि नरगम्मि ॥५

चउसु वि पणतीसाओ पंचसु इगवीस भंगसंखाओ ।
छग नरगे सग भंगा सत्तसु पुढवीसु एगो अ ॥६

जे एगम्मि उ नरए सग भंगा छग्गुणा बियालीसं ।
दुग निरयाओ दुभागे हवंति हरिया हु इगवीसा ॥७

एगूणा उण किज्जइ निरयपमाणेण दिज्जई भागो ।
इगवीसा पणगुणिया जायइ पंचुत्तरसयं च ॥८

ते य तिभागे हरिया हुंति पणतीस तिन्नि नरगम्मि ।
चत्तसयं चउभागे हरिया पणतीसभंगाओ ॥९

तिगुणा पंचुत्तरसय-भंगा इगवीस पंचभागम्मि ।
बायालीसं दुगुणा छग भागे सत्त भंगा य ॥१०

अह उण विगप्पमाणं एगविगप्पो अ दुन्नि जीवाणं ।
तिग जीवाणं दुजोगा दुन्नि तिगजोग एगेव ॥११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउजीवाण दुजोगा तिन्नि अ तिग जोग तह य तिन्नेव ।
चउ जोगो एगेव य अह पणजीवाण सुणसु कमा ।।१२

दु ति चउं पंच य जोगा चउ छ च्चउ एग अह छ जीवाणं ।
दु ति चउ पंच छ जोगा पण दस दस पणेग नेयं च ।।१३

छ पण दस वीस पण दस छेगदुगाइ संगत सत्तण्हं ।
अट्ठण्हं जीवाणं दुगाइ अट्ठंतसंजोगा ।।१४

सग इगविस पणतीसा पणतीसिगवीस सत्त एगो अ ।
नव जीवाण दुगाई-नवंत संयोग कायव्वा ।।१५

अट्ठट्ठवीस छप्पन्न सयरी छप्पन्न अटठ वीसट्ठी ।
एगविगप्पो एसिं अह दह जीयाण संजोगा ।।१६

नव छत्तीसय चुलसी छव्वीसुत्तरसयं च पण जोगा ।
पुण छव्वीसुत्तरसय चुलसी छत्तीस नव एगो ।।१७

इच्चाई य विगप्पा जीवपमाणेन अक्ख चालणया ।
कायव्वा पुण एसिं सुणसु उवायं समग्गाणं ।।१८

जइसंखा हुंति जीया दुगसंजोगा हवंति एगूणा ।
संजोगतिगाईणं तिगाईरासी उ वेयव्वा ।। १९

पुव्वविगप्पा पढमंक गुणा य काऊण सेसअंकाणं ।
भाइज्जइ जं लब्भइ मुणसु पमाणं तिगाईणं ।।२०

जह पणजीवाणं इह दुगसंजोगा हवंति चत्तारि ।
तिगसंजोगाणं पुण ठविज्ज रासी वि तिन्नेव ।।२१

तिन्नि य एगो एगो दुग जोगा पढम अंक गुणियव्वा ।
बारस सेस दुभत्ता तिग जोगा हुंति छच्चेव ।।२२

भंगा य पइविगप्पे पुव्वुत्ता नरगभंग गुणियव्वा ।
अह पुण सव्वविगप्पा जीवाणं हुंति ते भणिमो ।।२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तिगजीयाण विगप्पा दुगुणे गहिया चउण्हजीवाणं ।
ते पुण दुगुणे गहिया पंचजियाणं मुणेयव्वा ।। २४

एवं कमेण सव्वत्थ अह भंगा सव्व जीयरासीणं ।
एगेगहिया किज्जइ संखामाणं विभत्ताओ ।।२५

सग पढमपुढविभंगा अट्ठगुणा ते वि जीवपविभत्ता ।
अट्ठावीसं भंगा दुगजीवाणं विआणाहि ।।२६

ते वि अ नवगुणिआओ एवं इक्किक्किरूववुड्ढीए ।
जीवपमाणविभत्ता संखा (वि) बुहेहिं नायव्वा ।।२७

पुव्वसूरीहिं नट्ठु-दिट्ठपत्थारभासिओ नेओ ।
वित्थरओ पुण सुत्ता नायव्वो सुहुमदिट्ठीहिं ।।२८

गंगेओ अह सुच्चा भयवं वीराओ भंगजालमिणं ।
भयवं-उवरिं जाओ सव्वन्नूपच्चओ तस्स ।।२९

वंदइ नमंसइ अह आयर-बहुमाण-भत्तिपुव्वं च ।
गंगेओ संजाओ सामिओ गुत्तो विसेसेणं ।।३०

चउजामाओ धम्मा पडिवज्जइ पंचजामधम्मं च ।
नाण-किरियाहिं जुत्तो विहरइ निच्चं गुरुसगासे ।।३१

जस्सट्ठाए कीरइ सुनग्गभावो य मुंडभावो अ ।
आराहिओ तमट्ठो सिद्धोपरिनिव्वुडो बुद्धो ।।३२

धन्नो सो गंगेओ जेणेवं वीर-जगगुरू पुट्ठो ।
धन्ना ते च्चिय पुरिसा दिट्ठो पहु वागरंतस्स ।।३३

धन्ना चिय मह जीहा तिलोकनाहो हु वीरपहु थुणिओ ।
धन्ना गुरूण बुद्धि अत्थो जेणेस परिकहिओ ।।३८

सिरिनयविजयगुरूणं सीसो नामेण सुजसविजओत्ति ।
तेण प्पगरण रइयं मणमक्कड वस्समाणेउं ।।३५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

यतिदिनचर्या : वृत्तिनी गवेषणा.

– पं. प्रद्युम्नविजयगणी

'यतिदिनचर्या' नामनी बे कृति प्रसिद्ध छे. एक श्री देवसूरिकृत अने एक श्री भावदेवसूरिकृत. तेमां श्री भावदेवसूरि कृत 'यतिदिनचर्या' –तेना उपरनी श्री मतिसागरसूरिकृत वृत्ति सहित–पूज्यपाद सागरजी महाराजे संपादित करीने प्रकाशित करी छे. अने बीजी श्री देवसूरिकृत 'यतिदिनचर्या' हजी अप्रकाशित छे. जो के ते मूलमात्र मुनि जिनविजय द्वारा संपादित थई प्रकाशित थनार हती पण तेना फर्मा छपाई गया अने पछी प्रस्तावना न लखवाना कारणे ए ए रीते अप्रकाशित ज रही गई. तेना उपर पण श्री मतिसागरसूरिकृत वृत्ति मळे छे.

आ मतिसागरसूरिजी कोनी परंपरामां आवे, तेओनो गुरुपूर्वक्रम शुं छे, तेओनो सत्तासमय कयो, तेओनी आ बे सिवाय कई कई रचना छे, वगेरे बाबतो जाणी शकाई नथी.

अमारे अत्यारे आ श्री देवसूरिकृत 'यतिदिनचर्या' नुं संपादन चाले छे. आना माटेनी सामग्री भंडारोमांथी सारा प्रमाणमां मळी छे. प्राचीनमां प्राचीन एक पोथी छाणीना श्री वीरविजयशास्त्री संग्रहनी ताडपत्रनी मळी छे. लेखनसंवत वि. सं. १३०१ छे. प्रति शुद्ध छे. आमां गाथा ३८९ छे. श्री जिनविजय–संपादित कृतिमां ३३६ गाथा ज मळे छे. तेमने पण घणी घणी प्रतोमां अन्यान्य गाथाओ तो मळी छे पण तेओए एक वाचना स्वीकारीने अन्य प्रतोनी गाथाने पादनोंधमां मूकी छे. अमे तो आ छाणीनी ताडपत्र–पोथीने ज आधारे संपादन कर्युं छे. बीजी कागळनी सत्तरमा सैकानी घणी प्रतो अलग अलग भंडारोमांथी मळी छे. एक संवेगीना उपाश्रयना भंडारनी पोथी तो "वि.सं. १६४४ वर्षे जगद्गुरु– श्रीहीरविजयसूरिवाचनकृते मुनिमानविजयेन लिखिता"– एवी पुष्पिकावाळी मळी छे. जो के अमने मळेली पोथीओमां पण गाथानी संख्या तो ओछी–वधारे मळी ज छे.

श्री भावदेवसूरिकृत 'यतिदिनचर्या'नी गाथा तो मात्र १५४ ज छे. एटले पू. सागरजी महाराजे तेनो मिताक्षरी प्रस्तावनामां नोंध्युं ज छे के "एक श्री देवसूरिकृत य.दि.च. मळे छे पण ते मोटी छे माटे संक्षिप्तरुचि जीवो माटे आ नानी प्रकाशित करीए छीए." श्री भावदेवसूरि करतां श्री देवसूरिजी प्राचीन छे. देवसूरिकृत य.दि.च. नी आदि–अन्तिम गाथा आ प्रमाणे छे. आदि गाथा –

तं जयइ सुहं कम्मं निम्मिअसम्मं जयम्मि जं सूरो,
अविरामं पिच्छंतो अज्जवि न करेइ वीसामं ।।१।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तिमगाथा –

संविग्ग-वग्ग-सायर-पभणिय-सिरिदेवसूरि-उद्धरिया ।
जाव रवि-दिवस-चरिया ता जयउ जईण दिणचरिया ।।६८९।।

आना उपर मतिसागरसूरिनी वृत्ति छे. तेओनो सत्तासमय अढारमा सैकानो लागे छे. वधीने सत्तरमो सैको-एथी जूना होय तेम जणातुं नथी.

भावदेवसूरिकृत य.दि.च. उपरनी वृत्तिमां तो तेओए प्रारंभमां ज कह्युं छे के–

दिनचर्यां श्रुतधुर्यां कृतवान् श्री भावदेवसूरिवरः ।
सुकरां तनुते रम्यां मतिसागर एष तद्वृत्तिम् ।।

आ रीते श्रीदेवसूरिकृत य.दि.च.ना आदि भाग के अन्त भागमां तेओनो नामोल्लेख मळतो नथी. भंडारनी नामावलिमां 'टीकाकार मतिसागरसूरि' ए रीतनो उल्लेख छे– ४१४४ ग्रन्थाग्रनी वृत्तिनी रचना घणी ज शिथिल बंधवाळी अने कोई शिखाउ व्यक्तिए आ प्रथम प्रयत्न कर्यो होय तेवुं प्रतीत थाय छे. वळी आ टीकानी जेटली पोथी मळी ते बधामां गाथा–६४ थी ६९ उपर वृत्ति नथी. क्यांक क्यांक वृत्ति अधूरी पण मूकी छे अने आश्चर्य तो ए छे के जेटली पोथीओ मळे छे ते बधी जाणे एक ज लहियाना हाथे लखायेली होय तेम लागे. पत्रसंख्या, कागळनी साइज, जात, अक्षर–मरोड बधुं ज एकसरखुं. अने जे पानानी जेटली लीटीथी, जे अक्षरथी वृत्ति अधूरी छे ते ज रीते भावनगर, लींबडी, अम. डेला.नी एम बधी पोथीओमां छे.

आवी परिस्थितिमां एक आशानुं किरण छे.

डेलाना उपाश्रयनी य. दि. च.नी मतिसागरसूरि कृत टीकानी जे पोथी छे तेनी पहेली पूंठीमां झीणा अक्षरे आखुं पानुं भरीने लखाण छे. सूक्ष्म नजरे ज्यारे ए लखाण वांच्युं–उकेल्युं त्यारे ख्याल आव्यो के आ तो श्री देवसूरिकृत. य. दि. च. नी पहेली गाथानी वृत्तिनी काची नकल छे. ए वृत्तिनी शैली जोईने थयुं के श्री देवसूरिकृत य.दि.च. नी गरिमाने न्याय आपे तेवी आ टीका छे. पण आज दिन सुधी घणां भंडारोमां आ दृष्टिए तपास करी पण हजी नजरे चढी नथी.

कोई पण विद्वान मित्रने ए जोवामां आवे तो जरूर जाण करे.

अत्यारे मूळ अने वृत्तिनुं संपादन थई गयुं छे, पण कदाच आ विद्वत्तापूर्ण वृत्ति–मळी आवे तो तेनुं ज संपादन करवुं ए आशाए आनुं प्रकाशन रोकी राख्युं छे.

विद्याप्रेमी सहृदय विद्वानोने ख्याल आवे ते माटे बन्ने वृत्तिनो प्रारंभ भाग आ साथे आप्यो छे–ते जोवाथी बन्नेनी शैलीनो पण परिचय मळी जशे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्ञातकृत वृत्ति

'यतिदिनचर्यानी टीकावाळी प्रतना पहेला पानानी पहेली पूंठी उपरना पाठनो आ उतारो छे. प्रत नं. ११२५४. आ पाठ डेलानी प्रतमां पहेला पानानी आगळ छे. पोणुं पानुं लखेलुं छे.

श्रेयांसि बहुविघ्नानि महतामपीति कृतमङ्गलोपचारैरेव शास्त्रादौ प्रवर्तितव्यम् । तन्मङ्गलं नामादिभेदतश्चतुर्विधम् । तद्यथा–नाममङ्गलं स्थापनामङ्गलं द्रव्यमङ्गलं भावमङ्गलं चेति । यन्मङ्गलार्थशून्यानां जीवाजीवोभयानां ज्वलनादीनां देशीभाषया मङ्गलमिति नाम रूढम् । तत्र जीवस्याग्रेर्मङ्गलमिति नाम रूढं सिन्धुविषये, अजीवस्य दवरकचलनकस्य मङ्गलमिति नाम रूढं लाटदेशे, जीवाजीवोभयस्य सु–मङ्गलमिति नाम रूढं चन्दनमालाया दवरिकादीनामचेनत्वात् पत्रादीनां सचेतनत्वाज्जीवाजीवोभयत्वं नवं वा क्रियते तद् वस्तु = नाम्ना नाममात्रेण मङ्गलमिति कृत्वा = नाममङ्गलं स्वस्तिकादीनां तु या स्थापना लोके सा स्थापना मङ्गलं चित्रकर्मादि गतः परममुन्यामपि स्थापनामङ्गलम्। द्रव्यमङ्गलं तु द्विधा आगमतो नोआगमतश्चात्रागमो मङ्गलशब्दार्थज्ञानरूपोऽभिप्रेतस्तदावरणक्षयोपशमवानपि यो मङ्गलशब्दार्थेऽनुपयुक्तः स आगमतो द्रव्यमङ्गलमनुपयोगो द्रव्यमिति वचनात् । नोआगमतस्तु तद् ज्ञशरीर–भव्यशरीर–तद्व्यतिरिक्तभेदात् त्रिविधं तत्राद्ये निगदसिद्धे तया जिनप्रणीता मङ्गल्या प्रत्युपेक्षणादि क्रिया अनुपयुक्तेन क्रियते सा अथवा शोभनवर्णादिगुणविशिष्ट सुवर्णरत्नदध्यक्षतकुसुममङ्गलकलशादिकं तत्सर्वं तद्व्यतिरिक्तं नो आगमतो द्रव्यमङ्गलम् भावमङ्गलमपि द्विविधं आगमतो नोआगमतश्च । तत्रागमत–स्तावन्मङ्गलपदार्थज्ञ उपयुक्तश्च । नोआगमतस्तु आगमवर्जज्ञानचतुष्टयं दर्शनचरित्रणि चाथवा प्रतिक्रमणप्रत्युपेक्षणादिक्रियां कुर्वाणस्य यो ज्ञानदर्शनचारित्रोपयोगपरिनणामः सतो आगमतो भावमङ्गलमुच्यते । तदत्रचतुर्विधेषु मङ्गलेष्वाधत्रयमनुपयोगित्वात् अनादृत्य शास्त्रारम्भे शास्त्रकारः विघ्नविघातकं द्वितीयं तु भावमङ्गलरूपं शुभं कर्म–साध्वादेः स्तुतिद्वारेणोपन्यसन्नाह–**तं जयइ** ति तत् शुभं प्रशस्तं निरवद्यत्वात् कर्मचरणाद्यासेवनं जयति प्रकर्षवत्तया व्याप्नोति यत्तदोर्नित्यसम्बन्धात् यत् शब्दघटनामाह–यत् **कर्म निम्मिअसम्मं जयम्मि** त्ति पूर्वगुणस्थानकापेक्षया जयो रागादेर्येन सः निर्मितसम्यक्जयस्तस्मिन्नथवा सम्यक् चासौ जयश्च सम्यग्जयः स तु बाह्यारिजयापेक्षया आन्तरारिजय एव निर्मितः सम्यग्जयोपेतः स नि० तस्मिन् साधौ **अविरामं** ति विलम्बरहितमप्रमादेन यथासमयं यथाकालं साधुभिरासेव्यमानत्वात् **पेक्षमाणो** विलोकयन् **अद्यापि सूरो विश्रामं न करोति** साधुवदहमपि सर्वजन्तुहितदायि कर्म समाचरेयमित्यभिप्रायेण सूरोऽविलम्बेन क्षेत्रं प्रकाशयन् चरतीतिशास्त्रकर्त्रोत्प्रेक्षितोऽर्थः । ननु शुभकर्मानुष्ठानं कथं नोआगमतो भावमङ्गलम् । को नाम मङ्गलपदार्थः । उच्यते भावो विवक्षितक्रियानुभूतियुक्तो हि वै समाख्यातः । सोऽत्र प्रत्युपेक्षणादिकर्मोपयोगरूपो भावो विवक्षितोऽस्ति नोशब्दोऽस्यात्र देशवाचौ क्रियामिश्रत्वात्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मग्यतेऽधिगम्यते हितमनेनेति मङ्गलम । अथवा मङ्गो धर्मस्तं लाति समादत्ते इति मङ्गलं धर्मोपादानहेतुरिति शुभानुष्ठानं एतादृशं वर्तते एवेति ।

अन्ये तु दव्यमङ्गलमपि भावमङ्गलं तदङ्गत्वात् । यद्यस्य कारणं तत्तद्व्यपदेशं लभत एव यथा आयुर्घृतं रूपको भोजनमित्यादि । एवं वा त्रयप्रकारेण भावमङ्गलस्य प्रायेण पुण्यप्रकृतिनिमित्तकत्वात् कारणे कार्योपचारं विधाय तदेव स्तुतिद्वारेणोपन्यसन्नाह –

तं जयइ त्ति तत् शुभं कर्म सान्तवेदनीयादि तीर्थकृन्नामप्रभृतिकं जयति यत् शुभं कर्म जगति निर्मितं प्राणिभिरित्याध्याहारः विश्वे अविरामं–न विद्यते विरामोऽवसानमस्य तदविरामं अनन्तं अनेकजीवापेक्षया प्रेक्षमाणोऽद्यापि विश्रामं न करोति । किमुक्तं भवति । नाना के ते नानाजीवानां पुण्यावलोकनार्थमेव अविश्रामं भ्रमतीति पक्षिकोऽर्थः ।

मूल =

तं जयइ सुहं कम्मं, निम्मियसम्मं जयंमि जं सूरो ।
अविरामं पिच्छंतो, अज्जवि न करेइ वीसामं ।।१।।

श्री मतिसागरकृत टीकानो प्रारंभभाग

६ ।।

ओं नमो विश्वविख्यातकीर्त्तये कान्तमूर्त्तये ।
विश्वालङ्कारभूताय पूताय श्रीमदर्हते ।।१।।

अष्टकर्मक्षयात् सिद्धिं प्राप्ता ये परमेष्टिनः ।
ते सिद्धाः सिद्धिसौख्यानि दिशन्तु वरदेहिनाम् ।।२।।

स्वयं पञ्चविधाचारमाचरन्तस्तथाऽपरान् ।
आचारे योजयन्तस्ते जयन्त्वाचार्यकुञ्जरा ।।३।।

ये चाङ्गोपाङ्गपाथोधिपारगाः प्रौढबुद्धयः ।
साधूनध्यापयन्तस्ते जीयासुर्वाचकोत्तमाः ।।४।।

ये च सार्धद्वयद्वीपमध्यगाः सर्वसाधवः ।
विहरन्ति महात्मानो नमस्तेभ्यस्त्रिशुद्धितः ।।५।।

श्रीभारतीं भगवतीं प्रणम्य सम्यक् कवीन्द्रनतचरणाम् ।
यतिदिनचर्याविवृतिं करोमि सुगुरुप्रसादेन ।।६।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इह हि ग्रन्थकारः सकल शुभक्रियाकलापसाध्यभूतं ऐहिकाऽऽमुष्मिकसौख्यदायकं मङ्गलार्थं मङ्गलभूतं शुभं कर्म स्तौति । यथा –

तं जयइ सुहं कम्मं निम्मिअसम्मं जयम्मि जं सूरो ।
अविरामं पिच्छंतो[1] अज्जवि न करेइ वीसामं ॥१॥

तं जयइ त्ति तत् शुभं कर्म जयति । जयतीति क्रियापदम् । किं कर्तृ कर्म । किंविशिष्टं कर्म शुभं शुभप्रकृतिरूपम् । पुनः कथम्भूतं ? निम्माअसम्मं ति सम्यक् निर्मितं सम्यक पुण्यप्रकृत्या निबद्धम् । पुण्यप्रकृतिर्यथा सा उच्चगोअ इत्यादि । सातवेदनीयं कर्म १ उच्चैर्गोत्रं २ मनुष्यद्विकं मनुष्यतिः ३ मनुष्यानुपूर्वी च । पूर्वी वर्ण्यते द्विसमयादिविग्रहेण भवान्तरं गच्छतो जन्तोर्वृषभनासिकारज्जुकगत्या अनुश्रेणिनयनमित्यर्थः ४ देवगतिः ५ देवानुपूर्वी ६ पञ्चेन्द्रियजातिः ७ औदारिक ८ वैक्रिय ९ आहारक १० तैजस ११ कार्मण १२ रूपाणि पञ्च शरीराणि औदारिक १३ वैक्रिय १४ आहारकाणां अङ्गोपाङ्गानि १५ वज्रऋषभनाराचसंहननं १६ समचतुरस्संस्थानं १७ वन्नचउक्का० शुभवर्ण १८ शुभगन्ध १९ शुभरस २० शुभस्पर्श २१ अगुरुलघुनामकर्म अङ्गं न गुरु न लहुअं इत्यादि २२ पराधातनामकर्म यतोऽपरेषां दुर्धर्षो भवति २३ उच्छ्वासनाम कर्म २४ रविबिम्बे आतपनामकर्म २५ अनुष्णप्रकाशरूपं = अणुसिणपयासरूवं चन्दे उद्योतनामकर्म २६ शुभविहायोगतिर्हंसादीनामिव २७ अंगोवंगनिअमणं निम्माणं कुणइ सुत्तहारसमं २८ । त्रसदशकमाह–तसबायर० त्रसनाम २९ बादर ३० पर्याप्त ३१ प्रत्येक ३२ स्थिर ३३ शुभ ३४ सुभग ३५ सुस्वर ३६ आदेय ३७ जस ३८ एतत् त्रसादिदशकं सुरायुः ३९ नरायुः ४० तिर्यगायुः ४१ तीर्थङ्करत्वं ४२ एवं द्विचत्वारिंशत पुण्यप्रकृतयो भवन्ति । प्रस्तुतमेवाह –

जं यत् कर्म पुण्यप्रकृत्योपार्जितं तीर्थकर चक्रवर्ति वासुदेव बलदेव अन्येऽपि महाराजादिरूपं निम्मिअसम्मं ति सम्यक् निर्मितं जयंमि त्ति जगति विश्वे सूरो त्ति सूर्यो दिनकरः अविरामं पिच्छंतो त्ति विरामरहितं विश्रामरहितं ।

---

१. 'अविरामं' : छाणी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मरत्नकरंडक

स्वोपज्ञटीका साथे लगभग दस हजार श्लोक प्रमाण काया धरावतो प्रस्तुत ग्रंथ महाराजा जयसिंह शासित श्रीदायिकाकूप नामना जिनमंदिरथी शोभता गाममां रचायो हतो.

दायिकाकूप गाममां हुंवट वंशमां अलंकारसमा जिंदक श्रेष्ठि अने अजित श्रेष्ठि नामे बे भाईओ रहेता हता. आ बन्ने भाईओए बनावेली पौषधशाळामां स्थिरता दरमियान वि. सं. ११७२मां आ ग्रन्थनी रचना करवामां आवी छे.

ग्रंथरचनामां आ. वर्धमानसूरिजीने तपस्वी अने यशस्वी उपाध्याय पार्श्वचन्द्रजीए सहयोग आप्यो हतो.

ग्रंथसंशोधनमां उपाध्याय पार्श्वचन्द्रजी उपरांत मुनिश्री नेमिचन्द्रजीए पण सुंदर योगदान आप्युं छे.

आ ग्रंथनो प्रथमादर्श लखवानुं पुण्यकार्य गणिवरश्री अशोकचन्द्रजी अने मुनिश्री धनेश्वरजीए कर्युं हतुं.

वीस अधिकारोमां वहेंचायेला प्रस्तुत ग्रंथमां आवतां अधिकारोनां नाम, पेटा विषयो, कथाओना नाम वगेरे 'विषयानुक्रम'मां विस्तारपूर्वक बताव्युं छे. अभ्यासीओनी सुगमता खातर भिन्न भिन्न टाईपोनो उपयोग कर्यो छे. अहीं अलग आपवामां आवेला 'विषयानुक्रम' उपर नजर नाखता साथे ज जणाई आवे छे के प्रस्तुत ग्रंथनुं नाम 'धर्मरत्नकरंडक'– धर्मरूपी रत्नोनो करंडियो–तद्दन यथार्थ छे.

ग्रंथना मूळ श्लोकोनी संख्या ३७६ थाय छे[1]. मोटाभागना श्लोक अनुष्टपछंदमां छे पण केटलाक अन्य छंदोमां पण छे.

श्लोक सरळ सुगम अने हृदयंगम छे. केटलाक श्लोको तो वांचता साथे समजाई जाय एवा सरळ छे. अने एवा सरळ श्लोकोनी व्याख्या करवाने बदले **श्लोकोऽयं स्पष्टः** लखी देवामां आव्युं छे.

मोटाभागना श्लोको ते ते विषयनां बेनमून सुभाषितो बनवानी क्षमता धरावे छे.

सामान्य रीते 'धर्मकरंडक' (ध. र. क.)नी बधी हस्तलिखित प्रतिओमां अवतरणिका पछी मूळ श्लोक के श्लोको अने पछी व्याख्या–टीका छे.

व्याख्यामां मोटे भागे श्लोकना प्रतीको लई पर्यायो आप्या छे. सुगम शब्दोना पर्यायो नथी आप्या. अने क्यारेक संपूर्ण श्लोकनी सुगम होवाना कारणे व्यख्या नथी करी.

---

१. जो के ग्रंथना अंतिम श्लोकमां कुल श्लोक ३३५ थता होवानुं जणाव्युं छे.

ग्रथितेऽपि हि विज्ञेयं श्लोकानां सर्वसङ्ख्यया ।
पूर्वापर्येण सम्पिण्डय पञ्चत्रिंशं शतत्रयम् ॥ ३७६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेत्रण स्थळे व्याख्या विस्तृत छे. व्याख्यामां आगमादि ग्रंथोना अनेक साक्षीपाठो पण आपवामां आव्या छे. (जुओ श्लोक ४७–४८, २४४–४५नी व्याख्या)

क्यारेक मूळ श्लोकना पाठ करतां टीकामां अपायेला प्रतीकनो पाठ भिन्न होय छे. टीका स्वोपज्ञ छे. एटले ग्रंथकारने ज पाछळथी फेरफार करवानो विचार थयो होय एम बनवाजोग छे. अन्य ग्रंथोमां पण आवुं बनतुं होय छे. अमे ज्यारे टीकागत पाठ स्वीकार्यो छे त्यारे टिप्पणमां एनो निर्देश अने हस्तप्रतोना पाठ आपी दीधा छे. (जुओ पृ. १६३ टी. १, पृ. २१७ टी. १, पृ. २१८ टी. १, पृ. २२९ टी. १ वगेरे.)

एक स्थळे एवुं बन्युं छे के त्रण श्लोकोनी टीका छे पण मूळ श्लोको नथी. अमे टीकागत प्रतीकोना आधारे मूळ श्लोको गोठवीने चोरस ब्रेकेटमां आपी टिप्पणमां निर्देश कर्यो छे. (जुओ श्लोक नं. ८८–९०, पृ. १४१ टी. १)

एक स्थळे एवुं बन्युं छे के मूळ श्लोक (१४७)ना स्थळे पूरो श्लोक नथी. अने टीकामां १४५मी गाथानुं प्रतीक आपी **श्लोकास्त्रयः सुखावबोधा एव** एम लखी दीधुं छे. आवा स्थळे श्लोकनी पूर्ति करवानुं अमारी पासे कोई साधन न होवाथी ते अधूरो ज मूकवो पडयो छे. (जुओ पृ. १९३ टी. १)

आवुं ज १८०नी टीका पूरी थया पछी **अनम्रः पर्वताकारः इति श्लोकः सुगम एव (पृ. २२०)** लख्युं छे, पण मूळ श्लोको (१७२–१९९) मां आवो कोई श्लोक छे नहीं. अने अना विना ज अवतरणिकामां (पृ. २१७) जणावेल **श्लोकानां सप्तविंशतिः** थई रहे छे. एटले आ श्लोक ग्रंथकारे पाछळथी काढी नाख्यो होय तेम बने. (पृ. २०० टी. १)

ग्रंथमां चर्च्य विषयो प्रचलित अने जाणीता छे. अष्टप्रकारी पूजाना क्रम अने प्रकारमां वर्तमानमां प्रचलित क्रम अने प्रकार करतां फेरफार छे. **मूलशुद्धिप्रकरण**नी गाथा २१मां पण अहीं ध.र. क. (श्लोक ५०–५८)मां निर्दिष्ट क्रम अने प्रकार मुजब ज वर्णन छे. एटले आ क्रम अने प्रकारनी परंपरा प्राचीन होवानुं जणाय छे.

ग्रंथमां के कथामां आवतां विषयोने पुष्ट करवा माटे अवतरणो, साक्षीपाठो पण घणां स्थळे आप्यां छे. पांचसोथी वधु अवतरणोमां प्राकृत गाथाओनी संख्या मोटी छे. अवतरणोनां मूळ स्थान ज्यां ज्यां शोधी शकायां छे त्यां त्यां ते ते ग्रंथोनां नाम आदि आप्यां छे. अवतरणोने भिन्न टाईपमां मुद्रित करवामां आव्यां छे. अवतरणोनी अकादारादिसूचि परिशिष्ट ३मां आपवामां आवी छे.

अहीं ध. र. क. मां आवतां अवतरणो **मणोरमाकहा** वगेरेमां पण मळतां होय छे[२].

---

१. विशेष माटे संपादन–उपयुक्त ग्रंथसूचि जुओ.

२. जेम के ध. र. क. पृ. ९६ गाथा ८२, मणोरमाकहा पृ. ३२५ गाथा ९९७.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टीकामां अने कथामां प्रसंगे प्रसंगे संस्कृत–प्राकृत–अपभ्रंशमां सुंदर सुभाषितो, अन्य ग्रंथोनी साक्षीओ आव्या करती होय ज छे. केटलीक विशेष उल्लेखनीय बाबतो ग्रंथमां आवे छे ते आवी छे :

नवकारमहिमा प्राकृत पद्यमां (पृ. ४३–४४)
प्रतिष्ठाविधिवर्णन प्राकृत पद्यमां (पृ. ३१–३५)
जिनस्तुति (पृ. ४१, १२६–२७)
अंतिमआराधनानुं वर्णन (पृ. ४५–४७)
धर्मदेशना (पृ. ५२–५३, ५५–५६, ९९, ११४–१५, ११८)
श्रावकधर्मवर्णन (पृ. १०८–१०९)
गुरुवर्णन (पृ. ५५)
विद्याप्रसंसा (पृ. १७८)
वसंतऋतुवर्णन (पृ. ६६)
सरोवरवर्णन (पृ. ८२)
प्रवज्यावर्णन गद्यमां (पृ. ९२–९३)
नरकवर्णन गद्यमां (पृ. ११४)
दारिद्र्यनिंदा (पृ. १०२, ३७२)
चार गतिनुं वर्णन (पृ. २७९–८०)
स्त्रीमोहवर्णन (पृ. १८०)
आर्यदेश २५॥ (पृ. ८)
अशरणभावना (पृ. २१३)

कथाओ

ध. र. क. मां मूळ श्लोकनी व्याख्या कर्या पछी विषयने वधु श्पष्ट करवा माटे प्रसंगे प्रसंगे कथाओ मूकी छे. दस हजार श्लोकप्रमाण ग्रंथनो सिंहभाग – ७००० श्लोकप्रमाण–कथामां रोकायो छे.

मोटाभागनी कथाओ सरळ पद्यमां छे. कवचित् आलंकारिक उपमा अने श्लेषनो प्रयोग पण छे. मोटाभागना पद्य अनुष्टुप छंदमां छे. कवचित् भिन्न भिन्न छंदो पण छे.

केटलीक कथाओ गद्यमां छे. जेम के १दुर्गतानारीकथा (पृ. १३२–३), श्रेणिकदृढता

---

१. दुर्गतानारीकथामां पंचाशक टीकानी शब्दशःछाया छे. (पृ. १३३ टी. १) अमृतमुखास्थविरानी कथामां मणोरमाकहा टिप्पण गत प्राकृत कथानुं संस्कृत रूपांतर– शब्दशः संस्कृत छाया जोवा मळे छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रसंग (पृ. १५३–१५४), कुलवालककथा (पृ. ३३४–४), चोरकथा (पृ. ३८९–९०) अमृतमुखास्थविराकथा (पृ. ३७८, ३८६) जेवी केटलीक कथाओ गद्यमां छे. अने केटलीक पद्यकथाओमां पण वच्चे वच्चे गद्य आवे छे. (पृ. २३८–३९, २७९–८०)

गद्यवर्णन पण प्रासादिक शैलीनुं छे. सिद्धर्षिगणिना उपमितिभव प्रंपचो कथा गद्यनी याद अपावे तेवुं. क्यांक समासप्रचुर लांबा आलंकारिक वर्णन पण छे. (पृ. ४०२)

केटलीक कथाओ प्रसिद्ध होवाथी संक्षेपमां ज पूर्ण करी छे. शालिभद्रकथा (पृ. २६७ श्लोक १४), अभयकुमार (पृ. १५५ श्लोक २८), महावीर प्रभु जीवनप्रसंग (पृ. २३३–४ श्लोक १८).

फलसारकथा (श्लोक ४०० प्रमाण), नरकेशरीकथा (श्लोक ४१९) अने चित्रसंभूतिकथा (४४६ श्लोक) जेवी केटलीक दीर्घ कथाओ पण छे.

चालीसथी वधु कथाओमां २०थी वधु प्राचीन अने प्रसिद्ध ऐतिहासिक छे. दुष्प्रसहसूरि वक्तव्यतामां (पृ. १३९–४०) ईतिहासप्रेमीओने रस पडे तेवी विगतो छे.

अष्टप्रकारीपूजानो महिमा वर्णवती आठ कथाओ, नरचन्द्रकथा (पृ. १६४–१७२), आम्र–लिंबककथा (पृ. ३३५–३३८) वगेरे प्राचीन कथानी शैलीए लखायेली छे. 'मणोरमाकहा'मां पण अष्टप्रकारीपूजाना महिमा उपर अने अन्य विषयो पर पण प्राचीन शैलीनी कथाओ छे. बन्नेमां (ध. र. क. अने 'मणोरमाकहा'मां) फलपूजा उपर फलसारनी कथा छे. पण कथा तद्दन जुदी जुदी छे.

केटलीक कथाओमां केटलुंक साम्य पण छे. जेम के 'मणोरमाकहा'मां आवती तेजसारनृपकथानो प्रारंभिक अंश (पृ. २०४–२०७) ध. र. क. मां गंधपूजाना महिमा उपर आवती रत्नसुन्दरकथा (पृ. ५४–६३) जोडे साम्य छे. तेजसारकथाना पाछळना अंश जोडे (पृ. २०७–२१७) ध. र. क. गत दीपकपूजा महिमा उपरनी भानुप्रभकथा (पृ. ८०–९३) मळती आवे छे.

'मणोरमाकहा' ना प्रारंभमां आ. वर्धमानसूरिजीए ग्रंथगत कथाओ बाबतमां लख्युं छे के –

एसो कहापबंधो कओ मए मंदबुद्धिणा वि दढं ।
कत्थइ चरियसमेओ कत्थइ पुण कप्पियाणुगओ ।।

अमुक कथाओ प्राचीन चारित्रानुसार अने अमुक कल्पनानुसार रची छे. एटले आ कथाओ कल्पनानुसार बनी होवानो संभव छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रूपककथाओ

ध. र. क. मां केटलीक रूपककथाओ पण छे. मधुबिन्दुनी प्रसिद्ध कथा (पृ. १५–१७) अहीं केटलीक विशिष्टता अने विस्तार साथे जोवा मळे छे.

'जुगाइजिणिंदचरिय' पृ. १९मां आ कथा संक्षिप्तमां छे.

श्रेष्ठिपुत्रत्रयकथा(पृ. १८–२३)मां पिता द्वारा पुत्रोने अपायेली हितशिक्षा अने नीतिशास्त्रनी वातो मार्मिक छे.

रुद्रदेवनी कथामां कषायोनी भयंकरता बतावबा पात्रोनी सरस गूंथणी छे. (पृ. २२१–२२८) आ कथा 'जुगाइजिणिंदचरिय' पृ. १९८मां प्राकृत गद्यमां छे.

'वसुसार'नी कथा (पृ. १६८–६९) छाणामांथी रत्नो बनावबा वगेरे रसप्रद बाब छे. कथाना पात्रोनी छेल्ले उपनयमां समजण आपी छे. श्रेष्ठि=तीर्थंकर, वसुसार = पत्रक = जिनागम, भस्म भरेला वहाण = अशुचिमय काया वगेरे.

आ कथा 'मणोरमाकहा'(पृ. १६८–१६९)मां प्राकृत गद्यमां छे.

लोककथाओ

अहीं ध. र. क. मां केटलीक लोककथाओ पण छे. आ कथाओ लोकसाहित्यमां घणे ठेकाणे भिन्न भिन्न स्वरूपे जोवा मळे छे.

आठसो वर्ष पहेलां आ लोककथाओनुं स्वरूप केवुं हतुं ते जाणवा अने एनी प्राचीनता नक्की करवा माटे आ कथाओनुं अध्ययन उपयोगी बने तेवुं छे.

ताराचन्द्रनी कथा (पृ. १८६–१९१) अने रत्नचूडरास (रचना सं. १५०९ लगभग) अने रत्नचूडकथानक (रचना वि. सं. १५३०) वगेरेमां आवती रत्नचूडनी कथा[1] जोडे साम्य धरावे छे.

शुक अने सारिकाना मोढे वेद, पुराण वगेरेना हवाला आपी कहेवाती स्त्रीचरित्र अने पुरुषचरित्रनी कथाओ (पृ. ३४१–६१) जेवी कथाओ लोकसाहित्यमां विपुल प्रमाणमां नजरे चडे छे[2]. आने लगती स्वतंत्र रचनाओ पण 'सूडाबहोंतेरी', 'शुक्सप्तति' नामथी थयेली छे.

आमां काष्ठ श्रेष्ठिनी कथा (पृ. ३४३–४८) आवश्यक चूर्णि, आवश्यक दारिभद्रीय

---

१. विशेष माटे जुओ 'लोककथाना मूळ अने कुळ', ले. हरिवल्लभ चू. भायाणी. पृ. २३९–२५३, ३६१.

२. विशेष विगतो माटे जुओ, 'मध्यकालीन गुजराती कथाकोष', भा. १, प्र. साहित्य अकादमी. 'लोककथाना मूळ अने कुळ' (पृ. १०८–१३, ३६१–६२).

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

टीका, आवश्यकमलयगिरिटीका (आवश्यकनिर्युक्तिगाथा ९५९ नी टीकामां), नंदीसूत्रनी टीका, हेमविजयकृत कथारत्नाकर, उपदेशप्रासाद वगेरेमां पण मळे छे[३].

रत्नसुंदरकथामां (पृ. ५८–५९) पण स्त्रीचरित्रनो प्रसंग आवे छे. आ ज कथामां (पृ. ६०–६२) यक्षागारमां एकठा थयेला कार्पटिको द्वारा कहेवाती आश्चर्यजनक घटनाओनुं नजरे जोयेलुं बयान वर्णवायुं छे.

अमृतमुखास्थविराकथा (पृ. ३७७–८६) जेवी कथा लोकसाहित्यमां मीठी डोसी अने कडवी डोसीनी कथा तरीके जोवा मळे छे[४].

आ कथा अने एनी अवांतरकथाओ 'मणोरमाकहा'मां (पृ. ३५–४१) शब्दशः आ ज रीते प्राकृत गद्यमां छे.

शीलसुंदरीकथा (पृ. २८१–८५) 'मणोरमाकहा'मां (पृ. ८९ थी) प्राकृत गद्यमां छे. आ कथामां आवतां प्राकृत पद्यो 'मणोरमाकहा'मां पण आवे छे.

शीलसुन्दरीकथा आख्यानकमणिकोशवृत्ति, पंचशतीप्रबोध, शामळभट्टनी नंदबत्रीसी, नंदोपाख्यान वगेरेमां केटलाक फेरफारो साथे मळे छे[५].

आ उपरांत शुभसंग–कुसंग कथामां (पृ. २३४–२४०) आवती बे पेटा कथाओ, पिंगलाख्यान (पृ. १८२–१८९) वगेरेनां मूळ लोकसाहित्यमां होवा संभव छे.

---

३. विशेष माहिती माटे जुओ **लोककथाना 'मूळ अने कुळ' पृ. २३९–२५३, ३६१.**

४. जुओ **'लोककथाना मूळ अने कुळ' पृ. ७१–७६, १२९–३०, ३५०–५३.**

५. विशेष माटे जुओ **'लोककथाना मूळ अने कुळ' पृ. ११, ३०७–११.**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अज्ञातकर्तृक प्राचीन गूर्जर काव्य

धर्मसूरि–बारमासा

संपा. रमणीक शाह

बारमासा काव्यप्रकार प्राचीन गूजराती, राजस्थानी, हिंदी, बंगाळी आदि साहित्यमां शताब्दीओथी प्रचलित छे. प्राचीन गूजरातीमां तो ईस्वीसननी छेक बारमी – तेरमी शताब्दीथी बारमासा–काव्यो मळे छे. उपलब्ध बारमासा–काव्योमांनां मोटा भागनां जैन कविओए रचेलां छे. बारमासा मळे शृंगारपरक काव्य छे; परंतु जैन कविओए शृंगारनिरूपक बारमासा काव्य–प्रकारनो वैराग्यबोधक रचनाओमां विनियोग कर्यो छे.[१] जैनसाहित्यमां आवा शृंगार अने वैराग्य बन्नेने साथे वणी शकाय तेवो विषय धरावतां बे प्रचलित कथानको छे – नेमिनाथ अने राजीमतीनो विवाह–प्रसंग तथा स्थूलभद्र अने रूपकोशानो प्रणयप्रसंग. अने मोटा भागनां जैन बारमासा–काव्यो आ विषयने लईने ज रचायां छे. परंतु आ उपरांत केटलांक बारमासा–काव्यो गुरुनी स्तुतिरूपे पण रचायेलां मळे छे. आवुं एक विशिष्ट अने प्राचीन बारमासा–काव्य 'धर्मसूरि–बारहनावउं' (धर्मसूरि–बारमासा) नामे, पाटणना हस्तप्रत भंडारनी एक ताडपत्रीय हस्तप्रतमांथी मळी आव्युं छे. अहीं ते प्रथम वार प्रकाशित थाय छे.

पाटणना 'संघभंडार' नामे ओळखाता हस्तप्रतसंग्रहनी आशरे तेरमा के चौदमा शतकनी ताडपत्रीय प्रत नं. ५६ मां संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश आदिनी नानी मोटी २८ गद्य–पद्य कृतिओ संग्रहाई छे.[२] तेमां क्रमांक २०वाळी प्रस्तुत कृति पत्र २१६थी २२१ पर लखायेली छे. सूचिपत्रमां तेनुं नाम 'धर्मसूरि–स्तुति' आपेल छे. आ कृतिनी फोटोस्टेट नकल ला.द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर, अमदावादमां छे. तेना आधारे आ संपादन करवामां आव्युं छे.

प्रस्तुत काव्यना नायक आचार्य धर्मसूरि के धर्मघोषसूरि जैन परंपरामां प्रसिद्ध छे. राजगच्छना आ. शीलभद्रसूरिना तेओ पट्टधर शिष्य हता अने तेमनो समय ईस्वीसननी बारमी शताब्दीनो, लगभग ई.स. ११०० – ११७५ना अरसानो छे.

---

१. जुओ डॉ. हरिवल्लभ भायाणीनी प्रस्तावना, **प्राचीन–मध्यकालीन बारमासा संग्रह भा–१**, संपा. डॉ. शीवलाल जेसलपुरा, अमदावाद, १९७४.

२. **पत्तनस्थ प्राच्य जैन भाण्डागारीय ग्रन्थसूची,** भा. १. संपा. चीं. डा. दलाल, वडोदरा, १९३७, पृ. ३७०.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्कालीन राजस्थान तेम ज माळवाना राजेन्द्रो तेमने मान आपता. शाकंभरीना अजयराज, अर्णोराज तथा विग्रहराज चोथाने तेमणे प्रतिबोध्या हता तेवुं तेमना शिष्य–प्रशिष्यनी कृतिओमां नोंधायेल छे. अर्णोराजनी सभामां दिगंबर वादि गुणचंद्रने तेमणे हराव्यो हतो तेवो उल्लेख तेमां मळे छे. तेमणे सर्वे वादिओने हराव्या हता तेवो संप्रति संपादित काव्यनी १७ मी कडीमां सामान्य निर्देश छे. तेमना नामथी पछीथी 'धर्मघोष गच्छ' नामे स्वतंत्र गच्छ शरू थयो हतो. धर्मघोषसूरिनी स्मृति प्रखर हती अने पोणा प्रहरमां (छ घडीमां) तेओ ५००गाथा कंठस्थ करी शकता तेवी किंवदंती ते समये प्रचलित हती. प्रस्तुत काव्यमां कडी ९ मां आ वातनो उल्लेख मळे छे. आवा प्रतिभाशाळी काव्यनायकने काव्यमां भावपूर्वक अंजलि आपवामां आवी छे.

आ धर्मघोषसूरिना मुख्य शिष्योमां एक यशोभद्रसूरि हता, जेमणे 'गद्यगोदावरी' ग्रंथनी रचना करेली. प्रस्तुत काव्यमांना 'जससूरि' ते आ ज आचार्य जणाय छे. आ यशोभद्रसूरिना शिष्य आ. रविप्रभसूरिए धर्मघोषसूरिनी स्तुतिरूपे लखेल एक लघुकाव्य उपरोक्त ताडपत्रीय प्रतमां 'धर्मसूरि–बारमासा'नी पूर्वे ज लखायेल मळे छे. आ हकीकत परथी तथा काव्यमांना वर्णन वगेरे परथी कल्पी शकाय छे के प्रस्तुत बारमासा काव्य पण आ. धर्मघोषसूरिना बृहद् शिष्य– प्रशिष्य परिवारमांना ज कोई मुनिए रच्युं हशे. साराये काव्यनो ध्वनि एवो छे के ते समये यशोभद्रसूरि विद्यमान छे अने कदाच धर्मसूरि पण.

काव्यनी भाषा गुजराती – राजस्थानी जुदी पडया पूर्वेनी उत्तरकालीन अपभ्रंश, जेने विद्वानोए 'प्राचीन गूर्जर भाषा' नाम आप्युं छे, ते छे. विविध मात्रामेळ छंदोना यथायोग्य उपयोगथी आणेली गेयता, सुकोमळ मधुर पदावली, चित्रात्मक वर्णनो अने भावाभिव्यक्तिनी कुशळताने कारणे गुरुस्तुति रूपे रचायेल होवा छतां आ बारमासा काव्य प्राचीन गूर्जर काव्योमां अनोखी भात पाडतुं काव्य छे. *

काव्यनी फोटोस्टेट नकलनो उपयोग करवा देवा माटे तथा प्रकाशन करवानी संमति माटे हुं ला.द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरनो आभारी छुं.

---

* एक ज हस्तप्रत परथी आ काव्यनुं संशोधन कर्युं छे. मूळनी अशुद्धिओ पादटीपमां नोंधी छे. पाठशुध्धि माटे प्रा. हरिवल्लभ भायाणी साहेबनी सहाय माटे तेओश्रीनो अत्रे आभार मानुं छुं.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धमसूरि – बारहनावउं

(१)

तिहुयण–मणि–चूडामणिहि, **बारहनावउँ धमसुरि**[१]–नाहह ।
निसुणहु सुयणहु नाण–सह, पहिलउँ **सावण**–सिरि फुरिय ॥ १

कुवलय–दल–सामल [२] धणु गज्जइ, नं महल–मंडल–झुणि छज्जइ।
विज्जुलडी झबकिहिं लवइ ॥ २

मणहरु वित्थारेवि कलावु,[३] अन्नु करेविणु कलि–केकारवु ।
फिरि फिरि नाचहिं मोरला ॥ ३

मेइणि हार हरिय छवि[४] णवर, त्री–जण भय उडिढय[५] नीलंबर ।
वियसिय [६] नव मालइ–कलिय ॥ ४

हलि ! तुह कहियइँ गुणहँ निहाणु, **धमसुरि** अनु **जससूरि** समाणु ।
अन्नु [७] न अत्थि को वि जगि ॥ ४

इहु प्रिय ! वरिसंतउ न गणिज्जउ, [८] जायवि **धमसुरि**–गुरु वंदिज्जउ ।
किज्जउ माणुस–जम्मु सफलु ॥ ६

(२)

वंदंतह **धमसूरि**–गुरु[९], **भाद्रव**–मासु पहूतु[१०] ।
मयगलि जिम्व गुलुगुलुवि घणि, जलु किउ महिहि प्रभूतु ॥ ७

[११] उहु सहि ! वियसिउ केउडउ, सेरउ धवल–विलासु ।
जससुरि–नयण–पराभविउ, नं सेवइ वणवासु ॥ ८

पउणि पहरि जिण पंच–सय, पढिविणु[१२] विम्हिउ लोउ ।
तसु धमसुरि–गुरु–तणिय वड, हुयउ न होसइ कोउ [१३] ॥ ९

मूल पाठ : १. धमुसुरि २. सामण ३. कलासु ४. छमि पू. उड्डिय ६. वियलिय ७. अनु ८. गणिज्जइ ९. गुरू १०. पहूत्तु ११. तुहु १२. पढिविणि १३. कोइ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गुज्जरि बोलइ चालु प्रिय, मज्झ मणोरह पूरि ।
देसण सुणहु सुहावणिय, वंदेविणु **जससूरि** ॥ १०

(३)

महियलि विमलउ सयलु जलु, वय पहुतउ **आसोय**-मासु ।
धमसूरि-केरउँ चित्तु जिम्व, वय निम्मलु ठिउ आगासु ॥ ११

चंदा चंदा चंदडा, वय[१४] चंदिणडउं करि चंगु ।
मंडि-न महि तुहुँ हंसडा, वय[१५] भमरुला कमलिहिं रंगु ॥ १२

जससुरि धवलह पम्हलहँ, वय कुवलय-दल-सरलाहँ ।
साव - सलोणह तुम्ह तणहँ, वय बलि-किज्जउँ नयणाहँ ॥ १३

वलि वलि निम्मल रलिय-रूव, वय माणिकथारी[१६] रत्ति ।
प्रिय पलाणि-न सांढडिय, वय वंदहु **धमसुरि** भत्ति ॥ १४

(४)

कातियडउ रलियावणउ, मासु पहुतउ लोए ।
[१७]पिल्लि-न रहु प्रिया ! देखिवउ, गुरु **धमसुरि**[१८] [.....] ॥ १५
हेलि ! ए गुरु धमसूरि[१८] .....
[.....] [.....] ।
पाकउ कलम-कियार कणु, उहु सूयडउ चुणेइ ॥ १६
पिल्लि-न रहु.....
खिल्लि खाउलु रासडउ[१९], नाचिवि डोल्लिवि बाह ।
वादिय सवि हाराविया[२०], **धमसुरि** विद्धिय राह ॥ १७
पिल्लि-न.....
दीहर-सिह दीवालियहिं, दीवडुला पजलंति ।
जससुरि-केरा विमल गुण, तिहुयणु धवलु करंति ॥ १८
पिल्लि-न.....

---

१४. वय चडावय चंदिण० १५. भमरुल्ला कमलिहिं भरजु । १६. रानि १७. पेल्ले न १८. धामसूरी १९. रामडउ २०. हाराविय

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहसाउल मइं चल्लिवइं,[२१] किय भावीज खन्न ।
वीख म खंचिसि करहडा, वंदिसु **जससुरि** धन्न [२२] ॥ १९
पिल्लि–न.....

(५)

कमलायर मउलिय सयल, मगसिर ए सिरि पइसारि ।
पूरि–न प्रियतम ! कोडु महु, चालि–न करहु पलाणि ॥ २०

जायवि **जससुरि**–पय नमहु, [.....] ।
धमसुरि–केरइ मुह–कमलि, सरसी ए किउ अवतारु ॥ २१
पूरि–न.....

भसल विउल परिमल बहल, रणजण[२४] ए सद्दु करंति ।
धमसुरि तुह सुंदर चरिउ, अनुदिणु ए नं गायंति ॥ २२
पूरि–न.....

[२५]छद्दंसण निन्नय करण, [२६]वादिय ए विहंडण वीर ।
जय जय सिलसुरि–पाटधर, धमसुरि ए तिहुयण – धीर ॥ २३
पूरि–न.....

(६)

[२७]बहिनि ए मणवण वासु ए , नासिवि माण–गइंदु जगि ।
पहुतउ पोसु सुसीहु ए , विरहिणि–हरिणि[२८] – हलोहलउ ॥ २४

कुंदह कलिय रुहंति ए , मालियडा तुहुँ वाडियहिँ ।
नं सिय–दंत हसंति[२९] ए , वियसिय पोस–सिरिहि तणा ॥ २५

समहरि ए सीउ पडेइ ए , [३१]झलझलइ अंगीठडिय ।
चाचरि ए कट्ठु करेवि ए., तापहिं नीधण लोकडा ॥ २६

---

२१. चंधिवहं २२. जसभुरि वउ । २३. जयवि २४. रणज्झण २५. छाद्दंसण २६. वदिय ए विरुडण धीर । २७. वहिली बहिनि णिए २८. हल्लोहलउ २९. हयंति ३०. तणी ३१. ज्झेलषढिलइ अगीठडिय ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊडिवि ए दाडिमडीय[३२] ए , चडि वायस बीजउरडिय ।
कुरुलइ ए महुरइ सादि ए , कहि महु धमसुरि – आगविउं ॥ २७

(७)

सीयडुलउ माहठु पडइ, रे रे सूया मासु पहूतउ माहु ।
दंत–वीण–वायणु करहि, रे रे सूया नीधण–जण–मिहुणाइं ॥ २८

दलिहिवि पयडिय सुरहि महि, रे रे सूया अंगइ ईसर लोय[३३] ।
वात न[३४] पूछहिं सिरखंडिहिं, रे रे सूया वहइ[३५] समालइ कोइ ॥ २९

कुंकुम–पंकिण पिंजरिहिं, रे रे सूया अंगइ ईसर लोय[३३] ।
वात न[३४] पूछहिं सिरखंडहिं, रे रे सूया ससमइ[(?)] सउ अग्घेइ ॥ ३०

घडिया–जोयण–लंघणीय, रे रे सूया तुह सा वाहि–न अज्ज ।
प्रिय आपणा वंदावे, रे रे सूया धमसुरि दुह–गिरि–वज्ज ॥ ३१

(८)

पिल्लिवि माहु[३६] रमाउलउ, मोरा पहुतउ फागुण – मासु ।
मोरा महुर–सरेण लविवि, धमसुरि – आगइ[३७] नाचु करेहिं ॥ ३२

[.....][.....] ।
जगु जिम्व जससुरि–तणउ जसु, मोरा चंदुडउ धवलेइ ॥ ३३

तह सोहहिं किंसुय–कुसुम, मोरा राता छवछवडाइं ।
विरहिय–हियय–महावणह, मोरा दहण–हुयास–समाइं ॥ ३४

बापुरि सहइँ कुसुंभडीय, मोरा रुयडी रातुडिलीय ।
नावइ थवकिय कुंकुमिण, मोरा सयल वि भुंहडलीय ॥ ३५

करहा ! तुहुँ रे वीखडीय, मोरा करि मिल्हेविणु काणि ।
मणि उमाहु करंति मइं, मोरा वंदावि जससूरि [.....] ॥ ३६

---

३२. दाडिवडीय ३३. लोया ३४. पूच्छहिं ३५. समालकेवइ । ३६. ममाउलउ ३७. ना करेहिं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(९)

चेत्तु पहूतउ मासडउ, रे मालियडा धमसुरि नंदउ लोइ ।
वणि वणि नव नव फूलडा, रे मालियडा झुंबक झुंबकडेहिं ।। ३७
हे हेलि म साहेलडि ए, झुंबक झुंबकडेहिं.....

राइणि[३८] झुंबकडिय सहहिं रे मालियडा पाकिय कंचण-तुल्ल ।
जय जय असभद्रसूरि गुरु, रे मालियडा सुय सुरि-सेहर-फुल्ला ।।३८
हे हेलि म.....

मलयानिल विलसेहिं भरु, रे मालियडा मउरिक अंबारामु ।
धमसुरि अनु जससुरि गुरु, रे मालियडा पुनिहिं लम्भइ सामि ।। ३९
हे हेलि म.....

ऊडि रे करह ! आजु तुहु, रे मालियडा [३९]करिविणु पंखडियाउ ।
पसरह धमसुरि नामह जिंव, रे मालियडा जससुरि अनु मुणिराउ ।।४०
हे हेलि म.....

(१०)

पयडउ इहु वइसाहु जगि, पहूतउ आजु गुडे वि ।
पाडल-परिमल-लोलुअलि, कलयलि पडहुलु देवि [४०] ।। ४१
सहि आजु सु वंदावि मइं, धमसुरि नाण - विलासु .....

सहि चालु-न ऊतावलिय, जससुरि-वंदण-रेसि ।
सहि मज्झ मणु ऊमाहियउ, धमसुरि - वंदण - रे सि ।। ४२
सहि आजु सु .....

पाकिय झुंबहिं उववणि, अंबा लुंब रि आज [४१] ।
कोडि वरिस जं करिज तुहुँ, जससुरि संजम-राज ।। ४३
सहि आजु सु.....

---

३८. ज्झंबटडिय ३९. करविणु पंखडियाहु । ४०. देइ ४१. अजो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरसिय[४२] कोइल कुहकुहइ, जित्थु सुकोमल – कंठ [४३] ।
करहा–आणण–रेसि तुहुँ, प्रिय ! बलावि–न वंठ ।। ४४
सहि आजु सु .....

वाडि [४४] झोक्कवि करह तुहुँ, खाविसु [४६]रुक्खा वेलि ।
देसु त दावणु तुज्झ हउं, वंदिवि धमसुरि सूरि (?) ।। ४५
सहि आजु सु.....

(११)

[४६]झुलकइ दारुण लूय, जिट्ठि [४७]झुवहिं (?) जुवइ वर ।
करि लडहिय सिंगारु, नवलु परि पहिरिवि चीवर ।। ४६

पीयलि करिवि सपिंड, पहिरि किन्नहिं चल कुंडल ।
४८ढलढलंत कंकण–सणाह, हत्थिहिं पुण हत्थल ।। ४७

नवसरु मोत्तिय – हारु कंठि कलकंठि ठवेविणु ।
पाल विसाल चलंत चयलु, पायहिं पहिरेविणु ।। ४८

चालि–न उतावली सहिय, पुरि पुरि विहरंतउ ।
जायवि धमसुरि नमहु सु, पुणु जससुरि गुणवंतउ ।। ४९

(१२)

माणिणि – माण – महंतु, मयगल –मउ मोडिवि ।
महि – मंडलि वणि पत्तु [४९], आसाढ सु केसरि ।। ५०

मेहुडलइ नवि गयणि घुडुक्कइ, तहिं खणि विरहिणि–हियउं खुडुक्कइ।
पसरिउ इंद्रधणु फुड फारु, किउ [५०] विजलिय तरल–झबकारु ।। ५१

विदलिय–कंद केलि – कपणु [५१] लाविय तणु ।
[५२]विफुरिउ पयणु तवहु दाहिण रवि – संदणु ।। ५२

---

४२. केइल्ल डुहडुहइ ४३. कंठो ४४. ज्झोक्कवि ४५. रुखा ४६. ज्झुलकइं ४७. ज्झुवहिं जुवय वर । ४८. ज्झलज्झलंत ४९. पत्तो ५०. विज्जलिय तरल ज्झलकारू । ५१. लालिय ५२. वफुरिउ पवयषु पयदट्टो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[५३]ऊडिय चडि वायस खज्झूरि, लवि महुरइं सरि जोइवि दूरि
आवंतउ कहि धमसुरि–नाहु, पहुचि जिम्व तसु वंदण जाहु ।। ५३

(१३)

अड्ढाइय – वरिसेहिं, जसु लोए समागमु ।
अहिय – मासु संपत्तु [५४], मास हिय – मणोरमु ।। ५४

तहिं वंदउं जससुरि सुहकारु, तवसिरि – कन्नवयंस पयारु ।
धमसुरि – बाहर – नावउं संतह, हरउ दुरिउ सुह करउ पढंतह ।। ५५

विन्नत्तिय निसुणेहि, सासण–दिवि सायरु ।
नंदउ धमसुरि लोए, जा चंद – दिवायरु ।। ५६

।। बारह – नावउं समत्तं ।।

---

५३. ऊविय ५४. संपत्तो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धर्मकृत

सुभद्रा–सती–चतुष्पदिका

(अनुमाने ई.स. १२१० नी आसपास)

कनुभाई शेठ

प्रास्ताविक

प्राचीन – मध्यकालीन गुजराती साहित्यमां विकसेला अनेक काव्यप्रकारोमां 'चतुष्पदिका' (चोपाई) पण एक नोंधपात्र प्रकार छे. चतुष्पदिका–चोपाई घणीवार 'रास' प्रकारना पर्याय तरीके पण उल्लेख पाम्यो छे. नेमिनाथ चतुष्पदिका (ई.स. ? ए गुजराती साहित्यनी प्रथम चतुष्पदिका कृति छे. अत्रे, 'धर्म' कविनी कृति **'सुभद्रा सती चतुष्पदिका'** सपरिचय प्रकाशित करी छे.

प्रत परिचय अने संपादनपध्धति

प्रस्तुत कृतिनुं संपादन प्राप्त एकमात्र प्रत परथी करवामां आव्युं छे. स्व. अगरचंद नाहटाना (पोथी क्रमांक २१८) संग्रहमां रहेली एक प्राचीन गुटका प्रकारनी हस्तप्रतमां ते पत्र क्रमांक १८८–१९१ पर प्रस्तुत कृति उतारेली छे. प्रतनो पाठ कायम राख्यो छे. क्वचित् सुधारो के वधारो ( ) कौंसमां मुक्यो छे.

काव्यना कर्ता : धर्ममुनि

प्रस्तुत कृतिना कर्ता धर्ममुनि होवानुं काव्यना अंते मळता उल्लेख परथी कही शकाय. 'सुभद्र मंदिर पहुती जाव, सासू ससूरऊ हरखिउ ताव, जिणवर धंमु करहु ए कवित्ते, जिन–शासण हुइ पर जयवंतो ४०

धर्मे रचेली अन्य बे कृतिओ 'स्थूलिभद्रास'[१] अने 'जंबूस्वामिचरिय'[२] मळे छे. ते आ ज कविनी रचना होय तेम लागे छे. केम के आ त्रणे कृतिओ एक हस्तप्रतमां सचवायेली छे. जो के अत्रे नोंधवुं घटे के आ कृतिनी भाषा एटली प्राचीन रही नथी.

जं फलु होइ गया गिरनारे, जं फलु दीन्हइ सोना भारे,
जं फलु लखि नवकारिहि, तं फलु सुभद्रा–चरितिं सुणिहिं १.

---

१. प्राचीन गूर्जर काव्य संचय. संपा. ह. चु. भायाणी अने अगरचंद नाहटा.

२. प्राचीन गूर्जर काव्य संग्रह. संपा. सी. डी. दलाल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दियइ घणु छह दरिसण श्रवइ, सुभग महासइ लाखणु कवइ,
पहिली सरसति जीभह लग्ग, बंधु तणा तुहु दखउं मग्गा.
२.

तासु पसाइ कवितु हुइ घणइ, भणइ चरितु सुभद्रा तणउ,
चंपा-नयरि कहउं विचारो, सुभद्र-महासइ निवसइ नारे.
३

धरम - काजि जसु हरखितु चीतो, भवियहु निसुणउ कउनिगवीतो ?
हाथ पाय पखालइ अंगी, तहिणा धरमह नाही भंगो.
४

नेमिसरी-सी देहुरी जाइ, नीका कुसुमह पाछीं भरइ,
जिणु आराहइ चोखइ मंनि, एकवार सो भक्खइ अन्नु
५.

अंबिल निवी करइ उपवासु, तपु तपेइ सा बारह मासु,
श्रावकनी छइ उत्तम जाति, जइसी निम्मल पुन्निम-राति
६.

महेसरी घर परिणिय सा ए, पीहरवाटहं धरमु करे ए,
सासुय पभणइ संभलि वहुए, अवर धरमु तुदु छंडहि सहुए.
७.

अम्ह धरि देउ नारायण अत्थि, वहुडिय जाह म पारसनाथे,
सुभदा पभणइ बे कर जोडि, सुर आवहि तेतीसउ कोडि.
८.

संभलि सासु अक्खउ एहो, जिणवर समउ न अच्छइ देओ,
तेउ कोविहि सासू परजलई, जाणहु धिउ वइस करि ढलइ
९.

मणिहि माहि तिनि धरियउ रोसु, एहइ कोवि चढावि मु दोसु,
मुणिवरु एकु संसारह भग्गहु, अति घणु तापु तपला लग्गउ.
१०.

कठइ देह तसु मनि नवि ढलए, वीस विस्वा तसु संजम पलए,
पंचेन्दिय तिणि मलियउ मानु, काया कष्टु किधउ अप्पाणु.
११.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रानिहि जाइवि कवसगु देइ, मासह पाखह सो पारेइ.
X X X X X X X X X X X X X X X X X X
१२.

वाउ वाइ तह कोरणु धणउ, मुणिवर अंगहि पडियइ तिणउ,
सोनवि हत्थिहिं देठउ करए, खरउ दुहेलउ आंखितहझूरए.
१३.

पूरिय अवधि चलिउ तहि ठाए, कवणह नयरिय विहरण जाए,
अवरि न गइयउ चंपा पइठउ, अंखहि झरंती सुभद्रा दीठउ.
१४.

सुभद्रा मणइ माह चिंतिंती, आविउ मुणिवरु तह विहरंती,
वडिय भगति कीयउ विहरणउ, सुभद्रा अंखहि झडपिउ तिणउं
१५.

सासू हूती जीमत बैठी, त्रिणंउ लिपंति सुभद्रा दीठी,
विकलपु वसियउ मन्नह मांहिं, वहुडी रहिसिमपीहरि जाहि
१६.

सुभद्रा ए भणई संभलि माए, नीकरु वयणु कि सहणउ जाए.
कवणि काजि तुम्हि कीन्हउ रोसो, अम्हह काइं चढावि दोसो
१७.

वंदइ देव गुणइ नवकारा, नीरु गलंती त्रन्नि वेवारा,
महसइ महसइ कहइ न आए, पाच्छिय लोवणु देहुरि जाए.
१८.

अम्हि दीठउ तुम्हारउ चरिउ, धमियउ सोनउ फूकह हरिउ,
तउ महसइ निंदइ अप्पाणु, ता किवे पुहेविदि ऊगेइ भाणु.
१९.

सुभद्रा भणइं जइ वरतइ धंमु, पाणिउ अन्नु अनेरइ जम्मु.
सुभद्रा भणइं न पीहरि जाउं, महुरि चडाविउ एवडु नाउ.
२०.

सासू ससरासु न मिलेहो, भणइ महासइ मइं सु कहे हो,
खूणो भीतरि छइ लंघती, सासू नणदउला लजंती.
२१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुभदा हूया तिन्नि उपवास, गुणि नवकारह लकळ सहस्स
सासणदेवति आईय जक्ख, अंबिकदेवी हुइय परतक्ख.
२२.

दूक्खहं रयणिं छइ अधराति, सासणदिवि अनुसुभद्रावाति,
चउविह धम्मह हउं सक्खाई, महसइ चिंत म करिजहु कांई
२३.

सासणदेवि भणिउ सतु तोलि, चंपा ढाकिसु चारिउ पउलि,
नरह नरिंद नाही पाडि, मइ दीन्ही को सकइ उघाडि.
२४.

सासणदेवि ति चडिय विमाणि, जाइ देवि आपणइ सुठाणि,
सुभद भणइं दीठु जंजालो, एकवार जइ उतरइ आलो.
२५.

प्रह विहसी जउ हूवउ रोलो, नयरि तणिय न उघडहि पउले,
ते नवि प्राणिहि पाछी सरहिं, आरडु भरेडु गाविउ करवि.
२६.

सासणदेवि ति कहिउ विचारी, सूतु कंताविज कोइ कुमारी,
कूवह जलु चालणि काढिजे, तिन्नि पऊलि जाइवि छांटिजे.
२७.

गयउ वहावउ वेगिहि रायवाला रोविहिं चंपा माहिं,
पउलि न उघडहि हुयउ विहाणु, जे वेगि तोलिवि जोयउ पाणु.
२८.

तक्खणि नरवइ चडिउ तुखारे, महंता गुपतिय वात विचारे,
धूप कडछू पलेकरि धरिउंहू, देवति दाणव पाछा करहू.
२९.

होवे दियते वेदि तेडावहू, नयरी माहइ होमू करावउ,
जव तिल धीपइ सरिस होमु, जाव न लग्गहिं गयणिहिं धूम.
३०.

तेखणि महंतउ लागउ भणउ, नाही पाडु को होमहं तणउं,
बुध्धि अनेरी कीजइ काए, पडहु दीयावहु नगरह माहे.
३१.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेगि चाचरि वाजिउ डागरउ, चंपा पउलि कु पाछी करउ
करउ कोइ अम्हारउ काजो, नरवइ भणइ दिवउ अधराजो.
३२.

सुभद्रा जइ छीतउ डागरउ, नरवइ राजु धणेरउ करउ,
अवर देसि जले धंधोले, सील –. प्रभावि उघाडीसु पउले.
३३.

धरि थकी सासू ककळरइ (?) विजउ पवाडउ सुभद्रा करइ,
अउगी आछु म बोलिसि माए, तुह वयणिहिं महु हियइ दाहो.
३४.

सात–वरीसी तेडिप बाला, सूतु कंतावण लागी ताळा,
काचइ तारुणि बांधी चाळणी, सुभद्रा कूवा ऊपरि वूणी(?)
३५.

चाबणियह जउ पाणिउ धरेए, तिन्नि पउलि ऊघाडी करए,
लक्खणु कवितु न लंगी घडी, सुभद्रा सतहिं पउलि उघडी.
३६.

तक्खणि राउ रळियातु भयउ, तिणि वेगिहि आणिउ हाथियउ,
गयवर ऊपरि ठवियउ पाउं, आपुणु पालउ चलियउं रउ.
३७.

सुभद्रा सती बोलइ तिहि ठाए, चउथी पउलि उघाडउ काए,
राउ बुलइ सुभद्रा संभलइ, अवर महासति तुह विन तोलइ.
३८.

मेघाडंबर धरियहि छत्ता, आगइ नायत जादिंति पत्ता,
करहि कल्याणु भाट नगारी, सूध तालु तसु सुभद्रा पडी (?)
३९.

मिलिय सुवासिणि मंगलु गायहि, धवल दिपंता बकुया –जाहि
हूय उछव नगरी मज्झारे, सुभद्रा पंहुती सीहदुवारे
४०.

सुभद्रा मंदिरि पहुती जाव, सासू ससरउ हरखिउ ताव,
जिणवर धंमु करहु ए–कवित्ते, जिण–सासणु हुइ पर जयवंते.
४१.

पढहि गुणहि जे जिणहरि देहिं, ते निश्चइ संसारु तरेहि
सुभद्रा–सती–चरितु संभलहि सिध्धि सुक्खु लीलइ ते लहहिं.
४२.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संशोधन–वर्तमान

१. जीवसमासप्रकरणम्

मूळ – प्राकृत. वृत्ति : मलधारि हेमचन्दसूरि–रचित.

वृत्तिकारे पोते स्वहस्ते लखेली गणाती सं. ११६५ नी ताडपत्रीय पोथी(शान्तिनाथ ताडपत्रभंडार – खंभात)ना आधारे पाठसंशोधन–पूर्वकनुं संपादन; हाल–प्रकाशनाधीन.

सं. पं. शीलचन्द्रविजय गणि.

२.– जीवसमासप्रकरण

सटीकनुं विस्तृत गुजराती भाषांतर.

भाषांतरकर्ता – स्व. पंडित चन्दुलाल शिनोरवाळा मास्तर. स्व. आचार्य श्रीविजयोदयसूरिजीना मार्गदर्शन हेठळ दायकाओ अगाउ थयेला आ विस्तृत विवेचननुं, ताडपत्रीय प्रतिमां मळेला शुद्ध पाठोना आधारे संपादन.

हाल – प्रकाशनाधीन. **सं. पं. शीलचन्द्रविजयगणी.**

३. प्रबन्ध–चतुष्टय

संपादकः र. म. शाह

४. जैनदर्शन अने सांख्ययोगमां ज्ञान–दर्शन विचारणा. लेखिका : जागृति दिलीप शेठ. आ ग्रंथ मुद्रणस्थ छे. गुजरात युनिवर्सिटीनी पीएच. डी.नी पदवी माटे मान्य थयेलो आ महानिबंध छे. तेनुं जे कंई नूतन प्रदान छे तेनो आछो ख्याल अही आपवामां आवे छे. (१) सांख्ययोगसंमत अने जैनदर्शनसंमत ज्ञान–दर्शननुं तुलनात्मक अध्ययन अहीं सौ प्रथम रजू थयुं छे. (२) सांख्ययोगनी ज्ञान–दर्शननी विभावना जैनदर्शननी ज्ञान–दर्शननी विभावनाने समजवामां केटली सहायभूत छे तेनुं निदर्शन कर्युं छे. (३) जैनसंमत आत्मा सांख्ययोगसंमत आत्मा (पुरुष) साथे साम्य नथी.

५. वर्धमानसूरिकृत 'धर्मरत्नकरण्डक' मुनि मुनिचंदविजय वडे संपादित थई शारदाबेन चिमनभाई एज्युकेशनल रिसर्च सेन्टर, अमदावाद तरफथी प्रकाशित थई चूक्युं छे. ए ज सेन्टर वडे 'निग्रंथ' नामक संशोधन–वार्षिक टूंक समयमां प्रकाशित थशे.

'अनुसंधान'–१, पृ. ४१ उपर आपेली माहिती नीचे मुजब सुधारी लेवानी छे.

'कर्मप्रकृति'ना संपादक मुनि दिव्यरत्नविजय छे. गुजराती पदार्थसंग्रहकार मुनि अभयशेखरविजय छे. 'धर्मसंग्रहणी'–भाग बीजाना अनुवादक मुनि अजितशेखरविजय छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूरक नोंध

क्रमांक पृ. १४, ११४, १४०, १६८, १७३, २१८ ए उदाहरणो प्रा० वा० म० कुलकर्णीए ओळखाव्यां हतां, जेनो प्रा. पंडयाए अने में जे ओळखाव्यां छे तेमां समावेश थई जाय छे. प्रा. कुलकर्णी तरफथी माहिती पाछळथी मळी. तेमणे ओळखावेलां नवां उदाहरणो नीचे नोंध्यां छे :

पृ. २७, क्रमांक १४ नीचे उमेरो :

'शृंगारप्रकाश', पृ. १००१ अने १००३ उपरनी गाथा. जुओ कुलकर्णी, Prakrit Verses, भाग २, पृ. ४६८, क्रमांक १०५०.

पृ. ३२, क्रमांक ११४ नीचे उमेरो :

गाथा० ९६८. 'ध्वन्यालोक' अने 'काव्यप्रकाश'मां उद्धृत.

पृ. ३३, क्रमांक १४० नीचे उमेरो :

सेतु० १, १० ('लायण्णं ने बदले 'विण्णाणं')

पृ. ३४, क्रमांक १६८ नीचे उमेरो :

सेतु० ६, २ (पाठां० दढपरिघट्ठं).

पृ. ३५, क्रमांक १७३ नीचे उमेरो :

सेतु० ७, ३६.

पृ. ३८, क्रमांक २१८ नीचे उमेरो :

'सरस्वतीकंठाभरण'मां तथा 'शृंगारप्रकाश'मां उद्धृत

जुओ कुलकर्णी, Prakrit Verses, १, पृ, २२७, क्रमांक ९९२.

पृ. ४०, क्रमांक २५९ नीचे उमेरो :

छट्ठो अंक, पहेलो संवाद.

पृ. ४०, क्रमांक २७४ नीचे उमेरो :

छट्ठो अंक, पद्य १, पछी छट्ठो संवाद.

पृ. ४१, क्रमांक २८१ नीचे उमेरो :

'अभिज्ञानशाकुंतल', छट्ठो अंक प्रवेशकमां पद्य १ पछी.

पृ. ४१, क्रमांक २९२ नीचे उमेरो :

'अभिज्ञानशाकुंतल', छट्ठा अंकना प्रवेशकमां.

हेमचंद्राचार्ये जे आर्ष विशिष्टताओनो स्थाने स्थाने निर्देश कर्यो छे, तेनो विचार पिशेल, याकोबी, नित्तीडोल्ची, रिषभचंद वगेरेए कर्यो छे. पण ते स्वतंत्र चर्चा मागी ले छे.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कलिकालसर्वज्ञ श्री हेमचन्द्राचार्य नवम जन्मशताब्दी स्मृति शिक्षण-संस्कार निधिनां प्रकाशनो

त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरितमहाकाव्य-ग्रंथ १ (पुनर्मुद्रण)	संपा. मुनि चरणविजयजी	१९८७
,, ग्रंथ २	संपा. मुनि पुण्यविजयजी	
Studies in Deśya Prakrit	H. C. Bhayani	1988
हेमसमीक्षा (पुनर्मुद्रण)	मधुसूदन मोदी	१९८९
हेमचंद्राचार्यकृत अपभ्रंश व्याकरण (सिद्धहेमगत) (द्वितीय संस्करण)	संपा. हरिवल्लभ भायाणी	१९९३
विजयपालकृत द्रौपदीस्वयंवर (पुनर्मुद्रण)	आद्य संपा. जिनविजयजी मुनि संपा. शान्तिप्रसाद पंड्या	१९९३
कलिकाल सर्वज्ञ श्री हेमचंद्राचार्य स्मरणिका		१९९३
अनुसंधान-१ (अनियतकालिक)		१९९३
अपभ्रंश व्याकरण (हिन्दी अनुवाद)	प्रा. बिन्दु भट्ट	मुद्रणाधीन
आवश्यक-चूर्णि	संपा. मुनि पुण्यविजयजी सहायक रूपेन्द्रकुमार पगारिया	,,
प्रबंधचतुष्टय	संपा. रमणीक शाह	,,

नेमिनंदन ग्रंथमाळानां हमणांनां प्रकाशन

अलंकारनेमि	मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
हेमचंद्राचार्यकृत महादेवबत्रीशी-स्तोत्र	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९८९
श्रीजीवसमास-प्रकरण टीकाकार मलधारी हेमचंद्रसूरि	संपा. मुनि शीलचन्द्रविजय	१९९४
,, (गुजराती अनुवाद)	चं. ना. शिनोरवाला	१९९४

प्राप्तिस्थान : सरस्वती पुस्तक भंडार, हाथीखाना, रतनपोल, अमदावाद-३८०००१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org